

ମିଳାଶ ତଳାଶ

ପଢ଼ି (6) ଡରଢ଼େ କେ ଲି଼େ

ଷଷ୍ଠ ଶ୍ରେଣୀ



ଢ଼କମେ ଶକୂଳ ଓ ତେଲିମି ଂମେ, ଠିଶାସରକାର

ବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ ଗଣଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ, ଓଡ଼ିଶା ସରକାର



ମୋ ନାମ:.....

ମୋ ବାପାଙ୍କ ନାମ :.....

ମୋ ମା'ଙ୍କ ନାମ :.....



ମୋ ବିଦ୍ୟାଳୟର ନାମ:.....

ମୋ ଶ୍ରେଣୀ ଶିକ୍ଷକ/ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀଙ୍କ ନାମ:

.....



ମୋ ଗାଁ/ସାହିର ନାମ:

.....



ତଲାଶ

ଷଷ୍ଠ ଶ୍ରେଣୀ

ପରୀକ୍ଷାମୂଳକ ସଂସ୍କରଣ

ସମ୍ପାଦକ ମଣ୍ଡଳୀ :

ଜିଆ ଉଲ୍ଲା

ଡ. ସୟଦ୍ ଜହ୍ନୁରୁଲ୍ ହକ୍

ସମସ୍ତର ରେହେମାନ୍

ଏସ୍.ଏ.ଏମ୍. ରୁବି

ସମୀକ୍ଷକ ମଣ୍ଡଳୀ :

ସୟଦ୍ ଅଲ୍ଲା ଅସରାର୍

ଡ. ସୟଦ୍ ଜହ୍ନୁରୁଲ୍ ହକ୍

ସମସ୍ତର ରେହେମାନ୍

ମହମ୍ମଦ ଅଫଜଲ୍ ପରଝେଜ

ବିଷୟ ବିଶେଷଜ୍ଞ :

ମହମ୍ମଦ ହାରୁନ୍ ଆଲାମ

ମୁଖ୍ୟ ସଂଯୋଜକା :

ଡ. ସବିତା ସାହୁ

ସଂଯୋଜକ :

ମାନସ କୁମାର ନାୟକ

ପ୍ରକାଶକ : ବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ ଗଣଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ,
ଓଡ଼ିଶା ସରକାର

ମୁଦ୍ରଣ ବର୍ଷ : ୨୦୨୨

ପ୍ରସ୍ତୁତି :

ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷା ନିର୍ଦ୍ଦେଶାଳୟ ଏବଂ ରାଜ୍ୟ ଶିକ୍ଷା ଗବେଷଣା

ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ଡିଜିଟାଲ୍ ଓ ଡିଜାଇନ୍ :

ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ଓ ପ୍ରକାଶନ ସଂସ୍ଥା,

ଓଡ଼ିଶା, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୁଦ୍ରଣ :

ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଉତ୍ପାଦନ ଓ ବିକ୍ରୟ, ଓଡ଼ିଶା, ଭୁବନେଶ୍ୱର

تلاش

چھٹے (6) درجے کے لیے

تجرباتی ایڈیشن : 2026

مجلس ادارت:

ضیاء اللہ

ڈاکٹر سید ظہور الحق

شمس الرحمن

سید عبداللہ معین رومی

نظر ثانی:

سید علی اسرار

شمس الرحمن

ڈاکٹر سید ظہور الحق

محمد افضل پرویز

نظر ثالث:

محمد ہارون عالم

کوآرڈینیٹرس:

ڈاکٹر سیتا ساہو (چیف کوآرڈینیٹر)

مانس کمار ناسک (کوآرڈینیٹر)

ناشر:

محکمہ اسکول و تعلیم عامہ، اڈیشا سرکار

سن اشاعت: 2026

ترتیب و تدوین:

محکمہ تعلیم اساتذہ اور صوبائی تحقیق و تربیتی ادارہ برائے تعلیم، اڈیشا، بھونیشور

اور

ادارہ نشر و اشاعت برائے کتب تعلیم و تدریس صوبہ اڈیشا، بھونیشور

طباعت: درس کتاب چھاپائی و فروخت، بھونیشور

ପ୍ରସ୍ତାବନା

ଶିକ୍ଷାର ମୁଖ୍ୟ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଉଛି ପିଲାମାନଙ୍କର ସର୍ବାଙ୍ଗୀନ ବିକାଶକୁ ସୁନିଶ୍ଚିତ କରିବା । ଆମ ଦେଶରେ ପରିବାର, ପଢ଼ୋଶୀ, ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ଏବଂ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପିଲାମାନଙ୍କର ଲାଳନପାଳନ ଏବଂ ଶିକ୍ଷାରେ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତି । ପ୍ରତ୍ୟେକ ପିଲାର ଜୀବନର ପ୍ରଥମ ଆଠବର୍ଷ ବହୁତ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ଏହି ବର୍ଷ ଗୁଡ଼ିକରେ ପିଲାମାନେ ସେମାନଙ୍କ ପରିବାରଠାରୁ ଯାହା ଶିଖନ୍ତି, ତାହା ସେମାନଙ୍କର ଭବିଷ୍ୟତ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ନୈତିକତା ଏବଂ ମାନସିକ କ୍ଷମତା ଉପରେ ସକାରାତ୍ମକ ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ । ଶିଶୁର ଜୀବନ ବ୍ୟାପୀ ବିକାଶରେ ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ବର୍ଷଗୁଡ଼ିକର ଗୁରୁତ୍ୱକୁ ବିଚାର କରି ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି (NEP-2020) ତିନିରୁ ଆଠବର୍ଷ ବୟସର ପିଲାମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଶିକ୍ଷାର ଗୁଣବତ୍ତା ଉପରେ ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ଦେଇଛି । ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ପର୍ଯ୍ୟାୟରେ ଜଣେ ପିଲା ଯେଉଁ ଅଭିଜ୍ଞତା ହାସଲ କରେ, ତାହା ଭବିଷ୍ୟତରେ ତାଙ୍କର ଶାରୀରିକ ବିକାଶ, ଆବେଗିକ ବିକାଶ ଏବଂ ମାନସିକ ପରିପକ୍ୱତା ଉପରେ ଗଭୀର ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ । (NCF-SE-2023) ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷାପାଇଁ ଜାତୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ଢାଞ୍ଚା ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି ଅନୁସାରେ ବିକଶିତ ନୀତି ଏବଂ ମୌଳିକ ଧାରଣାକୁ ଧ୍ୟାନରେ ରଖି ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛି । (NCF-SE-2023) ସୁପାରିଶ ଅନୁଯାୟୀ NCERT ନୂଆଦିଲ୍ଲୀଦ୍ୱାରା ପ୍ରସ୍ତୁତ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକରେ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷାଦାନକୁ ପିଲାମାନଙ୍କ ବାସ୍ତବ ଜୀବନ ସହିତ ସଂଯୋଗ କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରାଯାଇଛି । OCF 2025 ଅନୁଯାୟୀ ରାଜ୍ୟରେ ଚଳିତବର୍ଷର ବିଦ୍ୟାଳୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଛି ।

(NCF-SF-2023) ଅନୁଯାୟୀ, ମାନବ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ପାଞ୍ଚଟି ବିକାଶ ଯଥା- ଅନୁମୟ, ପ୍ରାଣମୟ, ମନୋମୟ, ବିଜ୍ଞାନମୟ ଏବଂ ଆନନ୍ଦମୟ କୋଷକୁ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦିଆଯାଇଛି । ଏଥିସହିତ ଶିକ୍ଷଣର ପାଞ୍ଚଟି କ୍ଷେତ୍ର ଯଥା- ଶାରୀରିକ, ସାମାଜିକ ଆବେଗିକ, ବୌଦ୍ଧିକ, ଭାଷା ଓ ସାକ୍ଷରତା ଏବଂ ସାଂସ୍କୃତିକ ଓ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟବୋଧ ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଧ୍ୟାନ ଦିଆଯାଇଛି । NCERT ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରସ୍ତୁତ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକୁ ଆମ ରାଜ୍ୟରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଅନୁବାଦ କରାଯାଇଛି ଏବଂ ସ୍ଥାନୀୟ ପରିବେଶକୁ ମଧ୍ୟ ଏଥିରେ ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ କରାଯାଇଛି । ଏହା ସହିତ, ରାଜ୍ୟଭାଷା, ଶିଳ୍ପ ଏବଂ କାରିଗରି, ସଭ୍ୟତା ଏବଂ ସଂସ୍କୃତି, ଘଟଣା, ପରମ୍ପରା, ଭୌଗୋଳିକ ପରିସ୍ଥିତି ଇତ୍ୟାଦିକୁ ଧ୍ୟାନରେ ରଖି ପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକ ସଂକଳନ କରାଯାଇଛି ।

ପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକୁ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଅଧିକ ଉପଯୋଗୀ ସହଜ ଏବଂ ଆକର୍ଷଣୀୟ କରିବାପାଇଁ ଯଥେଷ୍ଟ ପ୍ରୟତ୍ନ କରାଯାଇଛି । ପିଲାମାନଙ୍କ ଆଞ୍ଚଳିକ ପରମ୍ପରା, ସଭ୍ୟତା ଏବଂ ସଂସ୍କୃତି, ପର୍ବପର୍ବାଣି, ଖାଦ୍ୟ, ନଦୀ ଏବଂ ପର୍ବତ, ଗଛ ଏବଂ ଲତା ଇତ୍ୟାଦିକୁ ଏଥିରେ ସ୍ଥାନିତ କରାଯାଇଛି । ପିଲାଙ୍କର ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ସାମର୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ସୃଜନଶୀଳ ବିକାଶ ପାଇଁ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକରେ ଅନେକ ବ୍ୟାବହାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ଦିଆଯାଇଛି ଏବଂ ଅଭ୍ୟାସ କାର୍ଯ୍ୟ ରଖାଯାଇଛି । ଯାହାଦ୍ୱାରା ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀମାନେ ପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକରେ ଥିବା ଦକ୍ଷତା ହାସଲ କରିଛନ୍ତି କି ନାହିଁ ତାହା ଜାଣି ପାରିବେ । ନୂତନ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିଥିବା NCERT ନୂଆଦିଲ୍ଲୀର ସମସ୍ତ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ତଙ୍କୁ ଅଭିନନ୍ଦନ ଜଣାଉଛି । ଏହା ସହିତ ଏହି ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକର ପ୍ରସ୍ତୁତିରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଥିବା ସମସ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତିବିଶେଷଙ୍କୁ କୃତଜ୍ଞତା ଜଣାଉଛି । ସମସ୍ତଙ୍କ ମିଳିତ ପ୍ରୟାସ ଯୋଗୁଁ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକ ଖୁବ୍ ବହୁତ କମ୍ ଅବଧି ମଧ୍ୟରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହୋଇଛି । ମୁଁ ଆଶା କରୁଛି ଯେ ଏହି ପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକ ଆମ ରାଜ୍ୟର ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷାରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆଣିବାରେ ଏବଂ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଖୁସିରେ ଶିଖିବାରେ ସହାୟକ ହେବ । ଏହି ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକୁ ଆହୁରି ଉନ୍ନତ କରିବାପାଇଁ ମୁଁ ଆପଣଙ୍କ ଚିନ୍ତାଧାରା ଏବଂ ପରାମର୍ଶକୁ ଅପେକ୍ଷା କରୁଅଛି ।

(ମନୋଜ କୁମାର ପାଢୀ)

ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ

ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷା ନିର୍ଦ୍ଦେଶାଳୟ ଏବଂ

ରାଜ୍ୟ ଶିକ୍ଷା ଗବେଷଣା ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ପରିଷଦ

ଓଡ଼ିଶା, ଭୁବନେଶ୍ୱର

بھارت کا آئین تمہید

ہم بھارت کے عوام متانت و سنجیدگی سے عزم کرتے ہیں کہ بھارت کو ایک
مقتدر سماج وادی، غیر مذہبی عوامی جمہوریہ بنائیں اور اس کے تمام شہریوں
کے لیے حاصل کریں:

☆ انصاف سماجی، معاشی اور سیاسی

☆ آزادی خیال اظہار، عقیدہ، دین اور عبادت

☆ مساوات بہ اعتبار حیثیت اور موقع اور ان سب میں اخوت کو ترقی دیں

جس سے فرد کی عظمت اور ترقی کے اتحاد اور سالمیت کا تیقن ہو۔

اپنی آئین ساز اسمبلی میں آج چھبیس نومبر 1949ء کو یہ آئین ذریعہ ہذا

اختیار کرتے ہیں، وضع کرتے ہیں اور اپنے آپ پر نافذ کرتے ہیں۔

حرفِ آغاز

قومی تعلیمی نصاب 2020 ایک متبادل نصاب اور تدریسی فریم ورک ہے۔ جو ہندوستانی ثقافت، تہذیب اور علمی ورثے سے جڑا ہوا ہے۔ فریم ورک طباء کو 21 ویں صدی کے مواقع اور چیلنجوں سے تخلیقی طور پر مشغول ہونے کے لیے تیار کرتا ہے۔ نئے نصاب میں درپیش چیلنجوں اور ان کے حل کی بنیاد پر قومی نصابی فریم ورک 2023 اور اسکولی تعلیم کے لیے ریاستی تعلیمی نصابی فریم ورک 2025 نے تمام سطحوں کے لیے نصاب کے میدان تیار کیے ہیں۔ قومی اور ریاستی تعلیمی نصاب کے فریم ورک کا مقصد ابتدائی سطح پر طلباء کی مجموعی ترقی کو یقینی بنانا اور درمیانی سطح پر ان کی ترقی کی رفتار کو آگے بڑھانا ہے۔ درمیانی سطح (چھٹی جماعت سے آٹھویں جماعت) ابتدائی اور ثانوی سطحوں کے درمیان ایک ربط قائم کرتی ہے۔

درمیانی سطح پر، قومی اور ریاستی تعلیمی نصاب کے فریم ورک کا مقصد طلباء کے اندر استعداد پیدا کرنا ہے جو ان کی تجرباتی، وضاحتی اور تخلیقی صلاحیتوں میں اضافہ کرے گی اور انہیں مستقبل کے چیلنجوں اور ضرورتوں کے لیے تیار کرے گی۔ درمیانی سطح پر قومی اور ریاستی تعلیمی نصاب پر مبنی کثیر جہتی تعلیمی نصاب نو طرح کے مضامین کا احاطہ کرتا ہے جو طلباء کی مجموعی ترقی کو تیز کرے گا۔ اس میں تین زبانیں، سائنس، ریاضی، ماحولیاتی سائنس، آرٹ کی تعلیم، جسمانی تعلیم اور فلاحی اور تکنیکی تعلیم شامل ہیں۔

متبادل آموزش ثقافت کے لیے ایک سازگار ماحول کی ضرورت ہے۔ اسے عملی شکل دینے کے لیے ریاستی سطح پر مختلف مضامین کی نصابی کتابیں بھی تیار کی جائیں۔ مذکورہ نصابی کتابیں نصاب اور تدریسی عمل میں اہم کردار ادا کریں گی۔ یہی کردار طلباء کے تجسس اور استفسار پر مبنی فطرت کے درمیان ایک سوچا سمجھا توازن پیدا کرے گا۔ اساتذہ کو بھی پلاننگ اور مضمون کے مطالعہ کے درمیان مناسب توازن برقرار رکھنے کے لیے تیار رہنے کی ضرورت ہے۔

TE & SCERT, Odisha نے معیاری نصابی کتب کی تیاری کے لیے مسلسل پرعزم ہے۔ نصابی کتب کی تیاری کے لیے علاقائی سطح پر کمیٹی میں موضوع کے لحاظ سے ماہرین تعلیم، ادیب، شاعر، افسانہ نگار اور اساتذہ شامل ہیں۔ چھٹی جماعت کی کتاب (تلاش) نے زبانوں کے مختلف حصوں کو اکٹھا کیا ہے۔ ان حصوں میں حب وطنی، فطرت، ماحولیات، سائنس، قص، شاعری، کھیل، جانوروں کی آوازوں، اخلاقی اسباق، افسانوں، سفر ناموں، سوانح عمریوں اور ہندوستانی معاشرے کے تجربات پر مبنی، نیشنل ایجوکیشن پالیسی-2020، نیشنل کریکولم فریم ورک-2023 اور اسٹیٹ کریکولم فریم ورک-2025 کی سفارشات کے بعد مذکورہ نصابی کتاب میں تصوراتی فہم، منطقی استدلال، تخلیقی صلاحیت، انسانی قدریں اور طلباء کے رویے کی نشوونما کو یکساں اہمیت دی گئی ہے۔ جو قومی اور ریاستی سطح کی تعلیم کے لیے بہت ضروری ہے۔ اس مقصد کے ساتھ نصابی کتاب میں جامع تعلیم، علاقائی مساوات، صنفی مساوات، ثقافتی انضمام، انفارمیشن اور ٹیکنالوجی کے ڈھانچے میں ہم آہنگی، اسکول کی وسیع تشخیص وغیرہ کے تصورات کو شامل کیا گیا ہے۔ طلباء گروپوں میں سیکھیں گے۔ ہم جماعتوں کے ساتھ گروپس میں سیکھنا نہ صرف دلچسپ ہے بلکہ یہ بہت اہم بھی ہے۔ کیوں کہ یہ طلباء کی مجموعی نشوونما میں مدد کرتا ہے اور آموزش کے عمل کو خوشگوار اور آسان بناتا ہے۔ اس جامع نصابی کتاب میں شامل آموزش کی سرگرمیاں طلباء اور اساتذہ دونوں کے تخلیقی تجربات کو تقویت بخشنے میں معاون ثابت ہوں گی۔

اس تناظر میں طلباء کو نصابی کتب کے علاوہ سیکھنے کے دیگر وسائل کو تلاش کرنے کی بھی ترغیب دی جانی چاہیے۔ اس طرح کے آموزش کے وسائل کو دستیاب کرنے میں اسکول کی لائبریری کا کردار اہم ہیں اس کے لیے طلبہ کی رہنمائی اور حوصلہ افزائی میں والدین اور اساتذہ کا کردار اہم ہے۔

میں مذکورہ نصابی کتاب کی تیاری میں شامل تمام ممبران کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔ مجھے امید ہے کہ یہ کتاب تمام اساتذہ و طلباء کی ضروریات کو پورا کرے گی۔ اسٹیٹ کونسل آف ایجوکیشن ریسرچ اینڈ ٹریننگ اپنی اشاعتوں کے طریقہ کار میں بہتری کے لیے مسلسل پرعزم ہے۔ آئندہ نظر ثانی کے لیے آپ کی قیمتی آراء کا

ڈائریکٹر

انتظار ہے۔

ڈائریکٹر آف ٹیچر ایجوکیشن اور

SCERT، اڈیشا، بھوبنیشور

کتاب کے بارے میں

اردو زبان ہماری مادری زبان ہے۔ زبان دانی طلبہ کے دوسرے علوم کا دروازہ کھولتی ہے۔ ان کے اندرونی صلاحیتوں اور خوبیوں کی نشوونما کے لیے زبان دانی از حد ضروری ہے۔ یہ کتاب روحانی، ذہنی اور اخلاقی ارتقا کی نشوونما میں مددگار ثابت ہوگی۔ اس کتاب سے نہ صرف طلباء کے لسانیاتی علم میں اضافہ ہوگا بلکہ ادب دانی، تاریخی، ثقافتی اور روایات کی طرف رغبت بھی بڑھے گی۔ یہ کتب اخلاقی تعلیمات، کہانی، افسانے، قدرتی مناظر، جان جانور، چرند پرند، کھیل کود، حب الوطن اور تاریخ کو مد نظر رکھتے ہوئے لکھیے گئی ہے۔ جس کا مقصد مقامی اسکولوں میں مادری زبان کے ادب کو فروغ دینا ہے۔ طلبہ کے افکار اور جوش و جذبے کی تقویت کے لیے کتاب کو منقش، رنگین اور دلکش بنایا گیا ہے۔ سلیس زبان میں پڑھنے اور لکھنے کے لیے ہر مضمون کے قواعد کو آسان انداز سے پیش کیا گیا ہے۔ ان کی تجرباتی ترقی خواندگی کی مہارت پر خاص توجہ دی گئی ہے۔ آموزش کے عمل کو دلچسپ بنانے کے لیے نصابی کتاب میں بہت سی عبارتیں ترتیب دی گئی ہے۔ طلباء کے ذخیرہ الفاظ کے عمل اور مہارت کو فروغ دینے کے لیے ہر عنوان کے آخر میں مشکل الفاظ کی لغت شامل کی گئی ہے۔

بچوں کو افہام و تفہیم کی مہارت حاصل کرنے کے لیے ہر سبق کے لیے متعدد انتخابی سوالات اور حل پیش کیے گئے ہیں۔ فہم و فراست کو فروغ دینے اور سننے، بولنے، عبارت خوانی اور لکھنے کی مہارتوں کے اظہار میں مدد ملے گی۔ الفاظ، جملے اور پیچیدہ الفاظ کے معنی کو اچھی طرح سے ذہن نشین کرنے کے لیے ہر عنوان میں متعدد الفاظ دیئے گئے ہیں طلباء ہر آموزشی کام میں کتب خانے، انٹرنیٹ، والدین اور اساتذہ سے مدد لے سکتے ہیں۔ اس سے طلباء کے علم میں اضافہ ہوگا۔ طلباء مواد سے متعلق اپنے ذخیرے الفاظ کو وسعت دے کر اپنی مہارت تیار کریں گے۔ طلباء کے شعور کو تیز طراز علمی مہارتوں کی پیمائش میں ترقی لانے کے لیے سوالات شامل کیے گئے ہیں۔ یہ عمل اساتذہ، طلباء، اور والدین کے لیے پر لطف ثابت ہوگا۔

اردو ادب کو فروغ دینے کے لیے نصابی کتاب میں ادب کی مختلف اصناف جیسے نثر و نظم، کہانی اور افسانے واقعات و روایات کو شامل کیا گیا ہے۔ مذکورہ کتاب کو پڑھ کر طلباء کو ادب، لفظیات، ارائش و زیبائش، جذبات و اہنگ کے بارے میں بھی کارآمد ثابت ہوگی۔ نصابی کتاب میں الفاظ کو عمدہ طریقے سے استعمال کرنے کے فن پر زور دیا گیا ہے۔ قواعد کے علم کو بڑھانے میں خاص طور پر معین مددگار ہوگی۔ طلباء مرکبات، مترادفات، متضاد، تذکیر و تانث، الفاظ کے بارے میں خصوصی معلومات حاصل کر سکتے ہیں۔ کہاوتیں اور محاورے ہمارے زبان کے تحریری ادب کا ایک اہم حصہ ہیں۔ ماضی میں ہمارے ادبی کلچر میں موجود ہیں۔ وہ طلباء کو سوچ، لسانی علم، تخیل اور الفاظ کی تشکیل کے بارے میں بہترین معلومات حاصل کرنے میں مدد کر سکتے ہیں۔ مذکورہ کتاب چھٹی جماعت کے طلباء کے لیے ایک بہترین ذریعہ ہے۔ یہ طلباء کی تخلیقی صلاحیتوں کے لیے ناگزیر ہے۔ بے شک یہ کتاب اڈیش میں اردو زبان کے ادب کو مالا مال کر دیا ہے۔

ସିଲ୍ଲାବସ୍ ଓ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ସମୀକ୍ଷା ପାଇଁ କୋର୍ କମିଟି

୧.	କମିଶନର ତଥା ଶାସନ ସଚିବ, ବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ ଗଣଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ	ଅଧ୍ୟକ୍ଷ
୨.	ରାଜ୍ୟ ପ୍ରକଳ୍ପ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ଓଡ଼ିଶା ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପ୍ରାଧିକରଣ	ସଦସ୍ୟ
୩.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ଉଚ୍ଚ ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା	ସଦସ୍ୟ
୪.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା	ସଦସ୍ୟ
୫.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ପ୍ରାଥମିକ ଶିକ୍ଷା	ସଦସ୍ୟ
୬.	ସଭାପତି, ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ପରିଷଦ	ସଦସ୍ୟ
୭.	ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଉଚ୍ଚ ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ପରିଷଦ	ସଦସ୍ୟ
୮.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଉତ୍ପାଦନ ଓ ବିକ୍ରୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାଳୟ	ସଦସ୍ୟ
୯.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ବୈଷୟିକ ଶିକ୍ଷା ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଶାଳୟ	ସଦସ୍ୟ
୧୦.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ଓଡ଼ିଶା ଭାଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ	ସଦସ୍ୟ
୧୧.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ସମାଜ କଲ୍ୟାଣ, ମହିଳା ଓ ଶିଶୁ ବିକାଶ ବିଭାଗ, ଓଡ଼ିଶା	ସଦସ୍ୟ
୧୨.	ଏନ୍ ସି ଇ ଆର ଟି ପ୍ରତିନିଧି	ସଦସ୍ୟ
୧୩.	ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ, ଭୁବନେଶ୍ୱର	ସଦସ୍ୟ
୧୪.	ପ୍ରଫେସର ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ପ୍ରଧାନ, ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ, ଭୋପାଳ ଏବଂ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଏସ୍ ସି ଏଫ, ଓଡ଼ିଶା	ସଦସ୍ୟ
୧୫.	ଡକ୍ଟର ଗୋପାଳ ପ୍ରସାଦ ମହାପାତ୍ର, ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ, ସଂସ୍କୃତ ବିଭାଗ	ସଦସ୍ୟ
୧୬.	ଡକ୍ଟର କିଶୋର ଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି, ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ (ବିଜ୍ଞାନ)	ସଦସ୍ୟ
୧୭.	ଡକ୍ଟର ବିନୟ ପଟ୍ଟନାୟକ, ମୁଖ୍ୟ ପରାମର୍ଶଦାତା, ଏନ ଏସ୍ ଟି ସି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ, ଏନ୍ ସି ଇ ଆର ଟି	ସଦସ୍ୟ
୧୮.	ଡକ୍ଟର ସୁଶାନ୍ତ କୁମାର ଦାସ, ପୂର୍ବତନ ସଭାପତି, ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା	ସଦସ୍ୟ

୧୯.	ଡକ୍ଟର ଲଳିତ କୁମାର ଲେଙ୍କା, ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ, ଓଡ଼ିଆ ବିଭାଗ, ଏକାମ୍ର କଲେଜ, ଭୁବନେଶ୍ୱର	ସଦସ୍ୟ
୨୦.	ଡକ୍ଟର ସରୋଜଲକ୍ଷ୍ମୀ ସିଂ, ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ରମାଦେବୀ ଉଚ୍ଚ ମାଧ୍ୟମିକ ବିଦ୍ୟାଳୟ, ଭୁବନେଶ୍ୱର	ସଦସ୍ୟ
୨୧.	ଡକ୍ଟର ଖଗେଶ୍ୱର ଦାସ, ଇଂରାଜୀ ବିଶେଷଜ୍ଞ, ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ପଦ୍ମପୁର କଲେଜ, ବରଗଡ଼	ସଦସ୍ୟ
୨୨.	ଡକ୍ଟର ବଳରାମ ସାହୁ, ପ୍ରଫେସର ମାଇକ୍ରୋବାଇଓଲୋଜି, ସୋଆ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, ଓଡ଼ିଶା କୃଷି ଓ ବୈଷୟିକ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, ଭୁବନେଶ୍ୱର	ସଦସ୍ୟ
୨୩.	ଡକ୍ଟର ଗୌରାଜ ମହାନ୍ତି, ପଦାର୍ଥ ବିଜ୍ଞାନ ବିଶେଷଜ୍ଞ, ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଖଲ୍ଲିକୋଟ ସ୍ୱୟଂଶାସିତ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, ବ୍ରହ୍ମପୁର, ଗଞ୍ଜାମ	ସଦସ୍ୟ
୨୪.	ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷା ନିର୍ଦ୍ଦେଶାଳୟ ଏବଂ ରାଜ୍ୟ ଶିକ୍ଷା ଗବେଷଣା ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା	ସଦସ୍ୟ ସଚିବ

ବନ୍ଦେ ଉତ୍କଳ ଜନନୀ

ବନ୍ଦେ ଉତ୍କଳ ଜନନୀ

ଚାରୁହାସମୟୀ ଚାରୁ ଭାଷମୟୀ,
ପୂତ-ପୟୋଧି-ବିଧୌତ-ଶରୀରା,
ତାଳତମାଳ-ସୁଶୋଭିତ-ତୀରା,
ଶୁଭ୍ରତଟିନୀକୁଳ-ଶୀକର-ସମୀରା

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ।

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ॥

ଘନ ବନଭୂମି ରାଜିତ ଅଙ୍ଗେ,
ନୀଳ ଭୂଧରମାଳା ସାଜେ ତରଙ୍ଗେ,
କଳ କଳ ମୁଖରିତ ଚାରୁ ବିହଙ୍ଗେ

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ॥

ସୁନ୍ଦରଶାଳି-ସୁଶୋଭିତ-କ୍ଷେତ୍ରା,
ଜ୍ଞାନବିଜ୍ଞାନ-ପ୍ରଦର୍ଶିତ-ନେତ୍ରା,
ଯୋଗୀରକ୍ଷିଗଣ-ଉଚ୍ଚ-ପବିତ୍ରା

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ॥

ସୁନ୍ଦର ମନ୍ଦିର ମଣ୍ଡିତ-ଦେଶା,
ଚାରୁକଳାବଳି-ଶୋଭିତ-ବେଶା,
ପୁଣ୍ୟ ତୀର୍ଥଚୟ-ପୂର୍ଣ୍ଣ-ପ୍ରଦେଶା

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ॥

ଉତ୍କଳ ସୁରବର-ଦର୍ପିତ-ଗେହା,
ଅରିକୁଳ-ଶୋଣିତ-ଚର୍ଚ୍ଚିତ-ଦେହା,
ବିଶ୍ୱଭୂମିଶ୍ରୀ-କୃତବର-ସ୍ନେହା

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ॥

କବିକୁଳମୌଳି ସୁନନ୍ଦନ-ବନ୍ଦ୍ୟା,
ଭୁବନବିଘୋଷିତ-କୀର୍ତ୍ତିଅନନ୍ଦ୍ୟା,
ଧନ୍ୟ, ପୁଣ୍ୟ, ଚିରଶରଣ୍ୟ

ଜନନୀ, ଜନନୀ, ଜନନୀ ॥

(କାନ୍ତକବି ଲକ୍ଷ୍ମୀକାନ୍ତ ମହାପାତ୍ର)

فہرست

نمبر شمار	مضامین	صفحہ
1	حمد باری	1
2	اڈیشا کی تہذیب و ثقافت	7
3	بی بی فاطمہؓ	19
4	ترانہ ہندی	28
5	فن تارکشی کٹک	37
6	سلاخوں کے پیچھے	46
7	محنت کی اہمیت	55
8	برسات کی بہار	65
9	پنسل	71
10	مشہور ریاضی داں رحمت علی رحمت	79
11	ایک پرندہ اور جگنو	90
12	دل بیہرا	97
13	چڑیوں کا مسکن	106
14	اڈیشا کا ترانہ	116
15	ہندوستان اور خلائی کامیابی	123

CONTENTS	ସୂଚୀପତ୍ର	فہرست	نمبر شمار
Praise of Almighty	ହମ୍ମଦେ ବାରୀ	حمد باری	1
Civilisation & Culture of Odisha	ଓଡ଼ିଶା କୀ ତହଜୀବ୍ ଓ ଷକାଫତ୍	اڈیشا کی تہذیب و ثقافت	2
Bibi Fatma (Daughter of Prophet Muhammad)	ବାବୀ ଫାତ୍ମା	بی بی فاطمہؓ	3
Anthem of India	ତରାନା ଏ ହିନ୍ଦି	ترانہ ہندی	4
Filigree Work of Cuttack	ଫନେ ତାରକଶୀ, କଟକ	فن تارکشی کٹک	5
Inside the Jail	ସଲାଖୋଁ କେ ପିଛେ	سلاخوں کے پیچھے	6
Importance of Hard Work	ମେହନତ୍ କୀ ଅହମିୟତ୍	محنت کی اہمیت	7
Rainy Spring	ବରଷାତ୍ କୀ ବହାର	برسات کی بہار	8
Pencil	ପେନ୍‌ସିଲ	پنسل	9
Renowed Mathematician Rahmat Ali Rahmat	ମଶହୁର ରିୟାଜି ଦାଁ ରହମତ୍ ଅଲ୍ଲା ରହମତ୍	مشہور ریاضی داں رحمت علی رحمت	10
A Bird & a firefly	ଏକ୍ ପରିଦା ଓର ଜୁରନ୍ତୁ	ایک پرندہ اور جگنو	11
Dala Behera	ଦଳ ବେହେରା	دل بیہرا	12
Bird's Nest	ଚିଲ୍ ଘୋଁ କା ମସ୍କନ	چڑیوں کا مسکن	13
Anthem of Odisha	ଓଡ଼ିଶା କା ତରାନା	اڈیشا کا ترانہ	14
India & iots space success	ହିନ୍ଦୁସ୍ତାନ୍ ଓର ଖଲାଇ କାମିୟାବି	ہندوستان اور خلائی کامیابی	15



حمد باری

سید عبدالعزیز معلم آسمبل پوری



میں بندہ ہوں تیرا گنہگار یارب
مجھے بخش دیے تو ہے غفار یارب
ترے فضل کی مجھ کو دولت ہے کافی
نہ چاہوں میں درہم نہ دینار یا رب
سبکدوش کر اپنے فضل و کرم سے
گناہوں سے ہوں میں گراں بار یارب
یہی آرزو ہے یہی ہے تمنا
قیامت میں ہو تیرا دیدار یارب
معلم کی طبع رسا کی مدد کر
لکھے حمد میں تا وہ اشعار یارب



اللہ کی تعریف	:	حمد
غلام۔ عبادت کرنے والا انسان۔	:	بندہ
بخشنے والا	:	غفار
رحم۔ مہربانی۔ کرم	:	فضل
چاندی کا ایک سکہ	:	درہم
سونے کا ایک سکہ	:	دینار
جس پر کوئی ذمہ داری نہ ہو	:	سبکدوش
بھاری۔ وزن	:	گراں بار
خواہش۔ تمنا	:	آرزو
دیکھنا۔ نظارہ۔ درشن	:	دیدار
طبیعت۔ مزاج	:	طبع
اللہ کی نافرمانی۔ جرم۔ پاپ۔ قصور	:	گناہ
حساب کا دن۔ آخرت کا دن	:	قیامت
تعلیم دینے والا	:	معلم
شعر کی جمع۔	:	اشعار

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ اس نظم میں اللہ تعالیٰ کی عظمت، بندگی اور اس کی رحمت کو بیان کیا گیا ہے۔ شاعر نے اپنے آپ کو اللہ کا عاجز بندہ کہتا ہے اور فخر کرتا ہے کہ اللہ نے اسے بندہ بنایا ہے۔ وہ دنیا کی دولت کو حقیر سمجھتا ہے اور صرف اللہ کے فضل و کرم کا طلبگار ہے۔ شاعر کی سب سے بڑی خواہش قیامت کے دن اللہ کا دیدار ہے۔
- ☆ اس نظم میں عاجزی، اللہ پر بھروسہ اور دنیا کی لالچ سے بے نیازی کا درس دیا گیا ہے۔

3- ایک جملے میں جواب دیجیے:

- (i) حمد کسے کہتے ہیں؟
- (ii) ”غفار“ عربی کا لفظ ہے اس کے معنی بتائیے۔
- (iii) شاعر کس لیے اپنی بخشش چاہتا ہے؟
- (iv) اللہ کی دی ہوئی کون سی دولت شاعر کے لیے کافی ہے؟
- (v) سبکدوش کا کیا مطلب ہے؟
- (vi) شاعر کس کے دیدار کی تمنا کرتا ہے؟
- (vii) گنہگار بندہ اپنے رب سے کیا مانگتا ہے؟
- (viii) نظم کا وہ شعر لکھیے جس میں لفظ ”غفار“ استعمال کیا گیا ہے؟

4- نیچے دیے ہوئے لفظوں کو جملوں میں اس طرح استعمال کیجیے کہ ان کے معنی واضح ہو جائیں۔

- (i) گنہگار:
- (ii) غفار:
- (iii) دولت:
- (iv) درہم:
- (v) آرزو:
- (vi) دیدار:
- (vii) معلّم:
- (viii) شعر:
- (ix) تمنا:
- (x) فضل و کرم:

5- نظم کو پڑھیے اور نیچے دئے گئے مصرعوں کو صحیح الفاظ سے پر کیجیے:

- (i) ترے کی مجھ کو دولت ہے کافی۔
- (ii) گناہوں سے ہوں میں یارب۔
- (iii) یہی آرزو ہے یہی ہے۔
- (iv) قیامت ہو تیرا دیدار یارب۔
- (v) لکھے حمد میں اشعار یارب۔

6۔ وہ مصرعے تلاش کر کے لکھیے جن میں درج ذیل الفاظ آئے ہیں۔

- (i) دولت:
- (ii) دینار:
- (iii) سبکدوش:
- (iv) آرزو:
- (v) دیدار:

7۔ شعر مکمل کیجیے:

-: میں بندہ ہوں تیرا گنہگار یارب
-: نہ چاہوں میں درہم نہ دینار یارب
-: گناہوں سے ہوں گراں بار یارب
-: یہی آرزو ہے یہی ہے تمنا

8۔ مندرجہ ذیل لفظوں کے جمع لکھیے:

-: شعر
-: بندہ
-: گناہ
-: درہم
-: عالم

9۔ خوش خط لکھیے اور بلند آواز سے پڑھیے:

.....	(i) گنہگار
.....	(ii) بخشش
.....	(iii) غفار
.....	(iv) فضل
.....	(v) دینار
.....	(vi) سبکدوش
.....	(vii) قیامت
.....	(viii) اشعار
.....	(ix) دیدار
.....	(x) درہم

10۔ نیچے لکھے ہوئے لفظوں کی ضد لکھیے:

.....: معلم: گنہگار
.....: تیرا: گناہ

11۔ املا درست کیجیے:

.....: سبکدوس: گفار
.....: قیامت: تہیت
.....: درحم: فجل

12۔ عملی کام:

- ☆ ”حمد باری“ نظم زبانی یاد کیجیے اور محفل میں پڑھیے۔
- ☆ اپنے اسکول کی لائبریری یا انٹرنیٹ کی مدد سے ایسی نظموں کا انتخاب کیجیے جن میں اللہ کی تعریف بیان کی گئی ہو۔





اڈیشا کی تہذیب و ثقافت

ڈاکٹر کرامت علی کرامت

مشرقی ہندوستان کا صوبہ اڈیشا سماجی اور تہذیبی اعتبار سے عجیب و غریب صوبہ ہے۔ قدیم دور سے لے کر ترقی یافتہ تہذیب و ثقافت تک انسان کے حالات کی تبدیلی و ترقی کے تمام آثار یہاں پایے جاتے ہیں۔ یہاں کا فطری خزانہ مثلاً پہاڑ، جنگل، ندی، آبشار، جھیل اور سمندر کافی وسیع اور حسین و جمیل ہے۔ جس کی گود میں یہاں کی تہذیب پروان چڑھی ہے۔ یہ تہذیب مختلف تہذیبوں کے میل ملاپ کی وجہ سے اپنی مثال آپ ہے۔ یہاں کے ساحلی علاقوں اور دیگر ہموار علاقوں میں ترقی یافتہ تہذیب و ثقافت کی خوبیاں موجود ہیں لیکن دور دراز کے پہاڑی علاقوں میں اب بھی آدی باسی کلچر کا بول بالا ہے۔



بعض ضلعوں میں تو آدی باسیوں کی اکثریت ہے۔ آدی باسیوں کے مختلف قبیلے الگ الگ بولیاں بولتے ہیں۔ وہ آدی باسی جو شہروں سے قریب رہتے ہیں جن کا مہذب لوگوں سے رابطہ رہتا ہے یا جو لوگ کانوں اور کارخانوں میں مزدوری کرتے ہیں ان کے مالی اور سماجی حالات قدرے بہتر ہیں۔ ورنہ ابھی بھی پہاڑی علاقوں میں ایسے آدی باسی قبیلے آباد ہیں جو نیم برہنہ رہتے ہیں۔ جنگلی پھلوں، جڑوں، آم کی گٹھلیوں پر گزارہ کرتے ہیں۔ سردیوں کے موسم میں آگ جلا کر اپنے آپ کو موذی جانوروں سے محفوظ رکھتے ہیں۔ تیر و کمان سے جنگلی جانوروں کا شکار بھی کرتے ہیں جنگلی جانوروں کا مقابلہ کرتے ہیں۔

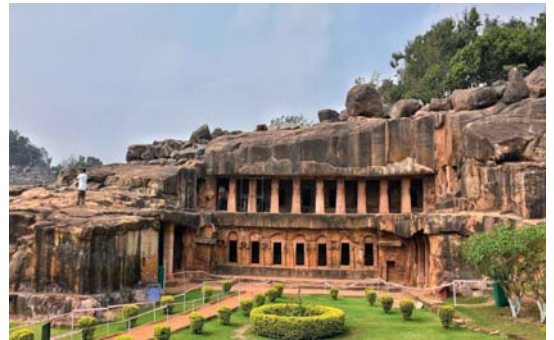
رسم و رواج، عقیدے، شادی بیاہ، رہن سہن، رقص و موسیقی کے اعتبار سے آدی باسی کچھ اپنی ایک الگ شناخت رکھتا ہے۔ یہ لوگ نہایت سادہ لوح انسان ہیں۔ سیاہ فام ہونے کے باوجود دل بہت صاف و شفاف رکھتے ہیں۔ ہر قبیلے کی اپنی الگ تھلگ لوک کہانی ہوتی ہے اور ہر قبیلے کا دعویٰ ہوتا ہے کہ اس کے جد امجد سورج یا چاند کی اولاد میں سے تھے۔

اڈیشا کے بعض علاقوں میں قدیم عہد کے آثار دریافت ہوئے ہیں۔ جن علاقوں میں یہ چیزیں ملی ہیں ان سب کا تعلق اڈیشا کے آدی باسی علاقوں مثلاً میورنج، کیونجھر، سنڈرگڑھ، کوراپوٹ، کالاہانڈی، بولانگیر، انگول، ڈھینکانال وغیرہ سے ہے۔ اسی طرح چٹانوں اور گپھاؤں میں نقش و نگار اور مصوری کے قدیم نمونے بھی ملے ہیں۔ ان نمونوں میں سے کالاہانڈی، کوراپوٹ کی سرحد پر واقع گوڑاہانڈی، بیل پہاڑ کے قریب و کرم کھول کھریار کے قریب جوگی مٹھ اور ضلع سنڈرگڑھ کے بعض قدیم نقش و نگار خاصی اہمیت رکھتے ہیں۔



ماضی میں اڈیشا کا نقشہ کبھی یکساں نہیں رہا۔ یہ وقت اور حالات کی تبدیلی کے ساتھ ساتھ بدلتا رہا ہے۔ اڈیشا جو کبھی گنگا سے لے کر گودا بری تک پھیلا ہوا تھا، کبھی یہ مختلف راجاؤں کے زیر حکومت مختلف علاقوں میں بٹ گیا۔ کبھی یہ ”اوڈر“ کہلاتا تھا۔ بعد میں کلنگا، اتکل، اڈیشا کہلانے لگا۔ کبھی اس کے کچھ حصے بنگال کے افغان حکمرانوں کے زیر حکومت رہے تو بعد میں مغلوں اور مرہٹوں کے قبضے میں آ گئے۔ کچھ جنوبی حصے گوکلنڈ کے علاقے میں شامل تھے تو بعد میں اورنگ زیب کی حکومت میں شامل ہو گئے۔ انگریز حکمران کافی دیر سے یعنی 1803ء میں اس پر قابض ہوئے۔ لیکن اہل اڈیشا کی مسلسل جدوجہد کی وجہ سے انگریزوں نے 1936ء میں اڈیشا کو ایک الگ صوبہ بنا دیا۔ جدوجہد کی ابتدا مدھو سودن داس نے کی تھی۔ آزادی کے بعد جب ولہ بھائی پٹیل کی کوششوں سے تمام راجاؤں کو مل گئے تو صوبہ اڈیشا موجودہ شکل میں ابھرا جس کی اکثریت اڈیا زبان بولنے والوں کی ہے لیکن یہاں اردو، بنگلہ، تیلگو بولنے والے بھی موجود ہیں۔

اڈیشا کے آدی باسی علاقوں کے کلچر سے ہٹ کر یہاں کے ساحلی علاقوں کی تہذیب و ثقافت کی روایت بھی بہت قدیم اور عظیم ہے۔ کلنگا کے شاہی خاندان سے دریودھن کے گھریلو رشتے اس بات کا ثبوت ہیں۔ کلنگا کے راجا نے چھ ہزار رتھ اور دس ہزار ہاتھی لے کر دریودھن کے ساتھ کورو کھشیترا کی جنگ میں حصہ لیا تھا۔ اسی طرح کلنگا کے بادشاہ چیتک نے اڈیشا مہابیر کو دعوت دی تھی جو کئی مرتبہ یہاں آئے تھے۔ جین باشاہوں میں کھار بیلا کا نام سب سے اہم ہے۔ بھوبنیشور میں موجود اودے گری اور کھنڈ گیری کے علاوہ کیونجھر کے رام چنڈی، بھدرک کے چرمپا، کوراپوٹ کے کچیل اور میورنج کے باری پدا وغیرہ علاقوں میں جین مذہب کے قدیم آثار پائے جاتے ہیں۔ جب اشوک نے کلنگا پر حملہ کیا تو جنگ میں بے شمار سپاہی مارے گئے۔ اشوک کو اس کا بے حد افسوس ہوا اور انھوں نے یہاں بدھ مذہب اختیار کیا اور اس کی خوب تبلیغ کی۔ اڈیشا کے لانگوڑی پہاڑ، دھولی گری، رتنا گری، لالت گری، بدھا کھول وغیرہ علاقوں میں بدھ کلچر کے آثار قدیمہ اب بھی موجود ہیں۔



ہندوؤں کے چار دھاموں میں سے جگن ناتھ پوری کو ایک اہم دھام ہونے کا شرف حاصل ہے۔ رتھ یا ترا کے دوران سال میں ایک بار جگن ناتھ جی کو رتھ پر بٹھا کر سامنے لایا جاتا ہے زمانہ قدیم میں اڈیشا کی بحری تجارت کا دائرہ دور دور تک پھیلا ہوا تھا۔ بندرگاہوں کے راستوں سے اڈیشا کے تاجر سری لنکا، جاوا، سماترا، بورنیو وغیرہ ملکوں کو جایا کرتے تھے۔ یہ لوگ یہاں سے لوہا، کانسا، نمک، ادراک، لہسن ہاتھی کے دانت وغیرہ لے جایا کرتے تھے اور ان ملکوں سے موزگا، جواہر، سونا، چاندی وغیرہ لے کر واپس آتے تھے۔ محمد شاہ تعلق کی فوج کے ساتھ مسلمان پہلی بار اڈیشا کے علاقہ جاج پور تک آئے۔ راجہ مکنند دیو سے اکبر بادشاہ کے دوستانہ تعلقات تھے۔ مکنند دیو کو شکست دے کر بنگال کے افغان نواب سلیمان کرہانی نے اڈیشا کو اپنی حکومت میں شامل کر لیا۔ جب مغلوں نے بنگال کو فتح کیا تو اڈیشا بھی مغلوں کے زیر حکومت آ گیا۔ پھر مسلمان سیاح، بزرگان دین اور تاجر یہاں آتے رہے اور اس طرح مسلمان اڈیشا کے تمام علاقوں میں پھیل گئے۔ اس طرح اڈیشا میں ہندوؤں اور مسلمانوں کی ملی جلی تہذیب و ثقافت کی بنیاد پڑی۔ ہندوؤں میں ”ستیا پیر پالا“ اسی تہذیبی میل ملاپ کا نمونہ ہے۔ قدم رسول (کٹک)، مرزا جلال الدین بخاری (کائی پدر)، بھوجا کھیا پیر (بالیسر) وغیرہ مزاروں میں ہندو زائرین کافی تعداد میں جاتے ہیں۔ اڈیشا میں سب سے پرانی مسجد دیوان بازار، کٹک کی تاتار خاں شاہی مسجد ہے۔ اس کے علاوہ کٹک میں واقع قدم رسول ایک اہم مسلم عمارت ہے۔ جسے شجاع الدین محمد خاں نے بنوایا تھا۔ اسی طرح سوگنڈہ کے محلہ دریا پور میں واقع جامع مسجد کا شمار اڈیشا کے آثار قدیمہ میں ہوتا ہے۔

غرض کہ اڈیشا کی ایک عظیم سماجی اور تہذیبی روایت رہی ہے۔ اس کے فطری مناظر مثلاً چلیکا جھیل، چندر بھاگا، گوپالپور، پوری، چاندی پور اور پارادیپ کے سمندری ساحل، گرم چشمہ، پردھان پاٹ کا آبشار، بڑا اور چھوٹا گھاگرا، جھیل اور بے شمار درختوں سے گھرا ہوا چڑیا گھر ”مندن کانن“ ہمیں دعوتِ نظارہ دیتے ہیں۔



صوبہ	:	اسٹیٹ - ریاست
اقلیت	:	تعداد میں کم - اکثریت کی ضد - تھوڑا ہونا
قبیلہ	:	جتھا، گروہ - ایک دادا کی اولاد
تہذیب یافتہ	:	مہذب - تعلیم یافتہ
موزی	:	ستانے والا - تکلیف پہنچانے والا
ثقافت	:	تہذیب - رہن سہن - کلچر
موسیقی	:	گانا بجانا - گانے بجانے کا علم
سادہ لوح	:	بھولا بھالا - نادان
سیاہ فام	:	کالا کلوٹا
جد امجد	:	پردادا
یکجا	:	ایک جگہ - اکٹھا - ملے جلے
قابض	:	قبضہ کرنے والا
آثار قدیم	:	پرانے نشانات - تاریخی کھنڈرات
دھام	:	گھر - مکان - بہشت
شرف	:	بزرگی - عزت
تاجر	:	بیوپار کرنے والا - تجارت کرنے والا (Businessman)
سیاح	:	ملکوں ملکوں گھومنے والا
زائرین	:	زیارت کرنے والا

گہما	:	غار۔ کھوہ
رقص	:	ناچ
بحری	:	سمندری
چشمہ	:	پانی کا سوتا
قدیم	:	پُرانا
اکثریت	:	تعداد میں زیادہ۔ کثرت۔ کسی ملک میں وہ گروہ جو تعداد میں دوسروں سے زیادہ ہو
عظیم	:	بڑا۔ عظمت والا۔ بڑائی والا
وسیع	:	کشادہ۔ چوڑا اور تک پھیلا ہوا
ریاضی	:	میتھ میٹیکس (Mathematics) کا علم۔ گنت۔ علم حساب
ریاض	:	مشق
نیم برہنہ	:	آدھے ننگے۔ ایسا لباس جس سے بدن پوری طرح چھپ نہ سکے

☆ صوبہ اڈیشا زمانہ قدیم سے آج تک بتدریج ترقی کرتا جا رہا ہے۔ تہذیبی، ثقافتی اعتبار سے ہو کہ قدرتی خزانوں سے نفع حاصل کرنے کے اعتبار سے ہو بہر حال اڈیشا کے مول نو اسی ہر میدان میں ترقی کرتے جا رہے ہیں۔

☆ آدی باسی (قبائل) ہندوستان کے کئی صوبوں میں جہاں جنگلات زیادہ ہیں اپنے پرانے طرز زندگی کے ساتھ پائے جاتے ہیں۔ خاص کر اڈیشا کے کئی ضلعوں میں کثرت سے پائے جاتے ہیں۔ اور اپنی حالات زندگی کو بہتر سے بہتر بنانے کی خاطر کوشاں ہیں۔

☆ آدی باسی (قبائل) تعلیم و تعلم، صنعت و حرفت تہذیب و ثقافت کے میدان میں کافی حد تک کامیابی حاصل کر چکے ہیں۔ صوبائی حکومت بھی خاص کر اڈیشا میں نئے نئے ترقی کی راہ فراہم کر رہی ہیں۔ تاکہ دوسری قوموں کے ساتھ برابری حاصل کریں۔

☆ صوبہ اڈیشا میں تاریخ کی بہت ساری نشانیاں اور قدرتی خزانے، فطری مناظر موجود ہیں۔ جسکی وجہ سے غیر ملکی سیاح یہاں آتے ہیں اور لطف اٹھاتے ہیں۔ جس سے صوبے کو اقتصادی قوت حاصل ہوتی ہے۔

3- سوچیے اور بتائیے:

- (i) آدی باسی لوگ کس طرح کی زندگی گزار رہے ہیں؟
- (ii) اڈیشا کے آدی باسی علاقوں کے نام بتائیے؟
- (iii) انگریزوں نے کس سے اڈیشا پر قبضہ کیا؟
- (iv) اڈیشا میں کون کون سی زبانیں بولی جاتی ہیں؟
- (v) اڈیشا کے کن علاقوں میں جین مذہب کی نشانیاں موجود ہیں؟
- (vi) اڈیشا کی سب سے پرانی مسجد کہاں ہے؟
- (vii) قدم رسول کس شہر اور ضلع میں واقع ہے؟
- (viii) قدم رسول کس نے بنوایا تھا؟
- (ix) اڈیشا کے وہ سمندری علاقے جو سیر و تفریح کے لیے مشہور ہیں بتائیے؟
- (x) دھام کس کو کہتے ہیں اڈیشا میں دھام کہاں ہے؟

4- حصہ ”الف“ اور ”ب“ کے درمیان جوڑ لگائیے۔

ب

چلیکا
قدم رسول
رہن سہن
مسلمان
بیل پہاڑ
جنگل
گنگا
ولجھ بھائی پٹیل
اُتکل

الف

فطری خزانہ
اڈیشا
رجواڑے
جھیل
کٹک
جانچ پور
جوگی مٹھ
تہذیب
گودابری

5- درج ذیل الفاظ کو جملوں میں اس طرح استعمال کیجیے جس سے مذکورہ نمونہ واضح ہو جائے:

- (i) صوبہ :
- (ii) تہذیب :
- (iii) قبیلہ :
- (iv) علاقہ :
- (v) مسجد :

6- حروف کے اقسام میں سے ایک حرفِ جار ہے جو لفظوں کو جوڑنے کے کام آتے ہیں جس سے جملے معنی دار بنتے ہیں۔ میں۔ سے۔ پر۔ تک۔ کو۔ وغیرہ حروفِ جار ہیں۔

درج ذیل جملوں میں حرفِ جار کو چن کر بریکٹ میں لکھیے:

- (i) جھیل میں بطخ تیر رہے ہیں۔ ()
- (ii) اُن سے ملو تو جائیں۔ ()
- (iii) میز پر کتاب رکھی ہے۔ ()
- (iv) مکند دیو کو شکست ہوئی۔ ()
- (v) میں نے شاعری تم سے سیکھی ہے۔ ()

7- ذیل کے الفاظ کی جمع بنائیے:

- ندی :
- علاقہ :
- قبیلہ :
- حالت :
- منظر :
- ضلع :

8۔ مندرجہ ذیل مقامات کیوں مشہور ہیں لکھیے :

- (i) کائی پدر:
- (ii) پردھان پاٹ:
- (iii) نندن کائن:
- (iv) پارادیپ:
- (v) پوری:

9۔ نیچے درج بے ترتیب حروف کو ترتیب دے کر خانوں میں درست لفظ لکھیے :

مثال: ا + ی + ڈ + ش + ا = اڈشا

- (i) س + ن + م + ر + د =
- (ii) ت + ق + ا + ث + ف =
- (iii) ن + ا + و + گ + ل =
- (iv) ت + ح + و + ک + م =
- (v) ذ + ت + ہ + ی + ب =
- (vi) ت + غ + ب + ل + ی =
- (vii) س + ل + م + ن + ا =
- (viii) ک + ہ + ب + د + ر =
- (ix) ج + ا + ت + ر + ت =
- (x) م + ا + ع + ت + ر =

10۔ جیسے ”تہذیب و ثقافت“ ایک ساتھ استعمال ہوتا ہے ایسے ہی ڈھونڈ کر اور جوڑے الفاظ سبق سے ڈھونڈ کر لکھیے:

	(ii)		(i)
	(iv)		(iii)
			(v)

11۔ درج ذیل خانوں میں دیئے گئے الفاظ کی مناسب ضد منتخب کیجیے اور انہیں جملوں میں استعمال کیجیے:

	مغرب پچھم	مشرق:	(i)
	غیر فطری دستی	فطری:	(ii)
	بعید دور	قریب:	(iii)
	پرانا جدید	قدیم:	(iv)
	امیر مزدور	غریب:	(v)

12- خالی جگہوں کو دیئے ہوئے لفظوں سے پُر کیجیے:

- (i) آدی باسی سماج اپنی ایک الگ..... رکھتا ہے۔ (شناخت / پہچان)
- (ii) بعض..... میں تو آدی باسیوں کی اکثریت ہے۔ (صوبوں / ضلعوں)
- (iii)..... لوگ نہایت سادہ لوح انسان ہوتے ہیں۔ (دراوڑ / آدی باسی)
- (iv) سُنڈر گڑھ کے قدیم نقش و نگار خاصی..... رکھتے ہیں۔ (معنی / اہمیت)
- (v) جین بادشاہوں میں..... کا نام سب سے اہم ہے۔ (کھارنیل / مہابیر)

13- درج ذیل الفاظ کا استعمال کرتے ہوئے آسان جملہ بنائیے:

- (i) جد امجد :
- (ii) قدیم :
- (iii) کھنڈ گیری :
- (iv) تبلیغ :
- (v) حملہ :

☆ عملی کام: اردو پروجیکٹ کا پی پراڈیسا کا نقشہ تیار کیجیے۔ درج ذیل ضلعوں کا نام لکھیے اور

انہیں مختلف رنگوں سے مزین کیجیے۔

جان پور۔ جگت سنگھ پور۔ سمبل پور۔ بولانگیر۔ کورا پٹ





بی بی فاطمہؓ

بی بی فاطمہؓ حضورؐ کی سب سے چھوٹی بیٹی تھیں۔ ان کی والدہ کا نام حضرت خدیجہؓ تھا۔ بی بی فاطمہؓ نیک، عبادت گزار اور بہت محنتی خاتون تھیں۔ وہ دن اور رات کے زیادہ تر حصوں میں اللہ تعالیٰ کی عبادت کیا کرتی تھیں۔ انھوں نے بہت سادہ زندگی گزاری اور ہر حال میں اللہ کا شکر ادا کیا۔ بی بی فاطمہؓ کی زندگی دنیا کی تمام عورتوں کے لیے بہترین نمونہ ہیں۔

حضورؐ اپنی بیٹی سے بہت پیار کرتے تھے۔ آپ نے ایک مرتبہ فرمایا کہ فاطمہؓ جنت کی عورتوں کی سردار ہیں۔ حضورؐ جب بھی کسی سفر سے واپس آتے تو سب سے پہلے مسجد میں دو گانہ نفل ادا کرتے اور پھر بی بی فاطمہؓ کے گھر جاتے تھے۔ بی بی فاطمہؓ جب بھی آپ سے ملاقات کے لیے آتیں تو حضورؐ اپنی چادر مبارک بچھا کر انہیں اپنے پاس بٹھالیتے۔

بی بی فاطمہؓ کی شادی حضرت علیؓ سے ہوئی۔ ان کے بطن سے تین اولاد ہوئیں جن کے اسمائے مبارکہ یہ ہیں۔ حضرت حسنؓ، حضرت حسینؓ اور حضرت زینبؓ۔



بی بی فاطمہؑ اپنے شوہر اور بچوں کی خدمت کے ساتھ ساتھ گھر کے تمام کام بھی خود کیا کرتی تھیں۔ جیسے کھانا پکانا، برتن صاف کرنا، جھاڑو دینا، غلہ صاف کرنا، آٹا پیسنا، وغیرہ۔ بہت زیادہ محنت کرنے کی وجہ سے آپ کے دست مبارک پر چھالے پڑ جایا کرتے تھے۔ ایک مرتبہ بی بی فاطمہؑ اپنے واسطے ایک خدمت گار طلب کرنے کے لیے حضورؐ کے پاس گئیں۔ اُس وقت آپؐ صحابیوں کے ساتھ بیٹھے تھے۔ بی بی فاطمہؑ شرم و لحاظ کی وجہ سے حضورؐ سے کچھ کہہ نہ سکیں اور واپس گھر چلی آئیں۔ بعد میں آپؐ خود بی بی فاطمہؑ کے گھر تشریف لائے اور ان سے آنے کی وجہ دریافت کی۔ بی بی فاطمہؑ خاموش رہیں۔ حضرت علیؑ نے خدمت گار طلب کرنے والی بات بتائی تو آپؐ نے اپنی چہتی بیٹی سے فرمایا بیٹی میں تمہیں اس سے زیادہ بہتر اور نفع کی چیز نہ بتاؤں! ارشاد فرمایا کہ رات سونے سے پہلے ۳۳ مرتبہ سبحان اللہ، ۳۳ مرتبہ الحمد للہ، ۳۳ مرتبہ اللہ اکبر پڑھ لیا کرو۔ یہ تمہارے لیے ایک ملازم کی خدمت سے کہیں زیادہ بہتر ہوگا۔ بی بی فاطمہؑ جواب دیا ”میں اللہ اور اس کے رسولؐ کی رضا میں خوش ہوں۔“



بی بی فاطمہ ؑ نے کبھی دولت کی خواہش نہیں کی۔ گھر میں کھانا نہ ہوتا تو وہ فاقہ کر لیتیں اور کسی کو خبر تک نہ ہوتی۔ اس کے باوجود جب بھی موقع ملتا وہ غریبوں کی مدد کرتی تھیں۔ کئی بار ایسا ہوا کہ وہ اور ان کے بچے فاقے سے ہیں، کھانے کا سامان مہیا ہوا، لیکن اسی وقت کسی سائل نے صدا دی۔ بی بی فاطمہ ؑ نے کھانا سائل کو دے دیا اور خود ان کے یہاں فاقہ ہی رہا۔ بی بی فاطمہ ؑ عورتوں کو ایمان داری، خدمت گزاری اور محبت بھرے برتاؤ کی تعلیم دیا کرتی تھیں۔ انھوں نے اپنے ایثار اور اخلاق سے لوگوں کے دلوں کو موہ لیا تھا اور سب ان کی عزت کرتے تھے۔

وصال سے کچھ عرصے پہلے اپنی علالت کے دوران حضورؐ سے اپنی بیٹی سے بہت دھیمی آواز میں کچھ فرمایا جس پر بی بی فاطمہ ؑ رونے لگیں۔ اس کے بعد حضورؐ نے ایک اور بات ایسے ہی انداز میں کہی اور اس بار وہ مسکرائے لگیں۔ بعد میں پوچھے جانے پر بی بی فاطمہ ؑ نے بتایا کہ پہلی مرتبہ حضورؐ نے فرمایا تھا کہ آپؐ بہت جلد اس دنیا سے تشریف لے جائیں گے۔ اس پر انھیں رونا آ گیا تھا۔ اس کے بعد حضورؐ نے انھیں بتا دیا کہ میری اولاد میں سب سے پہلے تم میرے پاس آؤ گی۔ اس بات پر وہ مسکرا دی تھیں۔ بی بی فاطمہ ؑ حضورؐ کے وصال کے تقریباً چھ ماہ بعد تیس سال (23) کی عمر میں اس دنیا سے رخصت ہو گئیں۔

بی بی فاطمہ ؑ کی زندگی سے نصیحت ملتی کہ ہمیں صبر سے کام لینا چاہیے۔ اپنے گھر والوں اور پڑوسیوں کی خدمت کرنی چاہیے، محنت سے جی نہیں چرانا چاہیے۔ مصیبت اور فاقے میں بھی خدا کا شکر ادا کرنا چاہیے۔



عبادت گزار	:	عبادت کرنے والا/والی
غلّہ	:	اناج
خدمت گار	:	خادم، نوکر، خدمت کرنے والا
صحابی	:	حضورؐ کے ساتھی، جو شخص بحالت ایمان میں حضورؐ کو دیکھا ہو اور بحالت ایمان وفات پائی ہو۔
رضا	:	خوشی، رغبت
مہیا	:	موجود، تیار
سائل	:	سوال کرنے والا، مانگنے والا
صدا	:	آواز، پُکار
فاقہ کرنا	:	بھوکا رہنا
ایشار	:	قربانی، ہمدردی، ترجیح دینا، فوقیت
وصال	:	انتقال، خدا سے جا ملنا
دل کو موہ لینا	:	دل جیت لینا

☆ حضور اقدسؐ نے اپنی بیٹی سے تعلق و محبت کا ایسا رشتہ قائم کر کے دکھایا جس سے رہتی دنیا تک آنے والی نسلوں کو یہ پیغام ملا کہ بیٹیاں لائق عزت و عظمت ہیں۔ اسلام میں بیٹیوں کو اونچا مقام حاصل ہے۔ قبل اسلام بیٹیوں کی ناقدری کی جاتی تھی۔ بیٹی دنیا میں سب سے بدترین چیز سمجھی جاتی تھی۔ اسلام آنے کے بعد بیٹی کیا چیز ہوتی ہے اس کا کیا مقام ہے، اس کی کیا ضرورت ہے، ہمارے نبی ﷺ نے اپنی سب سے چہتی بیٹی حضرت فاطمہؓ کو مثال کے طور پر قیامت تک آنے والے انسانوں کے سامنے پیش کیا ہے۔

☆ ایثار اپنے آپ پر دوسروں کو ترجیح دینا، دوسروں کی مدد کرنا، خود تکلیف میں رہتے ہوئے دوسروں کے لئے راحت کا سامان پیدا کرنا ایسا بہترین وصف ہے جس وصف کو اپنی زندگی میں اپنا کر، برت کر اپنی زندگی کو مثالی بنایا جاسکتا ہے۔

☆ حضرت فاطمہؓ نے اپنی خانگی اور ازدواجی زندگی میں شوہر کی خدمت کو اپنا فرض سمجھا اور اپنی ازدواجی زندگی کو سنوارا۔ ازدواجی زندگی ایک گاڑی کے دو پہیہ کے مماثل ہے یعنی یہ رشتہ شوہر اور بیوی کے درمیان کا رشتہ ہے اس رشتہ کو نباہنے میں آپسی تعاون لابدی ہے۔ اگر گاڑی کا ایک پہیہ بیکار ہو جائے تو گاڑی نہیں چلتی ٹھیک اسی طرح ازدواجی زندگی اس وقت تک مکمل نہیں ہو سکتی جب تک کہ شوہر اور بیوی ایک دوسرے کے حقوق کی پاسداری نہ کریں۔

3- سوچیے، بتائیے اور لکھیے :

- (i) حضورؐ کی سب سے چھوٹی بیٹی کا نام کیا تھا؟
- (ii) بی بی فاطمہؓ کی والدہ کا نام کیا تھا؟
- (iii) بی بی فاطمہؓ کے شوہر اور ان کے بچوں کے نام لکھیے۔
- (iv) بی بی فاطمہؓ اپنے گھر کا کیا کیا کام کرتی تھیں؟
- (v) حضورؐ نے کس عورت کو جنت کا سردار کہا ہے؟
- (vi) بی بی فاطمہؓ عورتوں کو کیا تعلیم دیا کرتی تھیں؟
- (vii) بی بی فاطمہؓ کی زندگی سے ہمیں کیا نصیحت ملتی ہے؟
- (viii) بی بی فاطمہؓ کا وصال حضورؐ کے کتنے دن بعد ہوا تھا؟

4- درج ذیل لفظوں سے خالی جگہوں کو پُر کیجیے:

- عورتوں۔ بہترین۔ سردار۔ فاطمہؓ۔ دولت۔ محنتی۔ صحابیوں
- (i) بی بی فاطمہؓ نیک عبادت گزار اور بہت..... خاتون تھیں۔
 - (ii) بی بی فاطمہؓ کی زندگی دنیا کی تمام..... کے لیے..... نمونہ ہے۔
 - (iii) آپؐ نے ایک مرتبہ فرمایا کہ..... جنت کی عورتوں کی..... ہیں۔
 - (iv) اس وقت آپؐ..... کے ساتھ بیٹھے تھے۔
 - (v) بی بی فاطمہؓ نے کبھی..... کی خواہش نہیں کی۔

5- درج ذیل الفاظ کو پڑھیے اور آسان جملے بنا کر خالی جگہوں میں لکھیے:

- (i) نیک :
.....
- (ii) سردار :
.....
- (iii) سفر :
.....
- (iv) خدمت گار:
.....
- (v) برتن :
.....

6- درج ذیل میں دیے گئے الفاظ کی ضد لکھیے:

الفاظ	چھوٹی	نیک	پاس	غریب	رونا	جنت	رات
ضد							

7- درج ذیل الفاظ میں سے واحد اور جمع کو تلاش کر خانوں میں لکھیے:

مسجد-	امیر -	غرباء-	خدمات-	احوال-	خبر
واحد					

8۔ ”الف“ اور ”ب“ کالم کو ملا کر جملے مکمل کیجیے:

”ب“

آپ کے ہاتھوں میں گٹے پڑ گئے تھے۔
 اور محبت بھرے برتاؤ کی تعلیم دیا کرتی تھیں۔
 آپ نے اپنی چھتی بیٹی سے فرمایا ”بیٹی صبر کرو“
 حضورؐ اپنی چادر بچھا کر انہیں اپنے پاس بٹھالیتے تھے۔
 سب سے چھوٹی بیٹی تھیں۔

”الف“

بی بی فاطمہؓ حضورؐ کی
 بی بی فاطمہؓ جب بھی آپؐ سے ملنے آتیں تو
 بہت زیادہ محنت کرنے کی وجہ سے
 حضرت علیؓ نے خدمت گار
 طلب کرنے والی بات بتائی تو
 بی بی فاطمہؓ عورتوں کو ایمانداری
 خدمت گزاری

9۔ غور سے پڑھیے خوش خط لکھیے:

خواہش	صحابی	حضرت	خدمت گار	عبادت گزار

10- درج ذیل مثال کے مطابق لاحقے ”گار“ کی مدد سے نیچے دیئے گئے الفاظ کے ذریعہ خانوں

کو پر کیجیے۔ مثال : خدمت + گار =

11- عملی کام:

- ☆ حضورؐ کی بیٹیوں میں سے تین کے نام اپنی کاپی میں لکھیے۔
- ☆ اپنی کاپی میں پانچ صحابیؓ کے نام لکھیے۔
- ☆ چار مشہور پیغمبروں کے نام اپنے استاد صاحب سے معلوم کر کے یاد رکھیے۔
- ☆ (ؑ) اس علامت کو حضورؐ کے نام میں استعمال کیا جاتا ہے۔
- ☆ (ؒ) اس علامت کو صحابی اور صحابیات کے نام میں استعمال کیا جاتا ہے۔
- ☆ آپ چند صحابہ اور صحابیات کے نام لکھ کر اس علامت استعمال کیجیے۔





ترانہ ہندی

علامہ اقبال



سارے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا
ہم بلبلیں ہیں اس کی یہ گلستاں ہمارا

غربت میں ہوں اگر ہم، رہتا ہے دل وطن میں
سمجھو وہیں ہمیں بھی دل و جہاں ہمارا



پربت وہ سب سے اونچا ہمسایہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا

گودی میں کھیلتی ہیں اس کی ہزاروں ندیاں
گلشن ہے جن کے دم سے رشکِ جناں ہمارا



اے آبِ رودِ گنگا! وہ دن ہے یاد تجھ کو
اترا ترے کنارے جب کارواں ہمارا

مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم، وطن ہے ہندوستان ہمارا

کچھ بات ہے کہ ہستی مٹی نہیں ہماری
صدیوں رہا ہے دشمن دورِ زماں ہمارا



1- لفظ و معنی :

گلستاں	:	باغ
ہم سایہ	:	پڑوسی
سنتری	:	چوکیدار، سپاہی
غربت	:	پردیس، وطن سے دور
پاسبان	:	رکھوالا، نگہبان، حفاظت کرنے والا
گلشن	:	باغ، چمن
رشکِ جنائ	:	حسد کرنا، دوسرے کی نعمت کو دیکھ کر چھین جانے کی آرزو کرنا۔
رود	:	حالت، کیفیت
بیر	:	دشمنی، عداوت
ہستی	:	وجود، زندگی
دورِ زماں	:	زمانہ، زمانے کی گردش

2- غور کیجیے:

- ☆ ”ترانہ ہندی“ میں وطن عزیز کی گنگا جمنی تہذیب کو اس خوبصورت انداز میں بیان کی گئی ہے جو کسی اور قومی ترانہ میں اس کی نظیر نہیں ملتی۔ جہاں وطن عزیز کی خوبصورتی اور امتیازی شان کو بیان کیا وہیں اہل وطن کی رواداری اور اخوت کو نمایاں کیا ہے۔
- ☆ آج بھی یہ نظم پورے ملک میں بہت شوق سے پڑھی اور سنی جاتی ہے جس طرح آزادی سے پہلے اس کو سن کر لوگ وطن کی محبت میں سرشار ہو جاتے تھے ٹھیک اسی طرح آج بھی اسے سن کر وطن کی محبت رگ و پے میں پیوست ہو جاتی ہے گویا کہ یہ نظم اہل وطن کے لیے اکسیر محبت ہے۔
- ☆ ہندوستان پر بہت حملے کیے گئے لیکن ہماری تہذیب اور ہمارے قومی اتحاد کی بنیادیں اتنی مضبوط ہیں کہ کوئی انہیں نقصان نہیں پہنچا سکتا۔

3- سوچیے، بتائیے اور لکھیے:

- (i) ہمارے ملک کا نام کیا ہے؟
- (ii) ”ببلیں اور ”گلستاں“ سے شاعر کی کیا مراد ہے؟
- (iii) نیچے دیے ہوئے مصرعہ کا کیا مطلب ہے؟
”غربت میں ہوں اگر ہم، رہتا ہے دل وطن میں“
- (iv) ”سنتری“ اور ”پاسباں“ سے شاعر کی کیا مراد ہے؟
- (v) رشکِ جنائ سے کیا مراد ہے؟
- (vi) مذہب ہمیں کس بات سے روکتا ہے؟
- (vii) اس نظم میں آپ کو کون سا شعر سب سے زیادہ پسند ہے اور کیوں؟
- (viii) کون سی بات ہے جس کی بناء پر ہماری ہستی پائدار ہے؟
- (ix) نظم میں ”گود سے“ کس کی گود مراد ہے؟

4- نیچے دیے ہوئے الفاظ کے واحد کی جمع اور جمع کا واحد لکھیے:

دشمنوں	ہستی	ببلیں	غریب	جہانوں	ندی	مذہب	دوریں
--------	------	-------	------	--------	-----	------	-------

جمع

واحد

5- نیچے ہر لفظ کے سامنے تین الفاظ دیے گئے ہیں۔ آپ ان میں سے مثال کے مطابق لفظ متضاد پر دائرہ بنا کر نشان دہی کیجیے۔

مثال	: دن	:	آج	:	رات	:	شام
	: اچھا	:	نیک	:	بُرا	:	صاف
	: اونچا	:	بڑا	:	اوپر	:	نیچا
	: دشمن	:	دوست	:	پردیسی	:	اجنبی
	: غربت	:	پردیسی	:	اپنائیت	:	اجنبیت
	: پیر	:	دشمنی	:	دوستی	:	بھلائی

6- الفاظ کی ترتیب کو درست کر کے صحیح مصرعے خالی جگہوں میں لکھیے:

اچھا ہمارا ہندوستان جہاں سے سارے

..... ☆

کچھ بات ہے کہ ہماری ہستی نہیں ٹٹی

..... ☆

دو ریزماں صدیوں ہمارا دشمن رہا ہے

..... ☆

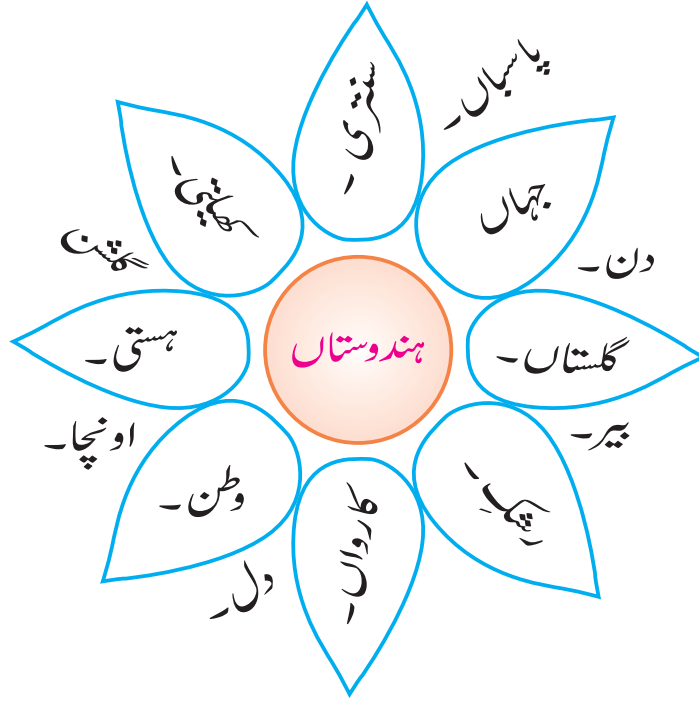
ہزاروں ندیاں اس کی گودی میں کھیلتی ہیں

..... ☆

وہ سب سے اونچا پر بت کا ہمسایہ آسماں

..... ☆

7- ذیل کے نقشے میں دیے گئے الفاظ کی مدد سے خالی جگہوں کو پر کر کے نظم کو مکمل کیجیے۔



سارے جہاں سے اچھا ہمارا
 ہم بلبلیں ہیں اس کی یہ ہمارا
 غربت میں ہوں اگر ہم، رہتا ہے وطن میں
 سمجھو وہیں ہمیں بھی دل و ہمارا
 پربت وہ سب سے ہمسایہ آسماں کا
 وہ ہمارا وہ ہمارا
 گودی میں ہیں اس کی ہزاروں ندیاں
 ہے جن کے دم سے جنان ہمارا
 اے آبِ رودِ گنگا! وہ ہے یاد تجھ کو
 اترا ترے کنارے جب ہمارا
 مذہب نہیں سکھاتا آپس میں رکھنا
 ہندی ہیں ہم، ہے ہندوستان ہمارا
 کچھ بات ہے کہ ملتی نہیں ہماری
 صدیوں رہا ہے دورِ زماں ہمارا

8۔ نیچے دیے ہوئے لفظوں کے ہم معنی الفاظ، جدول میں دیے گئے حروف سے تلاش کیجیے اور خالی جگہوں میں لکھیے۔

ب	ا	غ	ر	م
ح	د	پ	ن	پ
س	ب	ہ	و	ا
د	ج	ا	ا	ن
پ	ہ	ڑ	لا	ی
ر	کھ	و	ا	لا

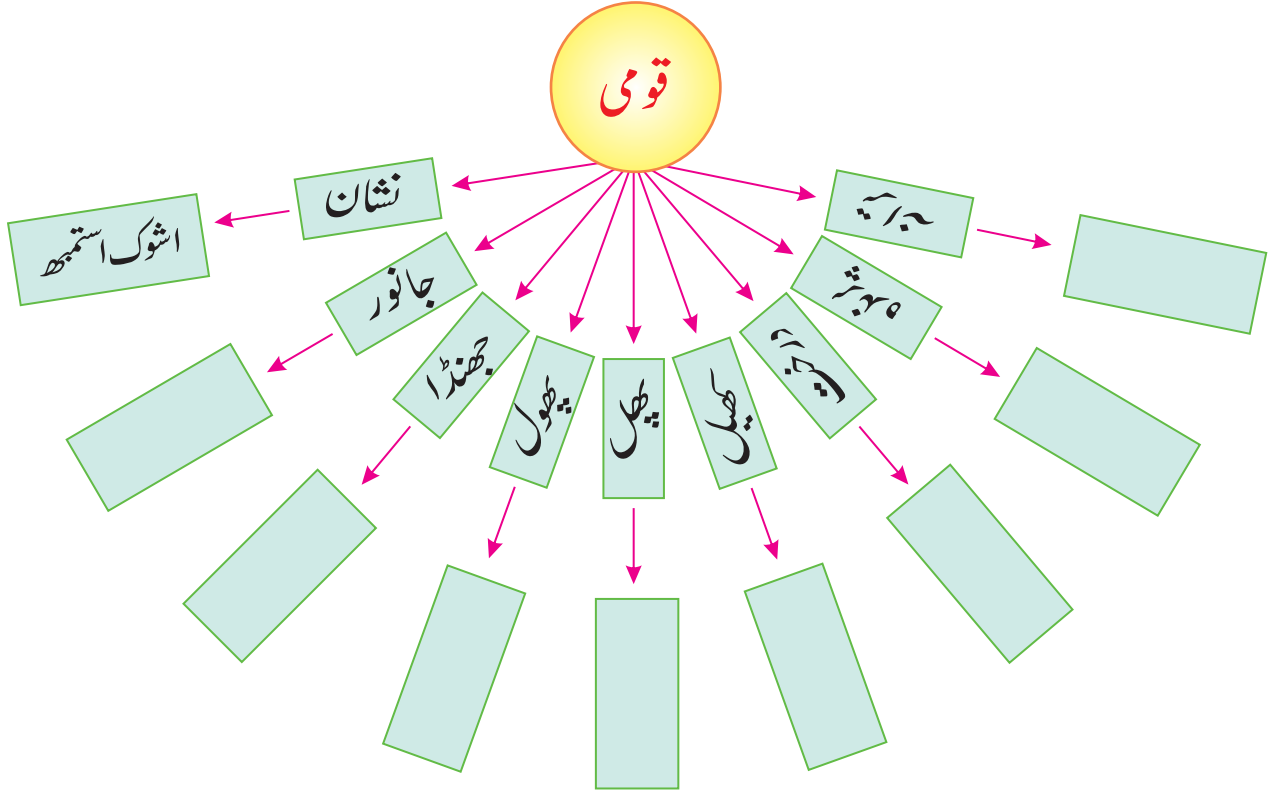
باغ	:	گلستاں	(i)
	:	پرہت	(ii)
	:	آب	(iii)
	:	پاسباں	(iv)
	:	رشک	(v)

9۔ ذیل کے خانوں میں درج الفاظ کی املا درست کیجیے اور لکھیے:

	غلستاں	(i)
	گرہت	(ii)
	دسمن	(iii)
	غودی	(iv)
	حدوستاں	(v)

10- درج ذیل خانوں کو مثال میں دیے گئے طریقے پر پر کیجئے:

مثال: قومی- نشان- اشوک استمبھ



11- ہندوستان کی پانچ مشہور نندیوں کے نام لکھیے:

(i)

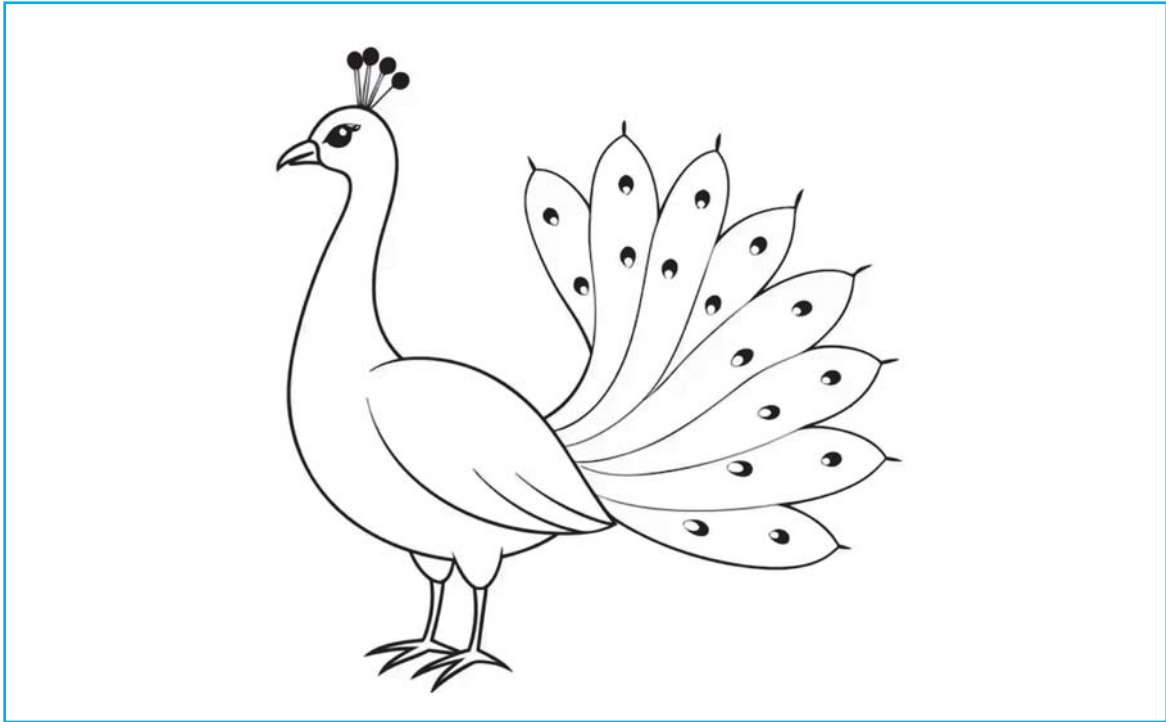
(ii)

(iii)

(iv)

(v)

- ☆ علامہ اقبال کے اس ترانے کو ترنم کے ساتھ پڑھنے کی مشق کیجیے۔
 - ☆ ہندوستان کا قومی پرچم بنائیے اور اس میں رنگ بھریئے۔
 - ☆ انٹرنیٹ کی مدد سے اسی طرح قومی ترانے کو حاصل کیجیے اور اپنے ہم جماعتوں کے ساتھ ترنم سے پڑھیے۔
 - ☆ اس نظم کو جماعت میں اجتماعی طور پر پڑھیے۔
- اس میں رنگ بھریئے۔





فن تارکشی اور کٹک

سعید رحمانی

کٹک کا فن تارکشی نہ صرف ہندوستان بلکہ پوری دنیا میں اپنی جاذبیت کے لیے منفرد مقام رکھتا ہے۔ کٹک میں بنے ہوئے چاندی کے مختلف زیورات و ظروف اپنی خوبصورتی اور دل کشی کے سبب آج ہر ایک کی توجہ کا مرکز ہیں۔ باہر کے لوگ خواہ وہ ہندوستانی ہوں یا غیر ملکی اڈیشا آتے ہیں تو ان زیورات و ظروف کو خرید کر اپنے دوستوں اور عزیزوں کو بطور تحائف پیش کرنے کی خواہش لیے ہوئے کٹک بھی ضرور آتے ہیں۔ یہ ایک حقیقت ہے کہ کسی فن کا عروج اپنے فنکاروں کی لگن اور محنتوں کی دین ہوتا ہے۔ جب ہم ان حسین نوادرات کو اپنے ہاتھوں میں لیتے ہیں تو دل میں ایک سوال سر ابھرنے لگتا ہے کہ آخر ان کے بنانے والے لوگ کون ہیں اور وہ کس حال میں ہوں گے؟ ان کی مالی حیثیت کیسی ہوگی؟ وہ خوشحال ہیں یا غربت کے شکنجے میں گرفتار؟ یہ باتیں جاننے کے لیے آئیے چلتے ہیں کٹک کے اس محلے کی طرف جہاں تارکشی کے ماہرین آباد ہیں۔ یہ محلہ مان سنگھ پٹنہ کے نام سے معروف ہے۔ یہ شہر کے مغرب میں واقع ہے وہاں آپ کو سیکڑوں لوگ چاندی کے تاروں کو مختلف شکلوں میں ڈھالتے نظر آئیں گے۔ ان میں بچے بھی ہیں اور بوڑھے بھی۔ انہی کی محنت سے یہ نوادرات ڈھلتے ہیں اور پھر بازاروں تک پہنچتے ہیں۔



کٹک میں فن تارکشی کی شروعات کیسے ہوئی؟ لفظ ”تارکشی“ اگرچہ فارسی کا ہے لیکن اڈیشا کے لوگ اس کو اڈیا زبان کا ایک لفظ تصور کرتے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ اسے ”تارکشی“ کے بجائے ”تارکسی“ کہتے ہیں۔ انگریزی میں اسے فلگری آرٹ (Filigree Art) کا نام دیا گیا ہے۔ کٹک میں اس کی شروعات کے متعلق کوئی بھی ٹھوس بات ابھی تک ہمارے سامنے نہیں آئی۔ عام طور پر یہی باور کیا جاتا ہے کہ مغل اس فن کو اپنے ساتھ ایران سے لائے تھے۔ یہ بات اس لیے درست معلوم ہو رہی ہے کہ شاہانِ مغلیہ کو مختلف فنون سے ہمیشہ دلچسپی رہی ہے۔ مغلیہ دور میں کٹک ہی اڈیشا کا پایہ تخت تھا اور ہو سکتا ہے کہ اسی عہد میں چاندی کے منقش زیورات کو فروغ ملا ہوگا۔ چنانچہ اب یہی کہا جاسکتا ہے کہ تارکشی کا فن مغلوں کی دین ہے جو مقامی ہنرمندی کی آمیزش سے حسن و جمال کا ایک قابل قدر نمونہ بن گیا اس میں جہاں اسلامی فن نقاشی کی جھلک ہے وہیں ہندوؤں کی مخصوص ڈیزائننگ کا عکس بھی نمایاں ہے۔ اس لحاظ سے ہم فن تارکشی کو ہندو مسلم، تہذیبی میل ملاپ کا آئینہ دار بھی کہہ سکتے ہیں۔ لیکن حیرت کی بات یہ ہے کہ اس وقت زیادہ تر ہندو حضرات ہی اس فن سے وابستہ نظر آتے ہیں۔ مسلم فنکاروں کی تعداد بہت کم ہے۔

مغلوں کی سرپرستی میں یہ فن ترقی کی انتہائی بلندیوں کو چھو چکا تھا۔ مغلیہ سلطنت افراتفری کا شکار ہوئی تو اس فن کی قدر دانی بھی نہ رہی۔ تاہم اس گرانقدر فن کی اہمیت اپنی جگہ برقرار رہی۔ یہ انسان کا ذوق و شوق ہے جو اسے ہر خوبصورت چیز کا گرویدہ بنا دیتا ہے۔ لہذا دلکش نقش و نگار سے مزین چاندی کے زیورات لوگوں کا مرکز نگاہ بنتے گئے بالآخر ان کی شہرت سات سمندر پار جا پہنچی۔



فنِ تارکشی کے مزدوروں کی بگڑتی ہوئی صورتحال کے پیش نظر فخر اڈیشا مدھوسدن داس نے اسے سہارا دینے کی کوشش کی انھوں نے 1902ء میں ”اڈیشا آرٹ ایمپوریم“ کے نام سے ایک ادارہ قائم کیا جس کے تحت یہ کوشش ہوئی کہ کاریگروں کے حقوق کا تحفظ ہو اور معاشی طور پر وہ خوشحال ہو جائیں۔ اپنے ادارے میں انھوں نے ایک سو کاریگروں کا تقرر کیا۔ مدھوسدن داس ہر کام میں نظم و ضبط کے قائل تھے۔ تمام چیزوں کا معیاری ہونا ان کی لازمی شرط تھی۔ ان کے اقدامات کا خوشگوار نتیجہ برآمد ہوا۔ کٹک کا یہ منفرد فن جو دم توڑتا نظر آرہا تھا ان کی سرپرستی میں دوبارہ ترقی کی راہ پر گامزن ہو گیا۔ تارکشی کی مصنوعات کی کھپت کے لیے انہوں نے غیر ممالک میں منڈیاں بھی قائم کیں۔ مدھو بابو جو جدید اڈیشا کے معمار تصور کیے جاتے ہیں ان کے عمل کا دائرہ بہت وسیع تھا۔ لہذا وہ سیاسی سرگرمیوں میں گھر کر رہ گئے۔ ان کی سرپرستی سے محروم ہو کر ”آرٹ ایمپوریم“ بد نظمی کا شکار ہو گیا۔ آخر کار 1930ء میں مالی مشکلات کے سبب اسے بند کرنا پڑا۔

مایوس کاریگروں کی فلاح و بہبود کے لیے 1953ء میں ایک اور کوشش کی گئی۔ شہر کے تجارتی مرکز نیم چوڑی میں ”اڈیشا فلگری ورکرس کوآپریٹو“ نام کی ایک سوسائٹی بھی قائم ہوئی اسے بھی ناکامی کا منہ دیکھنا پڑا۔ 1957ء اسی طرح ایک اور سوسائٹی بنی لیکن وہ بھی حالات میں کوئی سدھار نہ لاسکی۔ 1965ء میں 18 لاکھ کی خطیر رقم سے ”کلنگا کوآپریٹو فلگری سوسائٹی“ کی بنیاد رکھی گئی۔ حیران و پریشان کاریگروں کی آنکھوں میں پھر سے امید کے چراغ روشن ہوئے۔ غرض کہ یہ فن وقت اور حالات کا مقابلہ کرتا ہوا آج بھی زندہ ہے اور اس کی عظمت و شہرت بھی برقرار ہے۔



جاذبیت	:	پرکشش۔ خوبصورت۔ حسن سے بھرپور
پایہ تخت	:	دارالحکومت۔ راجدھانی
منفرد	:	یکتا۔ اکیلا۔ یگانا
تقویت	:	مضبوط کرنا۔ طاقت بخش
ظروف	:	ظرف کی جمع برتن۔ رکابی وغیرہ
ترجیح	:	برتر۔ فضیلت
عروج	:	بلندی۔ ترقی
آمیزش	:	ملاوٹ
نوادرات	:	عجیب و غریب چیزیں۔ انوکھی۔ نایاب
نقاشی	:	نقش و نگار کا فن۔ تصویر کشی
تقرر	:	مقرر کرنا۔ انتخاب کرنا
گرویدہ	:	پسندیدہ۔ دل لبھانے والا
نظم و ضبط	:	انتظام۔ بندوبست
مزین	:	سجایا ہوا۔ آراستہ۔ سجایا
مصنوعات	:	ہاتھ سے بنائی ہوئی چیزیں
جدید	:	نیا

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ شہر کٹک آج دنیا بھر میں فن تارکشی کے لیے مشہور ہے۔
- ☆ اس فن میں سونے اور چاندی کے تار کو مختلف شکلوں میں ڈھال کر خوبصورت اور دلکش زیورات اور برتن و دیگر اشیاء بنائی جاتی ہیں۔
- ☆ اس فن کو مغل اپنے ساتھ ایران سے لائے تھے۔ دورِ مغلیہ میں کٹک اڈیشا کی راجدھانی تھا۔ لہذا کٹک کے سنار اس فن میں ماہر بن گئے۔
- ☆ فن تارکشی میں اسلامی تغریٰ، نقش نگارم دیوی دیوتاؤں کی مورتیاں وغیرہ خصوصی اہمیت رکھتی ہیں۔
- ☆ مدھوسدن داس نے اس فن کو بڑھا دینے کے لیے اڈیشا آرٹ ایمپوریم قائم کی تھی۔ اس کی مقبولیت صرف ہندوستان ہی نہیں بلکہ بیرون ممالک میں بھی ہونے لگی ہے۔



3- سوچیے اور بتائیے:

- (i) لفظ تارکشی کس زبان کا لفظ ہے؟
- (ii) تارکشی کو اڑیا زبان میں کیا کہتے ہیں؟
- (iii) کٹک کی تجارتی مرکز کون ہے؟
- (iv) کٹک کا کون سا فن پوری دنیا میں مشہور و معروف ہے؟
- (v) تارکشی کے ماہرین فن کہاں آباد ہیں؟
- (vi) تارکشی کا فن کون اپنے ساتھ کہاں سے لائے تھے؟
- (vii) دورِ مغلیہ میں اڈیشا کا دار الحکومت کہاں تھا؟
- (viii) اڈیشا آرٹ امپوریم کس نے قائم کی تھی؟
- (ix) اڈیشا آرٹ امپوریم قائم کرنے کا مقصد کیا تھا؟
- (x) اڈیشا آرٹ امپوریم کب اور کیوں بند ہو گئی؟

4- خالی جگہوں کو صحیح لفظوں سے پر کیجیے۔

- (مختوں، فلگری، ایران، فارسی، نظم و ضبط، لگن)
- (i) کسی فن کا عروج اپنے فنکاروں کی..... اور..... کی دین ہوتا ہے۔
 - (ii) لفظ ”تارکشی“..... زبان کا لفظ ہے۔
 - (iii) انگریزی میں اسے..... کا نام دیا گیا ہے۔
 - (iv) مغل اس فن کو اپنے ساتھ..... سے لائے تھے۔
 - (v) مدھوسدن داس ہر کام میں..... کے قابل تھے۔

5- نیچے دیے ہوئے لفظوں کو جملوں میں استعمال کیجیے۔

- (i) زیورات :
- (ii) لگن :
- (iii) نوادرات :
- (iv) حیثیت :
- (v) خوشحالی :

6- ذیل میں دیے گئے الفاظ کی ضد لکھیے :

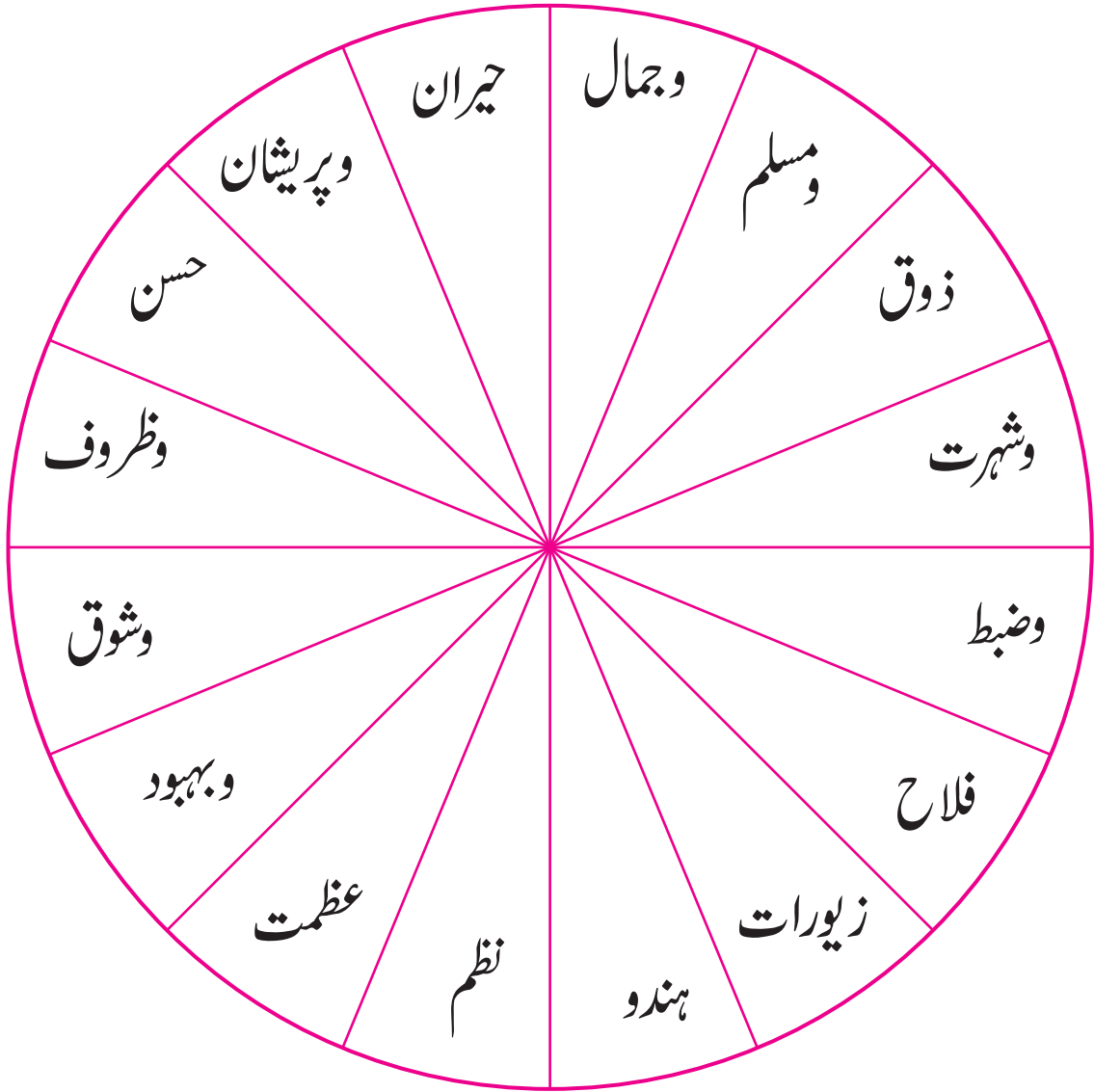
- (i) مفرد :
- (ii) خوش حال :
- (iii) زندہ :
- (iv) خوبصورت :
- (v) مشکل :

7- ذیل کے الفاظ کے واحد لکھیے :

- (i) زیورات :
- (ii) تحائف :
- (iii) مشکلات :
- (iv) اوراق :
- (v) حالات :

8- سبق میں آئے جوڑے الفاظ چن کر خانے میں درج کیجیے:

مثال کے طور پر: خرید و فروخت



9۔ ہائے ملفوظی اس ”ہ“ کو کہتے ہیں جو صاف طور پر پڑھی جائے۔ جیسے: راہ۔ آہ۔ شاہ وغیرہ۔

اس سبق میں سے ہائے ملفوظی کی چند مثالیں تلاش کر کے لکھیے۔

- | | |
|------------|-------------|
| (ii) | (i) |
| (iv) | (iii) |
| | (v) |

عملی کام:

-10

(i) تارکشی سے بننے والی چیزوں کی تصویر جمع کر کے اپنی کاپی میں چسپاں کریں۔

(ii) کسی سنار کی دکان میں جا کر تارکشی کے سامان بنتے ہوئے دیکھیے اور گھر واپس آ کر اپنی کاپی میں کیا کیا دیکھا تحریر کیجیے۔





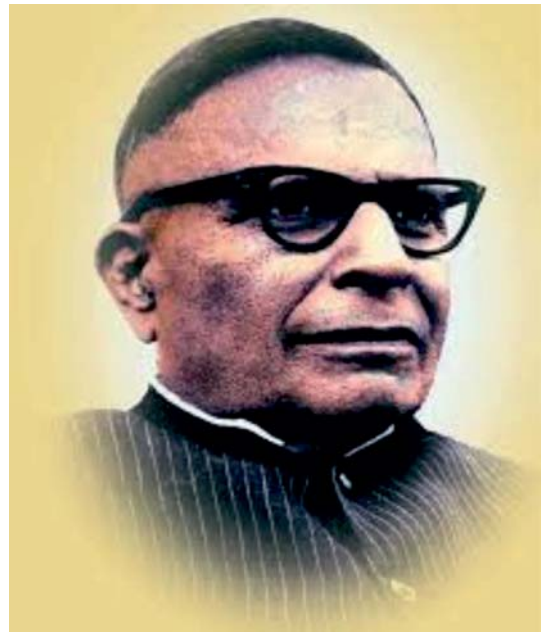
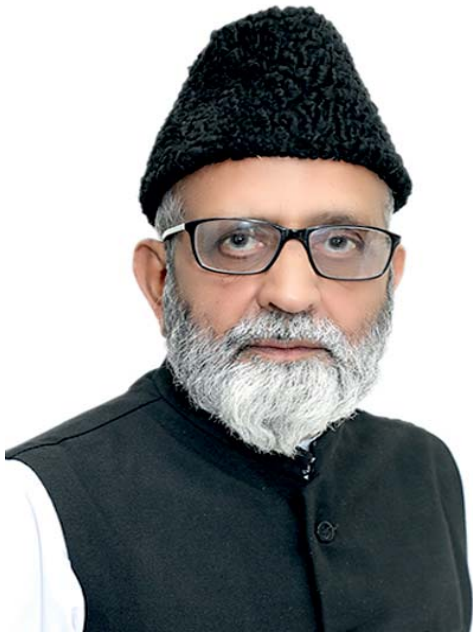
سلاخوں کے پیچھے

مولانا محمد اطہرؒ

حضرت مولانا سید اطہر صاحبؒ اپنی جیل ڈائری ”سلاخوں کے پیچھے“ میں تحریر فرماتے ہیں کہ: 1938ء کے آخری مہینوں میں تکمیل نصاب ہو چکی تھی۔ مگر میری خواہش فی الحال گھر لوٹ آنے کی نہ تھی۔ گھر والوں کا تقاضہ بڑھ رہا تھا۔ مگر ضلع کانگریس کی نظامت اور صوبہ جمعیت کی دفتری مصروفیت بہت بڑھ گئی تھی۔ ضلع کانگریس کی نظامت اور صوبہ جمعیت کی دفتری ذمہ داری میری راہ میں حائل رہیں۔ ساتھ ہی مرکزی جمعیت علماء کا اجلاس بھی قریب کے مہینوں میں بلوایا جا رہا تھا۔ تاہم آل انڈیا کانگریس کے دفتر سے ڈاکٹر اشرف کا مسلسل یہ اصرار بڑھتا ہی رہا کہ مجھے اڈیشا جلد سے جلد پہنچنا چاہیے۔ اجلاس اور ضلع کانگریس کی نظامت سے سبکدوشی کے بعد رسالہ قائد (مراد آباد) کی ذمہ داری مجھ پر پڑ گئی۔ میں مطمئن تھا کہ مناسب حال مصروفیت میرے ہاتھ ہے۔ وقت اور حالات کی سازگاری کے پیش نظر میں اڈیشا پہنچ جاؤں گا۔ یکا یک اشرف صاحب کا ایک خط موصول ہوا کہ ”آل انڈیا کانگریس کی طرف سے اڈیشا کی صوبائی اور ضلعی کانگریس کمیٹیوں کو آپ کے اڈیشا پہنچنے کی اطلاع دے دی گئی ہے۔ اور آپ براہ راست اپنے پہنچنے کی تاریخ سے مطلع کر دیجیے۔“



ڈاکٹر اشرف کی ہدایت کے مطابق 7 دسمبر 1939ء کو کٹک پہنچا۔ کارکنان اڈیشا اگرچہ سخت پارٹی بازی میں مبتلا تھے مگر ایک جماعت جو ضلع کمیٹی پر قابض تھی اس نے میرا خیر مقدم کیا۔ میرے کاموں کے لیے بہت سی سہولتیں فراہم کرنے کا وعدہ کیا گیا۔ اڈیشا میں حالانکہ وزارت مستعفی ہو چکی تھی۔ مگر مسلمانوں کی شکایت تاحال تازہ تھی۔ مسلم لیگ بھی خاصی منظم اور طاقت ور تھی۔ انھیں جب معلوم ہوا کہ یہ وہی شخص ہے جس نے راجندر پرساد جی کے بیان کی تائید کی تھی تو ان کی مخالفت از سر نو تازہ ہو گئی۔ کانگریسی مسلمان جو ایک آدھ تھے انھیں اگرچہ کانگریس سے شکایتیں تھیں مگر برابر اپنے اصول پر قائم تھے۔ قوم پرست مسلمان، مسلم آبادی کے اندر کانگریس کا جلسے کرنے کے خلاف تھے۔ لیکن میرے اصرار پر کئی جلسے کٹک شہر کے اندر منعقد کیے گئے۔ مگر ان کی جانب سے مخالفانہ کارروائی نہیں ہوئی۔ اس صورت حال کو دیکھ کر ضلع کانگریس کی طرف سے میرے دورے کا پروگرام طے ہوا۔ اس دورے میں لیگ مخالفین سے دو چار ہونا پڑا۔ مگر میں نے اپنی تقریر کے ذریعہ صورت حال پر قابو پا لیا۔ جلسہ کے ختم ہونے کے بعد کیندر اپاڑہ کے چند لیگی رضا کاروں نے اپنی وردیاں پھینک کر کانگریس کی رکنیت قبول کر لی۔



(اڈیشا میں) میری ہمت افزائی کے لیے کوئی اخبار یا کانگریس کے سوا اور کوئی جماعت بھی نہیں تھی۔ ان تمام مشکلات اور سیاسی امور کے مقابلے کے لیے میں تنہا رہ گیا تھا۔ مجھے معلوم ہوا کہ بھدرک کی لیگی بہت طاقتور ہے۔ اگر میں وہاں گیا تو ان سب باتوں کا بدلہ بس وہیں اتار لیا جائے گا۔ اس وقت مہتاب بابو بھدرک میں موجود تھے۔ میں بھدرک پہنچ گیا۔ وہاں کے مسلم کارکنوں سے تبادلہ خیال ہوا۔ سمجھوں نے عام جلسہ کرنے کی مخالفت کی۔ مگر میرے اصرار پر جلسے کا بندوبست کیا گیا۔ مہتاب بابو نے بھی اس جلسے میں شرکت کی۔ جلسے کے اختتام پر وردی پوش رضا کاروں نے زبردست مظاہرہ کیا۔ اور نہایت اشتعال انگیز طریقے سے میری موٹر پر چڑھائی کی گئی۔ مگر فوراً ہی حالت پر قابو پالیا گیا۔

کٹک میں سستیہ گره (1941ء)

دسمبر 1940ء سے انفرادی سول نافرمانی شروع ہو گئی۔ میں نے اپنا نام گاندھی جی کی منظوری کی پہلی فہرست میں داخل کرنا چاہا۔ مگر پہلی فہرست کی کوئی ایک شرط بھی مجھ پر منطبق نہیں تھی۔ لہذا دوسری فہرست کی منظوری میں داخل ہو گیا۔ 6 جنوری 1941ء کو میں نے خاص مسلم حلقہ قدم شریف کے احاطے میں سستیہ گره کیا۔ مسلمان کثیر تعداد میں شریک تھے۔ کانگریس کی طرف سے وداعی پارٹی بھی دی گئی تھی۔ مجھے 7 ماہ جیل میں گزارنے پڑے۔ رہائی کے بعد میری صحت خراب ہو گئی تھی۔ اگرچہ کانگریس کا کام معمولی طور پر جاری تھا۔ مگر میرا اندازہ ہے کہ میرے ہونے یا نہ ہونے کی کسی کو بھی پرواہ نہ تھی۔ اسی دوران وزارت بن گئی۔ کانگریس کے خلاف زہرا گلا جانے لگا۔ مجھ سے نہ رہا گیا۔ کٹک پہنچ کر عام جلسہ میں وزارت پر عدم اعتماد کی تجویز پیش کی۔ اس عدم اعتماد کے جلسے میں مخالفین کی طرف سے بڑا ہنگامہ شروع کر دیا گیا۔ بڑی کشمکش کے بعد عدم اعتماد کی تجویز منظور ہوئی۔ عین موقع پر ڈاکٹر مہتاب بھی رہا ہو کر آ گئے۔ ان کی وجہ سے وزارت کے خلاف کئی عام جلسے ہوئے۔ باوجود عدالت کے میں ہر کانفرنس میں شرکت کرتا رہا۔ وزارت پر عدم اعتماد کا دعویٰ اسمبلی میں پیش ہونے والا تھا۔ میں مولانا ابوالکلام آزاد سے ملنے کلکتہ گیا اور مولانا آزاد کی ہدایت کے مطابق اس سلسلے میں مجھ سے جو کچھ ہو سکا وہ میں نے کیا۔

لفظ	معنی
نصاب	: تعلیمی کورس۔ مقررہ درس۔ مقررہ تعلیم
تقاضا	: مطالبہ۔ خواہش
مصروفیت	: مشغولی۔ کسی کام میں نگاہ ہونا
حائل	: رکاوٹ۔ آڑ۔ روکنے والا۔ پردہ
اصرار	: بضد ہونا۔ کسی بات پر اڑے رہنا
سبکدوشی	: کنارہ کش ہونا۔ ریٹائر ہونا، ملازمت سے دست برداری
منظم	: نظم کیا گیا۔ تیار۔ متحد۔ اکٹھا۔ وہ چیز جو انتظام کے ساتھ ہو۔
ہدایت	: حکم۔ رہبری۔ رہنمائی
انفرادی	: نجی، فردیت (ایک فرد یا ذات سے متعلق)
خیر مقدم	: استقبال۔ سواگت، پذیرائی، خوش آمدید
رکنیت	: ممبر شپ۔ رکن ہونا۔ کسی جماعت، انجمن یا ادارے کا ممبر
علالت	: بیماری۔ عارضہ۔ مرض
نظامت	: انتظام۔ انتظامی حدود۔ اناؤنسری
مستعفی	: استعفی دینا۔ برطرف ہو جانا
رضا کار	: وہ شخص جو رفاہ عام کے لیے بلا معاوضہ کوئی خدمات انجام دے
انجام	: نتیجہ، عاقبت
اختتام	: ختم، آخر
اشتعال	: بھڑکانا، جوش دلانا
متعلق	: موافق۔ ٹھیک۔ موافقت کرنے والا
کشمکش	: شش و پنج، تردد

2- غور کرنے کی بات:

☆ مولانا سید اطہر صاحبؒ 18 مئی 1914 کو صوبہ اڈیشا کے قصبہ سونگڑہ کے محلہ دریا پور میں پیدا ہوئے۔ پندرہ سال کی عمر سے آپ کے اندر سیاسی اور مجاہدانہ زندگی کا جذبہ پیدا ہو گیا تھا۔ آپ کانگریس کے ساتھ مل کر جنگِ آزادی کی تحریک میں شامل ہوئے۔ 1932ء میں پہلی بار گرفتار ہو کر دریا گنج جیل میں قید ہوئے۔ 1942ء میں کٹک سے گرفتار ہو کر برہم پور جیل میں قید ہوئے۔ 2 جنوری 1945ء کو رہائی عمل میں آئی۔ لیکن نظر بند رہنے کا حکم نافذ کر دیا گیا۔

☆ آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی طرف سے ڈاکٹر اشرف کے حکم پر آپ 7 دسمبر 1939ء کو کٹک پہنچے۔ اس وقت مسلم لیگ بھی ایک منظم اور طاقتور پارٹی تھی۔ اس کے باوجود کٹک شہر میں کئی جگہ کانگریس کی طرف سے مٹینگ کی گئی۔ گرچہ لیگی مخالفت کا سامنا کرنا پڑا مگر مولانا کی تقریر سے صورت حال پر قابو پالیا گیا اور جلسہ کے اختتام پر کینڈرا پاڑہ کے کئی لیگی رضا کاروں نے کانگریس کی رکنیت قبول کر لیا۔ اس وقت بھدرک میں ڈاکٹر مہتاب موجود تھے۔ مولانا وہاں پہنچ کر لوگوں سے تبادلہ خیال کیا۔ اور بھدرک میں بھی جلسہ عام کیا گیا۔ مہتاب باوبھی جلسہ میں شرکت کیا۔ تمام مخالفت کے باوجود حالات پر قابو پالیا گیا۔

☆ دسمبر 1940ء سے انفرادی سول نافرمانی شروع ہوئی۔ مولانا نے اپنا نام گاندھی جی کی دوسری فہرست میں داخل کر لیا۔ اور 6 جنوری 1941ء کو مولانا نے مسلم حلقہ قدم شریف میں سستیہ گره کیا۔ جس بنا پر سات ماہ جیل میں رہنا پڑا۔

☆ آپ کی وفات 16 اکتوبر 1974ء کو ہوئی اور آپ قبرستان قدم رسول، کٹک میں مدفون ہوئے۔

3۔ سوچیے اور بتائیے:

- (i) مسلم آبادی کے اندر کانگریس کا جلسہ کرنے کے کون خلاف تھے؟
- (ii) مولانا کی تعلیم کب مکمل ہوئی تھی؟
- (iii) جنگ آزادی کی تحریک میں آپ کس کے ساتھ شامل تھے؟
- (iv) سب سے پہلے مولانا کی گرفتاری کب اور کہاں ہوئی؟
- (v) کس کے اصرار پر اور کب مولانا کٹک پہنچے تھے؟
- (vi) کٹک شہر کے کس علاقہ میں سستیہ گره ہوا تھا؟
- (vii) مولانا کا نام گاندھی جی کی کون سی فہرست میں شامل ہوا؟
- (viii) ڈاکٹر مہتاب کے ساتھ مولانا نے کس جلسہ میں شرکت کی تھی؟
- (ix) سستیہ گره کے بعد مولانا کتنی مدت تک جیل میں رہے؟
- (x) مولانا آزاد سے آپ کی ملاقات کب اور کہاں ہوئی؟

4۔ ذیل میں دیے گئے الفاظ کی ضد (الٹا) لکھیے:

- | | | | |
|-------|-------------|-------|--------------|
| | (ii) حلال: | | (i) صبح: |
| | (iv) اندر: | | (iii) دن: |
| | (vi) استاد: | | (v) فائدہ: |
| | (viii) سخت: | | (vii) مشکل: |
| | (x) زندہ: | | (ix) تاریکی: |

5- ذیل میں دیے گئے الفاظ سے صحیح لفظ چن کر خالی جگہوں کو پر کیجیے:

- (قائد- مولانا آزاد- ڈاکٹر مہتاب- سوگنڈہ- دریا پور- 1939ء- 1914ء- ڈاکٹر اشرف)
- (i) مولانا سید اطہر کا صوبہ اڈیشا کے قصبہ..... محلہ..... میں..... میں پیدا ہوئے تھے۔
- (ii) مولانا اطہر کلکتہ..... سے ملنے گئے تھے۔
- (iii)..... کے ہدایت کے مطابق مولانا نے..... کو کٹک پہنچے تھے۔
- (iv)..... اڈیشا کے وزیر اعلیٰ تھے۔
- (v) رسالہ..... کی ذمہ داری مجھ پر پڑ گئی۔

6- کالم ”الف“ اور کالم ”ب“ کے صحیح جوڑ ملائیے:

”ب“	”الف“
6 جنوری 1941ء	(i) ڈاکٹر مہتاب
وزیر اعلیٰ	(ii) خودنوشت
قدم رسول	(iii) ستیہ گرہ
آپ بیتی	(iv) انفرادی سول نافرمانی
1940ء	(v) دفن

7- نیچے دئے ہوئے جملوں میں سے ایک لفظ غلط ہے، سبق سے تلاش کر کے صحیح لفظ لکھیے۔

- (i) مولانا سید اطہر صاحب کی تکمیل تعلیم 1975ء میں ہوئی تھی۔
- (ii) مولانا اطہر صاحب نے مولانا آزاد سے ملنے دلی گئے تھے۔
- (iii) ڈاکٹر کرامت علی کرامت کے ہدایت کے مطابق مولانا اطہر نے 7 دسمبر 1939ء کو کٹک پہنچے تھے۔
- (iv) جلسہ ختم ہونے کے بعد کٹک کے چند لیگی رضا کاروں نے کانگریس کی رکنیت قبول کر لی تھی۔
- (v) اکتوبر 1950ء سے انفرادی سول نافرمانی شروع ہو گئی تھی۔

8- درج ذیل تین سوالوں میں سبق میں کس کا ذکر نہیں آیا ہے، اسے تلاش کر کے لکھیے:

- (i) مولانا سید اطہر صاحب۔ ڈاکٹر ماہتاب۔ مہاتما گاندھی۔ اندرا گاندھی
- (ii) بنگال۔ کٹک۔ بھدرک۔ کینڈرا پاڑہ۔
- (iii) 18 مئی 1914ء۔ 6 جنوری 1945ء۔ مارچ 1942ء۔ 16 اکتوبر 1974ء

9- پڑھیے اور سمجھیے:

اسم وہ کلمہ یا لفظ ہے جس سے کسی شخص، چیز یا جگہ کا پتہ چلے مثلاً اشرف، کٹک، قلم وغیرہ۔ درج ذیل عبارت سے پانچ اسم تلاش کر کے کاپی میں لکھیے۔

مولانا سید اطہر صاحب ایک جید عالم دین، ادیب، سیاست داں اور جنگِ آزادی کے مردِ مجاہد تھے۔ آپ 18 مئی 1914ء کو قصبہ سوگڑہ، محلہ دریا پور میں پیدا ہوئے تھے۔ آپ نے وطنی جذبے کے تحت مراد آباد (یو پی) سے 1930ء میں اپنی سیاسی اور مجاہدانہ زندگی کا آغاز کیا تھا۔ اس وقت آپ کی عمر صرف پندرہ سال تھی۔ 1932ء میں پہلی بار گرفتار ہو کر دریا گنج جیل میں قید ہوئے۔ آپ مراد آباد کے علاوہ دہلی، دیوبند، سہارنپور اور اڈیشا کے کم و بیش تحریکِ آزادی میں نمایاں طور پر حصہ لیا۔

10- نیچے دیے گئے لفظوں کو جملوں میں استعمال کیجیے:

- (i) مجاہد :
- (ii) تحریک :
- (iii) گرفتار :
- (iv) مستعفی :
- (v) منعقد :

11- درج ذیل الفاظ کے جمع بنائیے:

- (i) دفتر :
(ii) وقت :
(iii) ہدایت :
(iv) قوم :
(v) حالت :
(vi) حال :

12- مندرجہ ذیل الفاظ کو بلند آواز سے پڑھتے ہوئے خوش خط لکھیے:

- (i) جمعیت :
(ii) مصروفیت :
(iii) کانگریس :
(iv) مطمئن :
(v) مستعفی :
(vi) منعقد :
(vii) کشمکش :

13- عملی کام:

- (i) آپ کے علاقے کے ماہرین و ممتاز شخص کے بارے میں مختصر مضمون لکھیے۔
(ii) ہندوستان کے دس صوبوں اور اس کے دارالسلطنت (راجدھانی) کے نام لکھیے۔





محنت کی اہمیت

این۔سی۔ای۔آر۔ٹی

[منظر: بازار میں مختلف دکانیں ہیں۔ ایک طرف کونے میں گھڑیوں کی ایک چھوٹی سی دکان ہے۔ دکان کے سامنے کے حصے میں شیشے کی الماری میں گھڑیاں سجی ہوئی ہیں۔ ایک شوکیس کے پیچھے یوسف بیٹھا ہوا کام کر رہا ہے۔ سڑک سے اس کا سر اور جسم کا کچھ حصہ دکھائی دے رہا ہے۔ یوسف کے استاد اس کے پاس کھڑے ہیں اور اس سے باتیں کر رہے ہیں۔

ماسٹر صاحب: میں نے تو تمہیں اپنی پرانی گھڑی مرمت کے لیے دی تھی۔ تم نے اس کے ساتھ ایک گھڑی کیوں بھیجی؟

یوسف: جناب! میں جب پڑھتا تھا اس وقت سے آپ کے پاس وہی گھڑی دیکھ رہا ہوں۔ میں نے سوچا کیوں نہ ایک نئی گھڑی بھی آپ کے پاس ہو۔

ماسٹر صاحب: بہت خوب! میں تمہارے جذبے کی قد کرتا ہوں۔ میں تو اس نئی گھڑی کو واپس کرنے آیا تھا۔ (ماسٹر صاحب جیب سے نئی گھڑی نکالتے ہیں) لیکن تمہاری محبت دیکھ کر اب میں اسے رکھ لوں گا۔ مگر تمہیں اس کی قیمت لینا ہوگی اور تم انکار نہیں کرو گے۔



یوسف: نہیں جناب! میں نہیں لوں گا۔ اسے آپ اپنے شاگرد کی طرف سے ایک تحفہ سمجھ کر رکھ لیجیے۔

ماسٹر صاحب: نہیں، قیمت تو تمہیں لینا ہوگی میں اسے یوں ہی قبول نہیں کر سکتا۔
یوسف: جناب آپ کا حکم سر آنکھوں پر۔ چلیے اگر آپ یہی چاہتے ہیں تو میں اس کی اصل قیمت لے لوں گا۔

(ماسٹر صاحب قیمت ادا کر کے روانہ ہوتے ہیں۔ اسی وقت دکان پر گڈ و نام کا ایک ہٹا کٹا نوجوان ہاتھ پھیلائے آکھڑا ہوتا ہے)

گڈو: صاحب! میں بھوکا ہوں اور میرے چھوٹے بھائی بہن بھی بھوکے ہیں۔ میری کچھ مدد کیجیے۔
(یوسف گڈو کو اپر سے نیچے تک دیکھتا رہا۔)

یوسف: تم تو ہٹے کٹے ہو۔ جھوٹ بول کر بھیک مانگتے ہو! بھائی بہنوں کا تو بس بہانہ ہے۔



گڈو: صاحب! میں جھوٹ نہیں بولتا۔ آپ کو اگر یقین نہ ہو تو میرے ساتھ چلیے۔ میرا گھر قریب ہی ہے۔ آپ خود انہیں دیکھ لیں گے۔

(اچانک گڈو کی نظر دکان کے ایک کونے میں رکھی ہوئی بیساکھی پر پڑتی ہے۔ اور وہ کچھ سوچنے لگتا ہے۔ یہ بیساکھی کس کی ہے؟)

یوسف: اچھا ٹھیک ہے چلو، میں تمہارے گھر چل کر دیکھتا ہوں۔

(یوسف بیساکھی اٹھاتا ہے اور ملازم سے کہتا ہے) دکان کا خیال رکھنا، میں ابھی آیا۔

گڈو: اوہ! تو یہ بیساکھی آپ کی ہے!

(یوسف کے ہاتھ میں بیساکھی دیکھ کر گڈو واپس جانے لگتا ہے)

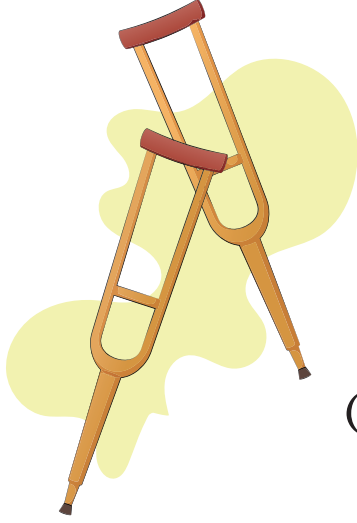
یوسف: ارے بھائی کہاں چلے، بھائی بہنوں کے لیے کچھ نہیں لوگے؟

گڈو: شکریہ! اب مجھے احساس ہو گیا۔ آپ نے مجھے بہت کچھ دے دیا۔ میں محنت مزدوری کروں

گا۔ کسی کے آگے ہاتھ نہیں پھیلاؤں گا۔



1- لفظ اور معنی:



لفظ	:	معنی
منظر	:	نظارہ۔ سیرگاہ
جسم	:	بدن۔ تن
مختلف	:	جدا۔ علیحدہ۔ طرح طرح کا
مرمت	:	درست کرنا (ٹوٹی ہوئی چیز کو ٹھیک کرنا)
جذبے	:	ارادے۔ امنگ
قیمت	:	دام۔ (مول) بھاؤ
تحفہ	:	ہدیہ (گفٹ۔ Gift)
قبول	:	منظور۔ مان لینا۔ تسلیم۔ اقرار
حکم	:	فرمان (آرڈر)
ہٹاکٹا	:	صحت مند۔ طاقتور، تندرست
یقین	:	بھروسہ۔ اعتماد
ملازم	:	نوکر۔ خدمت گار۔ خادم
بیساکھی	:	لاٹھی۔ سہارا دینے والی
قدر	:	عزت۔ احترام
حکم سر آنکھوں پر:		یہ ایک محاورہ ہے، جس کا مطلب آپ کا حکم دل و جان سے قبول ہے۔

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ ہر انسان کے لیے محنت کرنا ضروری ہے۔ ہمیں اپنا ہر کام دیانت داری اور محنت سے کرنا چاہیے۔ اور کبھی بھی محنت سے پیچھے نہیں ہٹنا چاہیے۔ اس سے تندرستی برقرار رہتی ہے۔
- ☆ آج کے زمانہ میں بہت سی طرح کی گھڑیاں ہوا کرتی ہیں۔ پرانے زمانے میں کوک والی (چابی والی) گھڑیاں ہوا کرتی تھی۔ دور حاضر میں بیٹری اور ڈیجیٹل گھڑیوں کا رواج عام ہے۔ بچوں سے لے کر بوڑھوں تک ان گھڑیوں کو آسانی کے لیے استعمال کرتے ہیں۔

3- سوچیے اور بتائیے:

- (i) ماسٹر صاحب نے کس کو اپنی گھڑی ٹھیک کرنے دی؟
- (ii) یوسف نے ماسٹر صاحب کو کون سی گھڑی پیش کی؟
- (iii) ماسٹر صاحب نے یوسف کی کس بات پر بہت خوش ہوئے؟
- (iv) مدد چاہنے والے فقیر کا کیا نام تھا؟
- (v) فقیر گڈو کیا بول کر مدد مانگتا تھا؟
- (vi) گڈو کو کس بات کا احساس ہوا اور وہ بھیک لینے سے کیوں منع کر دیا؟
- (vii) یوسف نے کس کو دکان کا خیال رکھنے کو کہا؟
- (viii) اس سبق میں کس بات کو اہمیت دی گئی ہے؟
- (ix) یوسف نے کسے کو گھر جانے کو کہا؟
- (x) گڈو نے کس کا شکریہ ادا کیا؟

4- پڑھیے، سمجھیے اور لکھیے:

مددگار کا مطلب مدد کرنے والا، اسی طرح مزدور سے مراد ہے مزدوری کرنے والا، مددگار اور مزدور اسم فاعل ہیں۔ وہ اسم جس سے کسی کام کے کرنے کا پتہ چلے، اسم فاعل کہلاتا ہے۔ نیچے دیے گئے الفاظ کو اسم فاعل میں بدل کر لکھیے یا ایک لفظ میں لکھیے۔

- (i) بھیک مانگنے والا:
- (ii) کھیلنے والا:
- (iii) تیرنے والا:
- (iv) کپڑے سینے والا:
- (v) کھیتی کرنے والا:
- (vi) عبادت کرنے والا:
- (vii) شکر ادا کرنے والا:
- (viii) گاڑیوں کو ٹھیک کرنے والا::
- (ix) گائے دوہنے والا:
- (x) بکری چرانے والا:

5- جوڑ پیدا کیجیے:

”ب“	”الف“
دور	شیشے
تندرست	شوکیس
افسوس	قریب
لکڑی	ہٹاکٹا
الماری	حیرت

6- ذیل میں دیے گئے الفاظ کو اپنے جملوں میں اس طرح استعمال کیجیے جس سے تذکر و تانیث ظاہر ہو جائے:

- (i) مرمت :
- (ii) منظر :
- (iii) جسم :
- (iv) محنت :
- (v) اہمیت :
- (vi) کتاب :

7- ذیل میں دیے گئے الفاظ کے واحد کی جمع اور جمع کے واحد لکھیے:

جمع	واحد	الفاظ
		احساس
		آنکھوں
		قبولیت
		جذبہ
		کتاب
		گھڑی
		محبت
		خیالات
		مخلفیات
		احکام

8۔ خالی جگہوں کو تو سین میں دیے گئے صحیح لفظ چن کر پُر کیجیے:

- (i) بازار میں دکانیں ہیں۔ (بڑی۔ چھوٹی۔ مختلف)
- (ii) ایک طرف کونے میں کی ایک چھوٹی سی دکان ہے۔ (پان۔ گھڑی۔ درزی)
- (iii) یوسف کے استاد اس کے پاس ہیں۔ (بیٹھے۔ سوئے۔ کھڑے)
- (iv) سڑک سے اس کا دکھائی دے رہا ہے۔ (ہاتھ۔ پاؤں۔ سر)
- (v) میں نے تو تمہیں اپنی پرانی گھڑی کے لیے دی تھی۔ (مرمت۔ بگاڑنے۔ دیکھنے)
- (vi) بول کر بھیک مانگتے ہو۔ (سچ۔ جھوٹ۔ صحیح)

9۔ درج ذیل الفاظ کا استعمال کرتے ہوئے آسان جملے بنائیے:

- (i) دُکان :
- (ii) مکان :
- (iii) جھوٹ :
- (iv) خیال :
- (v) ملازم :
- (vi) گھڑی :

10۔ درج ذیل الفاظ کے اضداد لکھیے:

- (i) پیچھے :
- (ii) جھوٹ :
- (iii) بھائی :
- (iv) شاگرد :
- (v) نفرت :

11- اس سبق میں ایک محاورہ استعمال ہوا ہے ”آپ کا حکم سر آنکھوں پر“ جس کا مطلب اس کام کو اہمیت دینا

اور اس کو انکساری کے ساتھ مان لینا۔ دیے گئے الفاظ کی مدد سے ان محاوروں کو پورا کیجیے:

پیر۔ ہاتھ۔ آنکھ۔ دماغ۔ منہ۔ ہتھیلی۔ کھال۔ انگوٹھا۔

(i) دکھانا۔

(ii) اونٹ کے میں زیرہ ہونا۔

(iii) آسمان پر ہونا۔

(iv) برسوں پر جمانا۔

(v) پیر مارنا۔

(vi) بال کی نکالنا۔

(vii) سر پر رکھ کر بھاگنا۔

(viii) کاتارا ہونا۔

12- نیچے دیے گئے کہاوتوں کے معنی لکھیے:

(i) نفسا نفسی :

(ii) نہار منہ :

(iii) داد نہ فریاد :

(iv) آؤ بھگت :

(v) ٹیپ ٹاپ :

(vi) الٹ پھیر :

(vii) بھاگم بھاگ :

- ☆ اس ڈرامے کو اپنے استاد کی رہنمائی میں اسٹیج پر پیش کیجیے۔
- ☆ ڈرامے کا واقعہ کرداروں کی آپسی گفتگو یا مکالمے کے ذریعے پیش کیا جاتا ہے۔ تصور کیجیے آپ اپنے گھر میں اپنی کتاب تلاش کر رہے ہیں اور تلاش کرنے میں آپ اپنے بھائی، ابو اور امی کی مدد لے رہے ہیں۔ اس پورے عمل میں سب کے ساتھ ہونے والی گفتگو کو مکالمے کی شکل میں تحریر کیجیے۔
- ☆ اپنے آس پاس رہنے والے ایسے شخص کے بارے میں معلوم کیجیے جو خصوصی ضرورت کا مستحق ہے۔ اس سے ملاقات کیجیے اور اس کے ساتھ گزرے ہوئے وقت کے بارے میں لکھیے۔





برسات کی بہار

نظیر اکبر آبادی



ہیں اس ہوا میں کیا کیا برسات کی بہاریں
سبزوں کی لہلہاؤٹ، باغات کی بہاریں
بوندوں کی جھم جھماوٹ، قطرات کی بہاریں
ہر بات کے تماشے، ہر گھات کی بہاریں

کیا کیا مچی ہیں یارو برسات کی بہاریں



بادل ہوا کے اوپر، ہو مست چھا رہے ہیں
جھڑیوں کی مستیوں سے دھو میں مچا رہے ہیں
تڑپتے ہیں پانی ہر جا، جل تھل بنا رہے ہیں
گلزار بھگتے ہیں سبزے نہا رہے ہیں

کیا کیا مچی ہیں یارو برسات کی بہاریں



بولیں پیے بیٹریں، قمری پکارے کو کو
پی پی کرے پیپہا، بگلے پکاریں تو تو
کیا ہڈیوں کی حق حق، کیا فاختوں کی ہو ہو
سب رٹ رہے ہیں تجھ کو کیا پنکھ کیا پکھیرو
کیا کیا مچی ہیں یارو برسات کی بہاریں

کتنے تو کیچڑوں کی دل دل میں پھنس رہے ہیں
کیڑے تمام گندے دل دل میں بس رہے ہیں
کتنے اٹھے ہیں مر مر کتنے اُس رہے ہیں
وہ دکھ میں پھنس رہے ہیں اور لوگ ہنس رہے ہیں
کیا کیا مچی ہیں یارو برسات کی بہاریں



1- لفظ و معنی

لفظ	معنی
لہلہاؤٹ	: جھومنا۔ ہلنا ڈولنا
جھم جھماوٹ	: چمکنا۔ آب و تاب
گھات	: موقع۔ ٹھکانہ۔ داؤں
مست	: متوالا۔ مدہوش۔ مگن
جھڑی	: مسلسل۔ لگانا
جل تھل	: خشکی و تری
گلزار	: گلشن۔ پھلواری
جا	: جگہ
اُکس	: اُٹھنا، اُبھرنا
ہُد ہُد	: ایک پرندے کا نام، قرآن میں اس کا نام آیا ہے
پکھیرو	: پرندہ۔ طائر۔ تیزرواڑنے والی چریا
باغات	: باغ کی جمع۔ باغیچے۔ چمن

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ شاعر نے اس نظم میں برسات کے بعد کے مناظر کشی کی ہے۔
- ☆ برسات کے موسم میں فضا میں کچھ تبدیلیاں رونما ہوتی ہیں انہیں نظم میں ذکر کیا گیا ہے۔
- ☆ برسات کا موسم قدرت کی ایسی عظیم نعمت ہے جو دنیا میں موجود تمام چیزوں کے وجود کے لیے لازم ہے۔
- ☆ برسات کی آمد کے ساتھ ہی ہر طرف کالی گھٹائیں آسمان پر چھا جاتی ہیں۔ بادل ہوؤں کے ساتھ جھوم جھوم کر آتے ہیں اور بارش ہوتے ہی ہر طرف پانی پانی ہو جاتا ہے۔

3- سوچے اور بتائیے:

- (i) شاعر نظم کے پہلے بند میں کیا کہا ہے؟
- (ii) اس نظم میں تو تو کس چڑیا کا پکار ہے؟
- (iii) ”برسات کے تماشے، ہر گھات کی بہاریں“ سے آپ نے کیا سمجھا؟
- (iv) ”جل تھل“ اس نظم میں کس موقع کے لیے استعمال ہوا ہے؟
- (v) شاعر نے برسات کے موسم میں کس چیز کے بھگینے کا ذکر کیا ہے؟
- (vi) کون ہوا پر مست ہو کر چھا رہے ہیں؟
- (vii) گلزار کے بھگینے اور سبزے کے نہانے سے کیا مراد لیا گیا ہے؟
- (viii) پرندے کس کی رٹ لگاتے ہیں؟
- (ix) برسات میں کچھڑ کے سبب لوگوں کی کیا حالت ہوتی ہے؟
- (x) نظم کے آخری بند میں شاعر نے کس طرح کا منظر پیش کیا ہے؟

4- املا درست کیجیے:

- | | |
|--------------------|---------------------|
| : باغات (ii) | : برسات (i) |
| : سبزے (iv) | : کطرات (iii) |
| | : فاکتہ (v) |

5- نیچے دیے ہوئے جمع کے واحد لکھیے:

- | | |
|---------------------|---------------------|
| : باغات (ii) | : قطرات (i) |
| : بوندوں (iv) | : تماشے (iii) |
| | : سبزے (v) |

6- قوسین میں سے درست الفاظ چن کر مصرع کو مکمل کیجیے:

- (i) ہیں اس میں کیا کیا برسات کی بہاریں۔ (پانی۔ ہوا)
(ii) بادل ہوا کے ہو مست چھا رہے ہیں۔ (نیچے۔ اوپر)
(iii) تڑپتے ہیں پانی ہر جا بنا رہے ہیں۔ (جل تھل۔ دل دل)
(iv) پی پی کرے پیہا پکاریں تو تو۔ (قمری۔ بگلے)
(v) وہ دکھ میں پھنس رہے ہیں اور لوگ رہے ہیں۔ (ہنس۔ اُکس)

7- خانوں میں دیے گئے الفاظ کے مذکورہ مونث لکھیے:

ہوا۔ بادل۔ برسات۔ فاختہ۔ باغ۔ پانی

مونث

مذکر

8- درج ذیل الفاظ کو اپنے جملوں میں اس طرح استعمال کریں کہ ان کا معنی واضح ہو جائے:

- (i) مست :
- (ii) جھڑی :
- (iii) پکھیرو :
- (iv) قمری :
- (v) گلزار :

9۔ کالم ”الف“ میں دیے گئے الفاظ کو کالم ”ب“ کے متعلقہ الفاظ سے ملائیں:

”الف“	”ب“
فاختہ	حق حق
ہڈ ہڈ	پی پی
قمری	کو کو
پیپھا	تو تو
بگلا	ہو ہو

10۔ ذیل میں دیے گئے حروف کو جوڑ کر الفاظ بنائیے:

مثال : ب+ر+س+ا+ت = برسات

(i) = ب+غ+ا+ت

(ii) = ٹ+ہ+ل+و+ل+ا+ہ

(iii) = ہ+ج+ا+م+ٹ+تو

(iv) = م+ا+ے+ت+ش

(v) = ن+پ+ہ+س

11۔ عملی کام:

- ☆ جہاں تک ہو سکے نظم کو زبانی یاد کیجیے۔
- ☆ برسات کے موسم کے بارے میں اہم ترین پانچ جملے لکھیے۔
- ☆ آپ جن پرندوں کے نام جانتے ہیں ان کی فہرست تیار کیجیے۔ ان میں سے کسی تین پرندوں کے بارے میں اپنے خیالات کا پی میں تحریر کیجیے۔
- ☆ قومی پرندے کی تصویر بنا کر اس میں رنگ بھریئے۔



☆☆☆



این۔سی۔ای۔آر۔ٹی

کوئی بھی ایجاد جب عام ہو جاتی ہے تو یہ خیال بھی نہیں گزرتا کہ شروع شروع میں اس کی قیمت کتنی زیادہ رہی ہوگی۔ آج خوب صورت رنگ برنگی پنسلیں دو دو آنے میں مل سکتی ہیں۔ مگر ایک وقت ایسا بھی تھا جب ایک معمولی کھر دری پنسل کی قیمت پانچ روپے تک ادا کرنی پڑتی تھی۔ اس زمانے میں اس کا شمار عجوبوں میں ہوتا تھا۔ عجوبے سے استعمال کی چیز بننے تک اسے کئی مرحلوں سے گزرنا پڑا۔



امریکہ میں میسے شوٹ نام کا ایک شہر ہے۔ اب سے کافی عرصہ پہلے اسی شہر میں جوزف ڈکسن نام کا ایک لڑکا رہتا تھا۔ جوزف کے والدین بہت غریب تھے۔ بیچارے جوزف کو دو وقت پیٹ بھر کھانا بھی مشکل سے میسر آتا تھا۔ پڑوس ہی میں جوزف کا ایک دوست رہتا تھا جس کا نام فرانس پی باڈی تھا۔ فرانس کے والد کی دواؤں کی دوکان تھی۔ فرصت کے وقت میں جوزف اور فرانس اس دوکان پر بیٹھے بیٹھے بازار کی چہل پہل دیکھا کرتے تھے۔

ایک دن بیٹھے بیٹھے جوزف نے دیکھا کہ دوکان پر کھرل میں چمکیے قسم کا کونلہ پیسا جا رہا ہے۔ اس چمکیے کونلے کو 'گریفائٹ' کہتے ہیں۔ جوزف نے یہ بات بہت غور سے دیکھی کہ اس چمکیے کونلے کو کاغذ پر رگڑنے سے سیاہ نشان بن جاتا ہے۔ وہ فرانس سے گریفائٹ کا تھوڑا سا چور مانگ کر گھر لے گیا۔



گھر پہنچ کر اس نے اس سیاہ بڑے کوچنی مٹی کے ساتھ ملا کر گوندھ لیا۔ گوندھی ہوئی مٹی سے اس نے ایک لمبی سی بتی بنائی اور اسے دھوپ میں خشک کر لیا۔ اب اس نے پڑوس ہی کے ایک بڑھتی سے لکڑی کا ٹکڑی نما ایک سانچہ بنوایا اور اس سانچے میں ایک شگاف لگا کر بتی اس میں فٹ کر دی۔ سانچے کا ایک سر اس نے چاقو سے چھیل دیا، اور بتی کی نوک سے کاغذ پر لکھا۔ کاغذ پر سیاہ حروف چمکنے لگے۔ یہ دیکھ کر جوزف کی خوشی کا ٹھکانہ نہ رہا۔ اس نے دنیا کی پہلی پنسل ایجاد کر لی تھی۔

جوزف کی لگن دن بدن بڑھتی گئی۔ رات بھر جاگ کر وہ چولھے کی آنچ پر پنسلیں سکھانے لگا۔ اسکول سے اس کی پڑھائی چھوٹ گئی۔ پنسلیں بنانے کے لیے پیسے کی ضرورت تھی۔ اس غرض سے وہ سارا دن اینٹوں کے بھٹے پر مزدوری کرتا تھا اور پھر آدھی رات تک پنسلیں بناتا رہتا تھا۔ اب اس نے پنسلوں کے لکڑی کے سانچے کو کچلے ہوئے موم کے رنگوں سے رنگنا بھی شروع کر دیا۔ راتوں رات جوزف کی تقدیر چمک اٹھی۔ اس کی بنائی ہوئی پنسلیں تین روپے سے پانچ روپے تک میں فروخت ہونے لگیں۔

اپنی آمدنی میں اضافہ کرنے کے لیے جوزف نے بڑھتی ہوئی کام بھی خود ہی کرنا شروع کر دیا۔ لکڑی کے خول بنانے میں ہاتھ بٹانے کے لیے چارپانچ کاریگر بھی رکھ لیے۔ کوئی لکڑی چھیلتا، کوئی بٹی، کوئی گوند چکاتا تو کوئی موم کے رنگوں سے پنسلیں رنگتا۔

پچیس سال کی عمر میں وہ اپنی بیوی اور کاریگروں کے ساتھ جرمنی چلا گیا۔ وہاں ایرہارڈ مینبر نام کے ایک لکھ پتی کی مدد سے اس نے پنسلوں کا کارخانہ کھولا۔ ان ہی دنوں جنگ چھڑ گئی۔ فوجی دستوں کے لیے پنسلوں کی مانگ بڑھنے لگی۔ جوزف نے اپنی لگن اور دماغ سے ایک نئی مشین بنائی جو ایک منٹ میں ایک سو پنسلوں کے ڈھانچے تیار کر ڈالتی تھی۔

ستر سال کی عمر میں جوزف کا انتقال ہو گیا۔ مگر اس کے نام پر چلائی ہوئی ”جوڈکشن“ پنسل کمپنی آج بھی زندہ ہے۔ جوزف ڈکسن کی کہانی ایک ایسے غریب لڑکے کی کہانی ہے جو اپنی محنت اور لگن کی بدولت کروڑ پتی بن گیا اور آنے والی نسلوں کے لیے ایک کارآمد تحفہ دے گیا۔



1- لفظ و معنی:



لفظ	معنی
ایجاد	: وجود میں لانا۔ نئی بات پیدا کرنا
عام	: مشہور۔ معمولی، رائج
عجوبہ	: نرالا۔ انوکھا
میسر	: دستیاب
کھرل	: ایک قسم کی پتھر کی کونڈی
گریفائٹ	: پینسل کا سرمہ۔ کاربن کا نرم مواد
شگاف	: دراڑ۔ پھٹا ہوا
لگن	: لگاؤ۔ تعلق۔ دُھن
سیاہ	: کالا۔ سفید کی ضد ہے

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ زندگی میں کامیابی حاصل کرنے کے لیے انسان کو صبر، محنت، خود سازی اور دوسروں کے لیے فائدہ مند بننا چاہیے۔ جیسے پینسل لکھنے کے لیے اندر سے تیز ہوتی ہے اسی طرح انسان کی اصل پہچان اس کے اندر چھپے ہوئے اخلاق اور اطوار سے ہوتی ہے۔
- ☆ اس کہانی کے ذریعہ یہ سمجھایا گیا ہے کہ زندگی میں دکھ اور مشکلات آتی ہیں لیکن وہ انسان کو بہتر بناتی ہیں۔ جیسے پینسل کو کارآمد بنانے کے لیے تیز کرنا پڑتا ہے اسی طرح انسان کو بہتر بننے کے لیے مشکلات سے گذرنا پڑتا ہے۔
- ☆ پینسل اپنے اندر گریفائٹ رکھتی ہے جو لکھنے کا اصل سبب ہے۔ اسی طرح انسان کے اندر ہمدردی اور غم خواری ہونی چاہیے۔ جو جینے کا اصل سبب ہے۔
- ☆ دنیا میں سب سے پہلے امریکہ کا جوزف ڈکسن نامی شخص نے پینسل ایجاد کیا تھا۔ پینسل گریفائٹ سے تیار کی جاتی ہے۔ گریفائٹ چمکیلے کوئلہ کے مانند ہوتا ہے۔ اس گریفائٹ کو ککڑی کے خول میں بھر دیا جاتا ہے۔ جس سے پینسل بن جاتی ہے۔

3- سوچے اور بتائیے:

- (i) جوزف ڈکسن کس ملک کا رہنے والا تھا؟
- (ii) امریکہ کے کس شہر میں جوزف ڈکسن رہتا تھا؟
- (iii) جوزف کے دوست کا نام کیا تھا؟
- (iv) گریفائٹ کسے کہتے ہیں؟
- (v) دنیا میں پہلی مرتبہ پنسل ایجاد کرنے والا شخص کون تھا؟
- (vi) قلم اور پنسل کے درمیان کیا فرق ہے؟ لکھیے۔
- (vii) گریفائٹ کے علاوہ آپ کون کون سی دھاتوں کے نام جانتے ہیں لکھیے؟
- (viii) پنسل کی کہانی سے ہمیں کیا سبق ملتا ہے؟

4- نیچے دیے گئے الفاظ کے متضاد لکھیے:

- | | |
|--------------------|-------------------|
|: (ii) رات |: (i) عام |
|: (iv) دنیا |: (iii) جنگ |
|: (vi) مشکل |: (v) فروخت |
|: (viii) غریب |: (vii) دوست |
|: (x) خشک |: (ix) سیاہ |

5- درج ذیل الفاظ کی جمع لکھیے:

- | | |
|------------------|--------------------|
|: (ii) مشکل |: (i) وقت |
|: (iv) تحفہ |: (iii) تقدیر |
| |: (v) غریب |

6- خوش خط لکھیے اور بلند آواز سے پڑھیے:

- (i) پنسلیں :
.....
- (ii) معمولی :
.....
- (iii) چمکیلے :
.....
- (iv) گریفائٹ :
.....
- (v) پھیلنا :
.....

7- قوسین کے درمیان دیے گئے الفاظ کی مدد سے خالی جگہوں کو پر کیجیے:

- (i) امریکہ میں میسے شوٹ نام کا ایک..... ہے۔ (شہر۔ گاؤں)
- (ii) جوزف کے والدین بہت..... تھے۔ (امیر۔ غریب)
- (iii) پڑوس ہی میں جوزف کا ایک..... رہتا تھا۔ (دوست۔ دشمن)
- (iv) فرانس کے والد کی..... دکان تھی۔ (دواؤں کی۔ راشن کی)
- (v) جوزف کا انتقال..... سال میں ہوا تھا۔ (ستر۔ پچیس)

8- ذیل میں دیے گئے الفاظ کو جملوں میں اس طرح استعمال کیجیے کہ مذکورہ مونث واضح ہو جائے:

- (i) وقت :
.....
- (ii) شہر :
.....
- (iii) دُکان :
.....
- (iv) جنگ :
.....
- (v) پنسل :
.....

9۔ املا درست کیجیے:

- (i) پنشل :
 (ii) فرست :
 (iii) کیمت :
 (iv) غریفائٹ :
 (v) لغن :

10۔ کالم ”الف“ اور کالم ”ب“ کے درمیان جوڑ لگائیے :

”الف“	”ب“
پنسل	چھیلنا
مٹی	چمکیلا
گریفائٹ	کھر دری
کوئلہ	چکنی
لکڑی	سیاہ

11۔ درخت کے پتیوں پر لکھے ہوئے لفظوں کو چین کر مذکر کو مذکر اور مونث کو مونث کے خانوں میں لکھیے۔

فروخت۔	چاقو۔	محنت۔	کاغذ۔	وقت۔	قیمت۔	غریب۔	دُکان۔	دنیا
مشین۔	کمپنی۔	شہر۔	چمک۔	عمر۔	امریکہ۔	لکڑی۔	کوئلہ۔	
پنسل۔	اسکول۔	جنگ۔						

مونث

مذکر

.....

.....

- ☆ وہ کیا چیز ہے چلتے چلتے تھک جاتی ہے
گردن کاٹ دیں تو وہ دوبارہ چلنے لگتی ہے
بتائیے اس کا کیا نام ہے؟
- ☆ وہ کیا چیز ہے پنکھ نہیں پراڑتی ہوں، ہاتھ نہیں پراڑتی ہوں،
کسی کے ہاتھ سے لڑتی ہوں، کٹ جاؤں تو نیچے آجاتی ہوں
بتائیے اس کا کیا نام ہے؟
- ☆ وہ کیا چیز ہے نیچے پٹکواؤ پر جاتی اور اوپر سے پھر نیچے آتی
اونچی اونچی کود لگاتی گول گول ہوں تم کو بھاتی
بتائیے اس کا کیا نام ہے؟

- ☆ انٹرنیٹ کی مدد سے پنسل کی طرح دوسری ایجادات کے بارے میں معلومات حاصل کر
کے اپنی کاپی میں لکھیے۔
- ☆ پنسل کے فوائد کے بارے میں پانچ جملے اپنی کاپی میں لکھیے۔
- ☆ اسی کہانی کی طرح اور دوسری کہانی کو حاصل کر کے اپنے ہم جماعتوں کے ساتھ
تذکرہ کیجیے۔





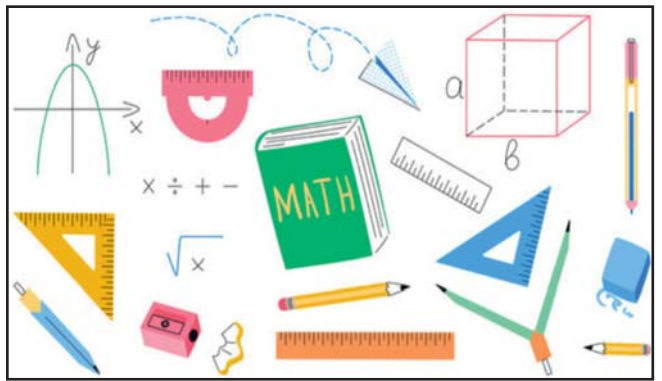
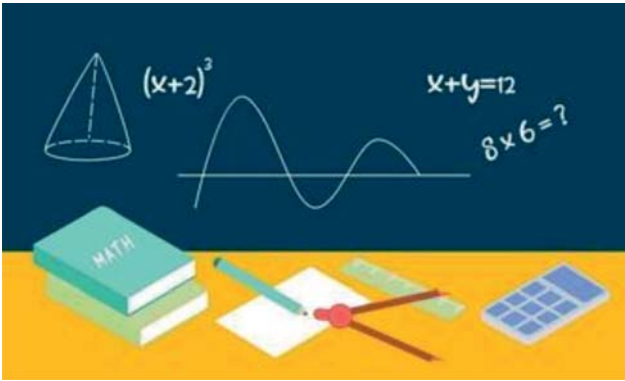
مشہور ریاضی داں رحمت علی رحمت

خاور نقیب

مطالے کے کمرے میں باقر اور شگفتہ کے درمیان یہ بحث چھڑ گئی تھی کہ حساب اور جغرافیہ میں کون سا موضوع زیادہ دلچسپ اور مفید ہے۔ باقر طرح طرح کی دلیلوں سے یہ ثابت کرنے کی کوشش کر رہا تھا کہ حساب سے بڑھ کر دلچسپ موضوع اور کوئی ہو ہی نہیں سکتا۔ لیکن شگفتہ اپنے سر کو جھٹک جھٹک کر ایک ہی بات کہے جا رہی تھی کہ حساب سے زیادہ دلچسپ اور معلوماتی موضوع جغرافیہ ہے جو ہمیں پوری دنیا کی سیر کرا دیتا ہے۔ دونوں کے درمیان تو تو میں جاری تھی کہ کمرے میں شہاب احمد داخل ہوئے۔

لباسا قد، کمر قدرے جھکی ہوئی۔ سر اور ڈاڑھی کے بال بالکل سفید، ہاتھ میں پرانے طرز کی لاٹھی۔ جو شاید ان کے دادا کے استعمال میں بھی رہی ہو۔ غرض کہ شہاب احمد کی ضعیفی کے اثنا صرف ان کے جسمانی اعضا سے ہی ظاہر نہیں تھے بلکہ ان کے استعمال کے ساز و سامان سے بھی ان کا بڑھا پاجھلک رہا تھا۔

لاٹھی کی ٹھک ٹھک آواز سن کر باقر اور شگفتہ کی زبانی جنگ یلخت رک گئی۔ انہوں نے دیکھا سامنے دادا جی پیشانی پر بل ڈالے اور آنکھیں مند کر کھڑے ہیں۔



شہاب احمد: (کمزور آواز میں) ”ارے یہ پڑھائی کا کمرہ ہے یا ہاٹ بازار؟ آخر کس بات پر جھگڑا ہو رہا ہے؟“

باقر (شگفتہ کی طرف اشارہ کر کے) ”داداجی! اس نک چڑھی نے تو میرا دماغ خراب کر رکھا ہے۔ یہ بولنے لگتی ہے تو لگتا ہے کسی نے پوری آواز کے ساتھ ریڈیو چلا دیا ہو۔ طرح طرح کی آوازیں نکالتی ہے۔“

شہاب احمد لٹھی ٹیکتے ہوئے شگفتہ کے پاس کرسی سنبھال کر بیٹھ جاتے ہیں۔ ان کے ہونٹوں پر مسکراہٹ کا رنگ پھیلا ہوا تھا۔

شہاب احمد (عینک درست کرتے ہوئے): ”میاں باقر! تم صرف شگفتہ پر الزام دھرے جا رہے ہو۔ کیا تمہاری آواز بھی کسی سے کم ہے؟ خیر، جانے دو۔ بتاؤ، کیا معاملہ ہے؟“

اس سے پہلے کہ باقر کوئی جواب دیتا۔ شگفتہ کی زبان چل پڑی۔

شگفتہ: ”داداجی بھائی جان کو ذرا سمجھا دیجیے کہ جغرافیہ کتنا اچھا سبجیکٹ ہے۔ یہ ہمیں زمین اور اس کی بناوٹ، اس کی پیمائش اور رنگ و روپ کے علاوہ اونچے پہاڑ، گھنے جنگل، دریا، سمندر اور ریگستان وغیرہ کے بارے میں بھرپور معلومات فراہم کر دیتا ہے۔ مجھے حساب تو بالکل پسند نہیں۔“

باقر: ”اسی لیے تو حساب میں آلو جیسے بڑے بڑے زیرو لاتی ہو۔“

شہاب احمد (ہنستے ہوئے): اب میں نے خوب سمجھا تم دونوں کی تکرار اور لڑائی کے پیچھے لڈو برنی کا نہیں بلکہ دو کتابوں کا ہاتھ ہے۔ ایسی بحث و تکرار تو خوب ہے۔ اسی کو ہی علمی بحث کہتے ہیں۔ لیکن اس میں بھی گفتگو کے آداب کا خیال رکھنا ضروری ہے۔ میاں باقر تم بھی قریب آ جاؤ۔ باقر، شرارتی انداز میں شگفتہ کے سر پر ہاتھ پھیرتا ہوا کرسی پر بیٹھ جاتا ہے۔

شگفتہ (چڑ کر): تمہارے ہاتھ تو اسکیل اور پرکار پکڑ پکڑ کر کھر درے ہو گئے ہیں۔ اپنے یہ ہاتھ اپنے ہی سر پر پھیرو تو اچھا ہے۔

شہاب احمد: نہیں۔ نہیں اب شرارت نہیں۔ تم دونوں میری باتوں کو غور سے سنو۔ ہر وہ کتاب جس سے ہم علم حاصل کرتے ہیں وہ ہمارے لیے ایک نعمت ہوتی ہے۔ چاہے وہ حساب کی کتاب ہو یا جغرافیہ کی۔ سماجی تعلیم کی کتاب ہو یا سائنس اور قواعد کی کتاب۔ یہ ساری کتابیں اپنی اپنی جگہ بے حد مفید اور اہم ہوتی ہیں۔ کیا میں غلط کہہ رہا ہوں؟

شگفتہ: نہیں داداجی! آپ کا کہنا بالکل درست ہے۔ لیکن یہ حساب مجھے اتنا پریشان کر دیتا ہے کہ میں اس سے اکتا جاتی ہوں۔

باقر منہ پھیر کر ہنسنے لگتا ہے۔

شہاب احمد: میاں باقر! اس میں ہنسنے کی کیا بات ہے؟ میں تم دونوں کو بتا رہا ہوں کہ مدتوں پہلے محمد ابن موسیٰ الخوارزمی نام کے ایک مسلمان ریاضی داں گزرے ہیں۔ جنہوں نے ریاضی کے نئے طریقے اور اصول ایجاد کیے اور اس علم کو آگے بڑھایا۔ یہاں مجھے اپنے اسکول کے زمانے کی بات یاد آرہی ہے۔ اس وقت ہمارے اسکول میں مولوی رحمت علی رحمت کی لکھی ہوئی حساب کی کتابیں پڑھائی جاتی تھیں۔

باقر: داداجی! یہ مولوی رحمت علی کون تھے؟

شگفتہ: ہاں، داداجی! ان کے بارے میں ضرور بتائیے۔

شہاب احمد: ٹھیک ہے بچوں کو بڑے لوگوں کے بارے میں جاننا چاہیے۔

باقر: داداجی! کیا مولوی رحمت علی اور موسیٰ الخوارزمی دونوں بھائی تھے؟

شہاب احمد: (ہنستے ہوئے) ارے نہیں۔ نہیں۔ تم نے تو بہت دور کی چھلانگ لگادی۔

شگفتہ: (ہنستے ہوئے) داداجی، آپ نے دیکھا۔ بھائی جان کیسی بے پرکی اڑاتے ہیں۔ بس منہ میں آیا اور جھٹ سے کہہ دیا۔ ”دونوں بھائی تھے“ ہونہہ.....

شہاب احمد: (ہنسی روکتے ہوئے) اب تم بھی چپ رہو۔ اور سنو، مولوی رحمت علی رحمت اڈیشا کے ایک مشہور قصبہ سونگڑہ کے محلہ رسول پور میں 1891ء میں پیدا ہوئے۔ یہ وہی سونگڑہ ہے جہاں سے اڈیشا کا پہلا اردو رسالہ ”المنصور“ شائع ہوا تھا۔

شگفتہ: داداجی! اردو کا یہ پہلا رسالہ کس نے شائع کیا تھا؟

شہاب احمد: سونگڑہ کے ایک مشہور و معروف عالم مولوی سید محمد عمر دریا پوری اس رسالے کے ایڈیٹر تھے۔

باقر: داداجی! یہ بتائیے کہ مولوی رحمت علی نے کہاں تعلیم حاصل کی تھی؟

شہاب احمد: مولوی صاحب نے پرائمری درجے تک کی تعلیم اپنے وطن سونگڑہ میں حاصل کی اس کے بعد کٹک کے راونشا کالجیٹ اسکول سے 1912ء میں میٹرک کا امتحان پاس کیا اور آگے چل کر کالج کی تعلیم بھی مکمل کی۔ تم دونوں کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ راونشا کالجیٹ اسکول میں نیتاجی سبھاش چندر بوس، مولوی رحمت علی سے جو نئیر ہونے کے باوجود ان کے اسکولی دوستوں میں سے تھے۔



شگفتہ: مولوی صاحب کے اندر حساب کا اتنا ذوق و شوق کیسے پیدا ہوا؟

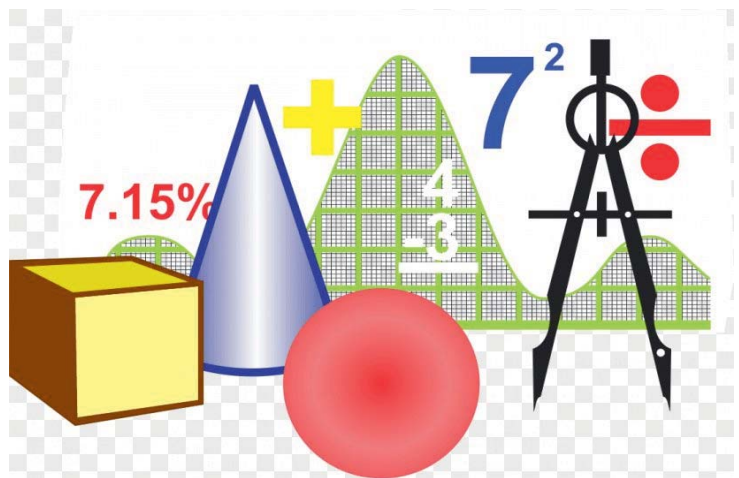
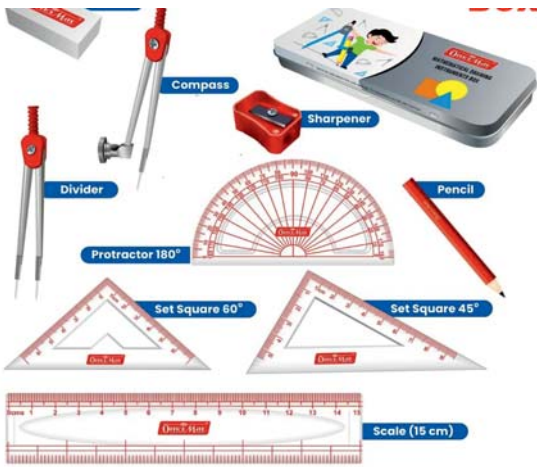
شہاب احمد: ہاں! یہ بڑا اچھا سوال ہے۔ دراصل مولوی صاحب کے بڑے بھائی عرفان علی فدائی کو حساب میں بڑی مہارت حاصل تھی اور وہ اردو و فارسی زبان کے شاعر بھی تھے۔ انھوں نے اپنے چھوٹے بھائی رحمت علی کو اردو و فارسی کی تعلیم دی اور ان کے اندر حساب سیکھنے کا ذوق و شوق بھی پیدا کیا۔ جس طرح باقر میاں تمہیں حساب کی طرف مائل کرنے کی کوشش کر رہے ہیں۔

باقر: واہ دادا جی واہ۔ آپ نے تو مجھے عرفان علی فدائی بنا دیا۔

شگفتہ: (منہ سکڑ کر) تو جائیے۔ کسی رحمت علی کو ڈھونڈیے۔

شہاب احمد: تم دونوں نے پھر شروع کر دیا۔ کیا تمہیں معلوم ہے مولوی صاحب نے کہاں کہاں ملازمت کی اور کون کون سی کتابیں لکھیں۔

باقر: ہمیں کیا معلوم؟ اتنی پرانی باتیں تو آپ ہی کو معلوم ہوں گی۔



شہاب احمد: تو پھر دھیان سے سنو! مولوی رحمت علی نے 1919ء میں کٹک کی ایک درس گاہ مسلم سمینری (جو آج کل سعید سمینری کے نام سے جانی جاتی ہے) میں ریاضی کے استاد کی حیثیت سے اپنی ملازمت کا آغاز کیا۔ پھر ان کا تبادلہ ہوتا رہا اور مولوی صاحب سمبل پور اور پوری کے ضلع اسکولوں میں سیکڑوں طالب علموں کو ریاضی کی تعلیم دیتے رہے۔ 1947ء میں اڈیشا سرکار نے آپ کو ڈسٹرکٹ انسپکٹر اسکولز کے عہدے پر فائز کیا اور مولوی صاحب اسی عہدے میں رہ کر مئی 1950ء میں ملازمت سے سبک دوش ہوئے۔

باقر: داداجی! آپ کہہ رہے تھے کہ مولوی صاحب کی لکھی ہوئی ریاضی کی کتابیں اسکولوں میں پڑھائی جاتی تھیں؟

شہاب احمد: ہاں بیٹے! مولوی صاحب کی اڑیا زبان میں لکھی ہوئی کئی کتابیں مثلاً گنیت سوپان، پریشیکا گنیت سوپان، جیامتی سوپان اور مان سازکا مالا وغیرہ مختلف درجوں میں پڑھائی جاتی تھیں اور وہ کتابیں بہت مقبول بھی تھیں۔



شگفتہ: داداجی! مولوی صاحب حساب کے تو ماہر تھے۔ کیا وہ شاعر بھی تھے۔

شہاب احمد: ارے! تم کو یہ بھی نہیں معلوم، مولوی رحمت علی رحمت ریاضی داں ہونے کے ساتھ ساتھ اردو کے اچھے شاعر بھی تھے۔ انھوں نے اردو گرامر سکھانے والی ”جوہر القواعد“ نام کی ایک چھوٹی سی کتاب بھی لکھی تھی۔

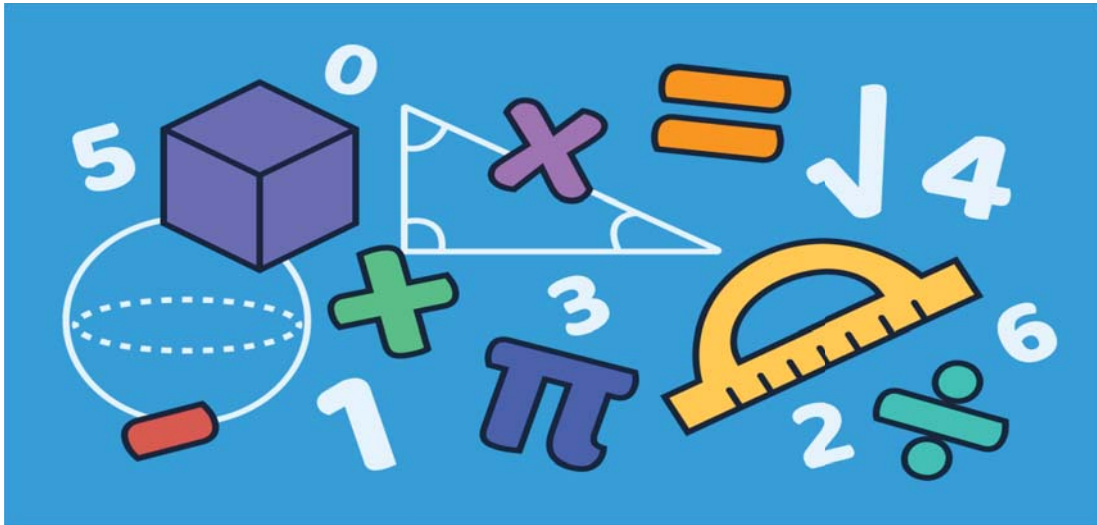
شگفتہ: داداجی! یہ کتاب تو آپ کی لائبریری میں ضرور ہوگی۔

شہاب احمد: نہیں یہ کتاب میرے پاس نہیں ہے۔ ہو سکتا ہے کہ مولوی صاحب کے لڑکے کرامت علی کرامت کے پاس موجود ہے۔ وہ اپنے والد کی طرح ریاضی داں اور مشہور و معروف شاعر و ادیب بھی ہیں۔ مولوی صاحب کا انتقال 7 اپریل 1963ء کو ہوا اور کٹک کے قدم رسول میں دفن ہوئے۔ لیکن ان کے علمی کارنامے آج بھی زندہ ہیں اور زندہ رہیں گے۔ مجھے ان کا ایک شعر یاد رہ گیا ہے۔

آہ کیا دکھ بھری کہانی ہے
سن کے پتھر بھی جس کو پانی ہے

اتنے میں عشاء کی اذان ہوئی اور شہاب احمد لاٹھی ٹیک کر کھڑے ہو گئے۔ ان کے چہرے پر پرانی یادوں

کا نور پھیلا ہوا تھا۔



1- لفظ و معنی:

لفظ	:	معنی
اعضاء	:	عضو کی جمع۔ بدن کے حصے
یکلخت	:	فوراً۔ سراسر۔ اچانک۔ یک بارگی
پیمائش	:	ناپ
تکرار	:	حجت۔ بحث۔ بار بار کرنا۔ دہرانا
سبکدوش	:	ذمہ داری سے فارغ ہونا۔ چھٹکارا
آغاز	:	شروع۔ ابتدا
ریاضی	:	حساب۔ علم الحساب
تبادلہ	:	ایک جگہ سے دوسری جگہ منتقل ہونا
مفید	:	فائدہ مند۔ جس سے کوئی مقصد یا غرض پوری ہو

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ مولانا رحمت علی رحمت کا آبائی وطن قصبہ سونگڑہ، ضلع کٹک ہے۔ آپ کی پرائیمری درجہ کی تعلیم اپنے آبائی وطن سونگڑہ میں ہوئی۔ 1912ء میں آپ نے راونشا کالجیٹ اسکول، کٹک سے میٹرک پاس کیا۔ پھر کالج کی تعلیم کی بھی تکمیل ہوئی۔
- ☆ 1919ء میں کٹک کے ایک ہائی اسکول مسلم سیمزری (جو آج کل سعید سیمزری کے نام سے موسوم ہے) میں ریاضی کے استاد کی حیثیت سے تقرر ہوا۔ پھر وہاں سے سمبل پورا اور پوری ضلع کے اسکولوں میں تبادلہ ہوا۔ 1947ء میں آپ ڈسٹرکٹ انسپیکٹر آف اسکول کے عہدے پر فائز ہوئے۔ اور اسی عہدہ پر رہ کر 1950ء میں ملازمت سے سبکدوش ہوئے۔

3- سوچے اور بتائیے:

- (i) محمد ابن موسیٰ الخوارزمی کون تھے؟
- (ii) مولوی رحمت علی رحمت کب اور کہاں پیدا ہوئے؟
- (iii) آپ نے ابتدائی تعلیم کہاں سے حاصل کی تھی؟
- (iv) آپ نے کس اسکول سے اور کب میٹرک کا امتحان پاس کیا؟
- (v) راونشا کالجیٹ اسکول میں مولوی صاحب کے دوست کون تھے؟
- (vi) اسکولوں میں مولوی صاحب کی کون کون سی کتابیں پڑھائی جاتی تھیں؟
- (vii) مولانا کی تصنیف کی گئی قواعد کی کتاب کا نام کیا ہے؟
- (viii) آپ اڈیشا کے کن کن اسکولوں میں استاد رہے تھے؟
- (ix) آپ ڈسٹرکٹ انسپیکٹر آف اسکول کے عہدے میں کب فائز ہوئے تھے؟
- (x) مولوی رحمت علی رحمت کی وفات کب اور کہاں ہوئی؟

4- ذیل میں دیے گئے الفاظ کی مدد سے خالی جگہوں کو پر کیجیے:

- (عرفان علی۔ باقر۔ شگفتہ۔ حساب۔ جغرافیہ۔ شہاب احمد۔ ریاضی داں۔ دادا)
- (i) مطالع کے کمرہ میں..... اور..... کے درمیان بحث چھڑ گئی کہ..... اور..... میں کون سا موضوع دلچسپ ہے۔
 - (ii) دونوں بھائی، بہنوں کی بحث کے درمیان کمرہ میں..... داخل ہوئے۔
 - (iii) شہاب احمد، باقر اور شگفتہ کے..... تھے۔
 - (iv) محمد ابن موسیٰ الخوارزمی ایک..... تھے۔
 - (v) مولوی صاحب کے بڑے بھائی..... کو حساب میں بہت مہارت حاصل تھی۔

5۔ کالم ”الف“ اور ”ب“ کے صحیح جوڑ ملائیے:

”ب“	”الف“
ریاضی کتاب	مسلم سعید سیمینری
رحمت علی رحمت کے بھائی	المنصور
ریاضی داں	عرفان علی
اڈیشا کا پہلا اردو رسالہ	محمد ابن موسیٰ الخوارزمی
سعید سیمینری	گنیت سوپان

6۔ مندرجہ ذیل کے الفاظ کی جمع قوسین میں دیے گئے الفاظ سے منتخب کر کے لکھیے۔

(اشعار / شاعر)	شعر	(i)
(ارسال / رسالے)	رسالہ	(ii)
(علامت / معاملے)	معاملہ	(iii)
(فرق / اوراق)	ورق	(iv)
(کتب / کتابیں)	کتاب	(v)
(دشواری / مشکلات)	مشکل	(vi)
(حالات / احوال)	حالت	(vii)
(تحائف / ہدیہ)	تحفہ	(viii)
(جسم / اعضاء)	عضو	(ix)
(اعمال / علوم)	علم	(x)

6- درج ذیل الفاظ کی تذکیر و تانیث لکھیے :

وطن - زمین - تجارت - بجلی - منزل - صحیح - انجمن - خواب - کھیت -
مذکر
مونث

.....
.....
.....
.....

7- نیچے دیے گئے جملوں میں ایک لفظ غلط ہے۔ سبق سے تلاش کر کے اس کی جگہ صحیح لفظ لکھیے :

- (i) عیسیٰ ابن موسیٰ نامی ایک مسلمان ریاضی داں گزرے ہیں۔
- (ii) موسیٰ الخوارزمی مولوی رحمت علی کے بھائی تھے۔
- (iii) مولوی رحمت علی رحمت اڈیشا کے قصبہ سوگڑہ میں 1890ء میں پیدا ہوئے تھے۔
- (iv) مولوی رحمت علی رحمت نے حساب کے علاوہ ناول کے کتاب بھی لکھی ہے۔
- (v) مولانا رحمت علی کا 7 اپریل 1965ء میں انتقال ہوا تھا۔

8- پڑھیے سمجھیے اور لکھیے۔

- (i) ”میں کتاب پڑھتا ہوں“۔ اس جملہ میں ”میں“ فاعل یعنی کام کرنے والا ہے۔
- (ii) ”کتاب“ مفعول یعنی جس پہ کام کیا جاتا ہو۔ (iii) پڑھنا۔ فعل یعنی جو کام ہو رہا ہو۔ اسی طرح کے تین جملے لکھ کر اس سے فعل، فاعل اور مفعول کی نشاندہی کیجیے۔

9- عملی کام:

☆ ہمارے ہندوستان کے مشہور سائنس دانوں میں سے کسی ایک کا نام اور ان کی علمی لیاقت کے بارے میں اپنی کاپی میں تحریر کیجیے۔





ایک پرندہ اور جگنو

علامہ اقبال

سیرِ شام ایک مرغِ نغمہ پیرا
کسی ٹہنی پہ بیٹھا گا رہا تھا

چمکتی چیز اک دیکھی زمیں پر
اڑا طائر اسے جگنو سمجھ کر

کہا جگنو نے او مرغِ نواریز
نہ کر بے کس پہ منقارِ ہوس تیز

تجھے جس نے چمک، گل کو مہک دی
اسی اللہ نے مجھ کو چمک دی



لباسِ نور میں مستور ہوں میں
پتنگوں کے جہاں کا طور ہوں میں

پروں کو میرے قدرت نے ضیا دی
تجھے اس نے صدائے دل ربا دی

تری منقار کو گانا سکھایا
مجھے گلزار کی مشعل بنایا

چمک بخشی مجھے، آواز تجھ کو
دیا ہے سوز مجھ کو، ساز تجھ کو

قیامِ بزم ہستی ہے انھیں سے
ظہورِ اوج و پستی ہے انھیں سے



1۔ لفظ و معنی :

لفظ	معنی
مرغ	پرندہ۔ مرغ
جگنو	رات کو چمکنے والا کیڑا
ظہور	ظاہر ہونا، اظہار
طائر	پرندہ، چڑیا
ہم آہنگ	ایک خیال ہونا
نغمہ پیرا	چہچہانے والا، گانے والا
بہار	پھول کھلنے کا موسم
منقار	چونچ
گل	پھول
بوستاں	باغ۔ باغیچہ
طور	ایک پہاڑ کا نام
نواریز	پرندے کا چہکننا
مستور	چھپا ہوا
ضیا	روشنی۔ نور
ساز	باجا۔ ساماں، موسیقی کا آلہ
مشعل	چراغ دان۔ موٹی بتی
اوج	اونچائی۔ بلندی
پستی	گہرائی۔ نیچائی
صدا	آواز۔ پکار
سوز	دکھ۔ درد

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ انسان کو ہر وقت نیکی اور بھلائی کے کاموں میں مصروف رہنا چاہیے۔ چاہے حالات کیسے بھی ہوں۔
- ☆ علامہ اقبال نے جگنو کی مثال دے کر یہ پیغام دیا ہے کہ جیسے جگنو اندھیرے میں بھی روشنی پھیلاتا ہے اسی طرح ہمیں بھی مشکلات اور برے حالات میں ہمت نہیں ہارنی چاہیے۔ بلکہ دوسروں کے لیے بھرپور مدد اور بھلائی کا سبب بننا چاہیے۔
- ☆ اس نظم سے ہم کو یہ سبق ملتا ہے کہ ہر انسان کو محنت، خودداری، بھلائی اور امید کے راستے پر چلنا چاہیے۔

3- سوچے اور بتائیے:

- (i) کون ٹہنی پر بیٹھ کر گارہا تھا؟
- (ii) پرندوں کو چہک اور پھولوں کو مہک کس نے دی ہے؟
- (iii) پتنگوں کے جہاں کا طور ہوں میں سے کیا مراد ہے؟
- (iv) قدرتی طور پر کس کی آواز دل بھانے والی ہے؟
- (v) قدرت نے کس کو ضیا بخشی ہے؟
- (vi) زمین پر کیا چمک رہی تھی؟

4- نیچے لکھے ہوئے لفظوں کو جملوں میں استعمال کیجیے:

- (i) نغمہ :
- (ii) زمیں :
- (iii) طائر :
- (iv) چمک :
- (v) نور :
- (vi) قدرت :
- (vii) مشعل :
- (viii) آواز :
- (ix) سوز :
- (x) ساز :

5- خالی جگہوں کو صحیح لفظ سے پر کیجیے:

- (i) سرشام ایک مرغ پیرا۔ (نغمہ۔ گیت)
- (ii) چمکتی اک دیکھی پر۔ (زمیں۔ آسماں)
- (iii) اسی اللہ نے مجھ کو چیز دی۔ (چمک۔ دمک)
- (iv) تری کو گانا سکھایا۔ (منقار۔ چونچ)
- (v) قیامِ بزم ہے انھیں سے۔ (ہستی۔ پستی)

6- نظم کو بغور پڑھ کر پرندوں اور جگنو کی خوبیاں لکھیے:

جگنو کی خوبیاں

پرندہ کی خوبیاں

.....
.....
.....

.....
.....
.....

7۔ وہ مصرعے تلاش کر کے لکھیے جن میں درج ذیل الفاظ آئے ہیں:

- (i) کہا جگنوں نے:
- (ii) اسی اللہ نے:
- (iii) مستور ہوں میں:
- (iv) تیری منقار کو:
- (v) ظہورِ عوج و پستی:

8۔ شعر مکمل کیجیے:

- چمکتی چیز اک دیکھی زمیں پر
.....
اسی اللہ نے مجھ کو چمک دی
- لباسِ نور میں مستور ہوں میں
.....
دیا سے سوز مجھ کو، ساز تجھ کو

9۔ دیے گئے اشاروں کے مطابق بے ترتیب حرفوں کو جوڑ کر خالی خانے کو پُر کیجیے۔

سلسلہ	اشارے	بے ترتیب حرف	صحیح لفظ
مثال	ایک پہاڑ کا نام	و ط ر	طور
(i)	ایک چمکدار کیڑے کا نام	گ و ن ج	
(ii)	درخت کا ایک حصہ	ن ہ ی ٹ	
(iii)	پرندے کی چونچ	ق م ن ا ر	
(iv)	رہنے کی جگہ	ی ق ا م	
(v)	روشنی دینے والی چیز	ل م ع ش	

10- خالی خانوں میں مناسب حروف کا استعمال کیجیے جس سے نظم میں آئیے ہوئے درج الفاظ

کے ہم معنی لفظ بن سکیں۔

x	ل	و	ھ	پ	گل
ہ				پ	طائر
	ز			آ	صدا
ر				م	چونچ
ی				ر	ضیا
	ا			د	جہاں

11- اس نظم میں واؤ معروف اور واؤ مجہول کی کئی مثالیں موجود ہیں۔ واؤ معروف اس 'و' کو کہتے

ہیں جو پیس (ء) کی آواز کے ساتھ پڑھا جائے۔ جیسے: دور، حور، ضرور وغیرہ۔

واؤ مجہول وہ 'و' ہے جو صرف واؤ کی آواز کے ساتھ پڑھا جاتا ہے۔ جیسے: مور۔ شور۔ بھور۔ وغیرہ۔
اس نظم سے واؤ معروف کی تین اور واؤ مجہول کی تین مثالیں تلاش کر کے کاپی میں لکھیے۔

واؤ مجہول

واؤ معروف

.....
.....
.....

.....
.....
.....

12- عملی کام:

☆ اس نظم کو بلند آواز سے پڑھیے اور زبانی یاد کیجیے۔

☆ علامہ اقبال کی لکھی ہوئی قومی ترانہ ”سارے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا“

کو اپنی کاپی میں لکھیے۔

☆ پرندوں پر لکھی گئی نظمیں اپنے والدین، دوستوں اور اساتذہ کی مدد سے اکٹھا کیجیے۔

☆☆☆



دل بیہرا

محمود بایلسری

دو ڈھائی سو سال قبل کی بات ہے جب کہ اڈیشا مرہٹوں کے زیر حکومت تھا۔ مرہٹوں کے حکم مقامی سرداروں کو راجہ بنا دیتے تھے اور یہ راجہ مرہٹوں کے لیے مال گزاری وصول کرتے تھے۔ راجہ کے بہت سے پائیک یعنی سپاہی تھے جو مال گزاری وصول کرتے تھے۔ اس لیے ان پائیکوں کو زمینیں دی گئی تھیں۔ جب اڈیشا انگریزوں کے قبضے میں آیا تو پائیکوں کی زمینیں انگریزوں کے ہاتھوں میں چلی گئیں۔ جس کی وجہ سے پائیکوں کے دل میں غم و غصہ کی لہر دوڑ گئی۔ ان کے اندر بیزاری بڑھ گئی۔ ان لوگوں نے انگریزوں کے خلاف لڑنے کا تہیہ کر لیا اور ایسا ہی ہوا۔

نارائن گڑھ کے گاؤں میں ”دل بیہرا“ نامی ایک شخص رہتا تھا۔ وہ گاؤں کا سردار تھا۔ لوگ اسے غریبوں کا دوست سمجھتے تھے۔ اگر ”دل بیہرا“ کے پاس کوئی جاتا تو وہ خالی ہاتھ واپس نہیں آتا۔ لوگ اسے بہت چاہتے تھے اور اس کی عزت کرتے تھے۔ جب پائیکوں نے انگریزوں کے خلاف بغاوت کا علم بلند کیا تو دل بیہرا بھی ان کے ساتھ ہو گیا۔ پہلے پہل تو پائیکوں کو فتح نصیب ہوئی لیکن انگریزوں کی کمک پہنچ جانے پر سب منتشر ہو گئے۔



انگریزوں نے بہت سے پائیکوں کو پھانسی پر چڑھا دی۔ اور بہت سے پائیکوں کو جیل میں قید کر دیا۔ چند پائیک روپوش ہو گئے۔ انہی روپوش پائیکوں میں دل بہرا بھی تھا۔ انگریز، دل بہرا کو ڈھونڈ رہے تھے۔ انہوں نے یہ اعلان بھی کر دیا کہ جو شخص دل بہرا کو زندہ یا مردہ لایے گا اسے ایک ہزار روپے انعام دیا جائے گا۔ دل بہرا کی تلاش جاری رہی لیکن اس کا کوئی پتہ نہ چل سکا۔ دل بہرا گھنے جنگل میں پھل وغیرہ کھا کر اور جھرنوں کا پانی پی کر زندگی کاٹ رہا تھا۔ اس کے کپڑے تارتار ہو گئے تھے اور داڑھی بڑھ گئی تھی۔ اسے پہچاننا بھی مشکل ہو گیا تھا۔

ایک دن دل بہرا جنگل میں گھوم رہا تھا کہ ایک شخص سے ملاقات ہوئی جو مصیبت زدہ معلوم ہوتا تھا۔ وہ شخص دل بہرا کے پاس آیا اور نارائن گڑھ کا پتہ دریافت کرنے لگا۔ یہ سن کر دل بہرا نے کہا:

”تم نارائن گڑھ کیوں جانا چاہتے ہو؟ وہاں تمہیں کس سے ملنا ہے؟“

”میں نارائن گڑھ والے دل بہرا کے پاس جانا چاہتا ہوں“ اس شخص نے کہا۔

”میں دل بہرا کو جانتا ہوں۔ تم اس سے کس لیے ملنا چاہتے ہو؟“ دل بہرا نے کہا۔

”میں ایک مصیبت زدہ تاجر ہوں۔ میں جہاز میں یہاں سے خام اشیاء لے کر جاتا ہوں۔ اس مرتبہ واپس آ رہا تھا کہ چلکا جھیل میں میرا سب سامان غرق ہو گیا۔ میں کسی طرح بچ نکلا لیکن میں تباہ و برباد ہو گیا ہوں۔ مدد کرنے والا مجھے کوئی نظر نہیں آ رہا ہے۔ سنا ہے کہ دل بہرا مصیبت زدوں کا دوست ہے۔ وہ ہر طرح کی مدد کرتا ہے۔ مجھے یقین ہے کہ جب میں اس سے ملوں گا اور اپنی پتتا سناؤں گا تو وہ ضرور میری مدد کرے گا“ اس شخص نے کہا۔



اس شخص کی پتاسن کر دل بیہرا کے دل میں دکھ ہوا۔ اس کے پاس تھا ہی کیا کہ اس شخص کی مدد کرتا۔ پھر بھی اس شخص کی مدد کے لیے دل ہی دل میں فیصلہ کر لیا اور کہا:

”آؤ میرے ساتھ۔ میں تمہارے دل بیہرا کو جانتا ہوں جو آج کل خوردہ میں رہتا ہے۔ مجھے یقین ہے کہ تمہاری مدد کرگا۔“

دل بیہرا اس شخص کو خوردہ کے انگریز پکتان کے پاس لے گئے جسے دل بیہرا کی تلاش تھی۔ بغیر کسی خوف کے وہ پکتان کے روبرو کھڑا تھا۔ انگریز کیپٹن کبھی سوچ بھی نہیں سکتا تھا کہ اس کے سامنے دل بیہرا کھڑا ہوگا۔

”تم کون ہو؟ یہاں کیوں آئے ہو؟ پکتان نے دریافت کیا۔“

”صاحب! کیا یہ سچ ہے کہ آپ نے دل بیہرا کی گرفتاری کے لیے ایک ہزار روپے کا انعام رکھا ہے؟“

دل بیہرا نے دریافت کیا۔

”ہاں یہ سچ ہے۔ کیا تمہیں دل بیہرا کا پتہ معلوم ہے؟ پکتان نے کہا۔“

”صاحب میں ہی دل بیہرا ہوں جسے آپ کے آدمی تلاش کر رہے ہیں میں خود حاضر ہوں۔ مجھے گرفتار کر لیجیے اور اپنا وعدہ نبھائیے۔ مہربانی کر کے انعام کے ایک ہزار روپے اس مصیبت زدہ شخص کو دے دیجیے۔“

دل بیہرا نے بے خوف دہراں کہا۔

”اس شخص کے پاس کچھ نہیں ہے۔ سوائے اس کے جسم کے کپڑوں کے۔ مجھ سے اس کی حالت دیکھی نہیں گئی۔ اس لیے میں آپ کے پاس آیا ہوں۔ مجھے گرفتار کر لیجیے اور انعام کے ایک ہزار روپے اس شخص کو دے دیجیے۔“

دل بیہرا اس شخص کی حالت بیان کر رہا تھا۔ پکتان دل بیہرا کی باتیں سنتا رہا اور دل بیہرا کی قربانی پر غور کرتا رہا اور پھر اس نے کہا:

”دل بیہرا! تم اتنے عظیم ہو مجھے معلوم نہیں تھا۔ میں تمہیں گرفتار نہیں کروں گا مگر ایک ہزار روپے کا انعام اس شخص کو دے رہا ہوں اور اس کے ساتھ ہی تمہیں آزاد کر رہا ہوں۔“

مصیبت زدہ شخص یہ سارا منظر دیکھ رہا تھا۔ یک بیک دل بیہرا کے قدموں پر گر گیا اور کہنے لگا۔

”میں سمجھتا تھا کہ دل بیہرا ایک امیر آدمی ہے۔ ضرورت مندوں کی کھلے دل سے مدد کرتا ہے لیکن اب

معلوم ہوا کہ دل بیہرا امیر آدمی تو نہیں ہے لیکن ایک غم گسارا اور سخی انسان ہے۔“

معنی	لفظ
حکومت کرنے والے۔ (حاکم کی جمع)۔ سردار	حکام
پہلے۔ آگے	قبل
زمین کا لگان۔ جزیہ، ٹیکس	مال گزاری
بدلہ۔ اجر۔ انعام	صلہ
ارادہ۔ عزم۔ تیاری	تہیہ
مدد۔ فوجی امداد	کمک
جھنڈا	علم
ریزہ ریزہ، ٹکڑا ٹکڑا	تارتار
بکھرا ہوا۔ پریشان	منتشر
چھپا ہوا۔ غائب ہو جانا۔ نظر سے غائب	روپوش
کچا	خام
ڈوبا، اوجھل	غرق
شے کی جمع ہے۔ چیزیں	اشیا
آمنے سامنے	رو برو
بڑا۔ بزرگ	عظیم
دریاد دل۔ فراخ دل۔ سخاوت کرنے والا	سخی
غم خوار۔ ہمدرد	غم گسار
سرکشی۔ نافرمانی	بغاوت
تجارت کرنے والا۔ سوداگر	تاجر

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ کرومہربانی تم اہل زمیں پر خدا مہربان ہوگا عرش بریں پر۔ اگر انسان مخلوق کے ساتھ سچے دل سے اچھا برتاؤ کرے اور ایک دوسرے کے مصیبت میں کام آئے اس کی مدد کرے تو جب مدد کرنے والے پر برا وقت آتا ہے یا کوئی مصیبت آن پڑتی ہے تو اللہ تعالیٰ ایسا راستہ نکال دیتے ہیں جس کی وجہ سے اس کی ساری پریشانیاں دور ہو جاتی ہیں۔ دل بیہرا ہمیشہ دوسروں کے کام آتا تھا جب اس پر برا وقت آیا تو کیسے ٹل گیا آپ نے دیکھا۔
- ☆ جب انسان کسی چیز کا وعدہ کرے تو اسے وفا ضرور کرے ہاں جس کا وعدہ کر رہا ہے وہ جائز امور میں سے ہو۔ ایفائے عہد کرنے والا ہر جگہ سرخرو ہوتا ہے۔ عزت پاتا ہے۔ اگر وعدہ کیا جائے تو ضرور اس کو پورا کیا جائے چاہے جان کیوں نہ چلی جائے جیسے دل بہرانے اپنی جان کی پرواہ کیے بغیر نئے عہد کے لیے اپنے آپ کو دشمن کے حوالے کر دیا۔

3- سوچیے، بتائیے اور لکھیے:

- (i) ڈھائی سو سال قبل اڈیشا کس کے زیر حکومت تھا؟
- (ii) مال گزاری کا کام کس کے ذمہ تھا؟
- (iii) نارائن گڑھ کے گاؤں میں کون رہتا تھا؟
- (iv) پائیکوں نے کس کے خلاف بغاوت کا علم بلند کیا تھا؟
- (v) دل بیہرا کس گاؤں کا سردار تھا؟
- (vi) دل بیہرا کی گرفتاری کے لیے انگریزوں نے کیا اعلان کیا تھا؟
- (vii) دل بیہرا جنگل میں کس طرح کی زندگی گزار رہا تھا؟
- (viii) تاجر کا جہاز کس جھیل میں ڈوب گیا تھا؟
- (ix) دل بیہرا مصیبت زدہ شخص کو لے کر کہاں آیا اور وہاں کیا ہوا؟
- (x) غریبوں کا دوست کسے سمجھا جاتا تھا؟

4- ذیل میں دیے گئے الفاظ کو مناسب جملوں میں استعمال کیجیے:

- (i) حکومت :
- (ii) قبضہ :
- (iii) عظیم :
- (iv) فتح :
- (v) گرفتار :
- (vi) سپاہی :
- (vii) تلاش :
- (viii) آزاد :
- (ix) بغاوت :
- (x) منظر :

5- درج ذیل بین القوسین الفاظ میں سے مناسب لفظ کے ذریعہ خالی جگہوں کو پُر کیجیے:

- (i) دل بیہرہ.....کارہنے والا تھا۔ (شہر / گاؤں)
- (ii) پائیکوں نے.....کے خلاف لڑنے کا تہیہ کیا تھا۔ (مرہٹوں / انگریز)
- (iii) انگریزوں نے.....کو جیل میں قید کیا تھا۔ (ہندو / پائیکوں)
- (iv) دل بیہرہ اگھنے جنگل میں.....کھا کر زندگی کاٹ رہا تھا۔ (پھل / پتہ)
- (v) دل بیہرہ کو پکڑنے کے لیے انگریز.....روپے کا انعام رکھا تھا۔ (ایک ہزار / دو ہزار)

6- درج ذیل الفاظ کے آخر میں ”ت“ کا اضافہ کر کے جمع لکھیے:

واحد	جمع	واحد	جمع
مقام	مقامات	(i) حالت
(ii) معلوم	(iii) جنگل
(iv) انعام	(v) مشکل

7- درج ذیل الفاظ میں سے مذکر اور مونث کو متعین کر کے خانوں میں لکھیے:

عزت - بغاوت - وصول - مہربانی - جھنڈا - فتح - جیل - ملاقات - جنگ - منظر

مونث

مذکر

.....
.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....

8- درج ذیل لفظوں کی املا درست کیجیے۔

(i) بگاوت :
(ii) گریب :
(iii) عادی :
(iv) گرق :
(v) زھیل :

9- ذیل کے نقشے میں ہر لفظ کے بالمقابل تین تین الفاظ دیے گئے ہیں ان میں سے ضد کی تعین کر کے خالی

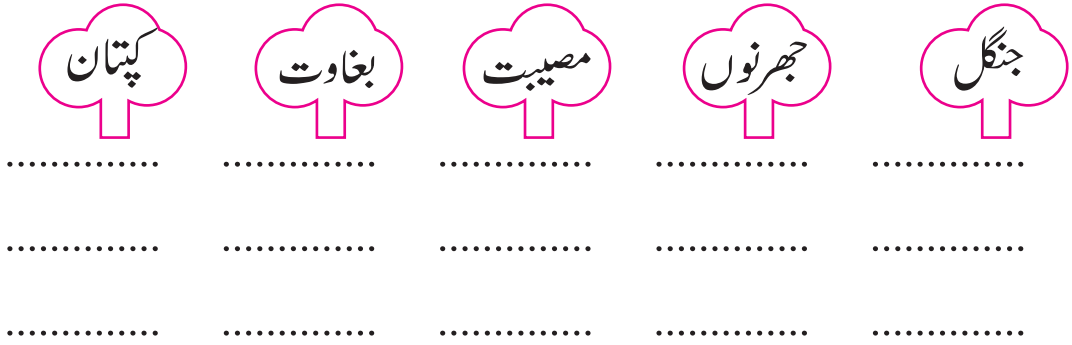
جگہوں کو پر کیجیے: جیسے : غریب

امیر	=	(امیر) (مالدار) (فقیر)	
	=	(آسان) (کام)	(i) مشکل : (سخت)
	=	(دشمن) (ساتھی)	(ii) دوست : (تعلق)
	=	(رسوائی) (خوف)	(iii) عزت : (ذلت)
	=	(دولت) (امیر)	(iv) غریب : (فقیر)
	=	(قید) (بند)	(v) آزاد : (قیام)
	=	(جنگ) (جیت)	(vi) فتح : (شکست)

10- دیے گئے جملوں میں صحیح (✓) اور غلط (X) جملوں کی نشاندہی کیجیے:

- (i) انگریز دل بیہرا کو ڈھونڈ رہے تھے۔ ()
- (ii) جو شخص دل بیہرا کو زندہ یا مردہ لایے گا اسے دو ہزار روپے انعام دیا جائے گا۔ ()
- (iii) دل بیہرا ندی کا پانی پی کر زندگی کاٹ رہا تھا۔ ()
- (iv) نارائن گڑھ کے گاؤں میں دل بیہرا نامی ایک شخص رہتا تھا۔ ()
- (v) ایک دن دل بیہرا شہر میں گھوم رہا تھا۔ ()

11- بلند آواز سے پڑھیے اور خوش خط لکھیے۔



12- آپ نے ”لاحقہ“ کا قاعدہ پڑھا ہے۔ با معنی الفاظ کے بعد آنے والے حروف کو لاحقہ کہتے ہیں۔

جیسے مصیبت با معنی لفظ کے بعد ”زدہ“ سے مرکب ہے۔ مصیبت + زدہ = مصیبت زدہ
 ذیل کے نقشے کے مطابق ”زدہ“ کے ذریعہ مرکب لفظ بنائیے اور خانوں میں لکھیے:

خوف حسرت آسیب حیرت آفت دہشت غم قحط

13۔ پڑھیے، سمجھیے اور لکھیے :

مددگار کا مطلب ہے مدد کرنے والا، مزدور سے مراد مزدوری کرنے والا۔ مددگار اور مزدور اسم فاعل ہیں۔ جس اسم سے کسی کام کے کرنے والے کا پتہ چلے اسے اسم فاعل کہتے ہیں۔ نیچے دیے گئے الفاظ کو

اسم

فاعل میں بدل کر لکھیے۔

- (i) عبادت کرنے والا:.....
 (ii) کھیلتی کرنے والا:.....
 (iii) ظلم کرنے والا:.....
 (iv) سفر کرنے والا:.....
 (v) قدر کرنے والا:.....

14۔ درج ذیل میں دیے گئے بے ترتیب حروف کو ترتیب سے ملا کر الفاظ بنائیے:

مثال کے طور پر: ا + غ + ب + ت + و = بغاوت

- (i) ص + م + ی + ت + ب =
 (ii) ہ + ی + ج + ل =
 (iii) ن + م + ب + ش + ر + ت =
 (iv) ڈ + ی + ا + ش + ا =
 (v) ر + ب + ا + ی + ن =

15۔ عملی کام:

- ☆ آپ کی نظر میں دل بیہرا جیسی شخصیت آپ کے حلقے میں کون ہے سوچ کر ایسی شخصیت کا خاکہ پیش کیجیے۔
- ☆ آپ اگر دل بیہرا کی جگہ ہوتے تو کیا کرتے اپنی زبان میں لکھیے۔
- ☆ ہمارے ارد گرد دل بیہرا جیسے لوگوں کی کثرت ہو جائے تو ہمارے ماحول کی تصویر کیا ہوگی پیش کیجیے۔





چڑیوں کا مسکن

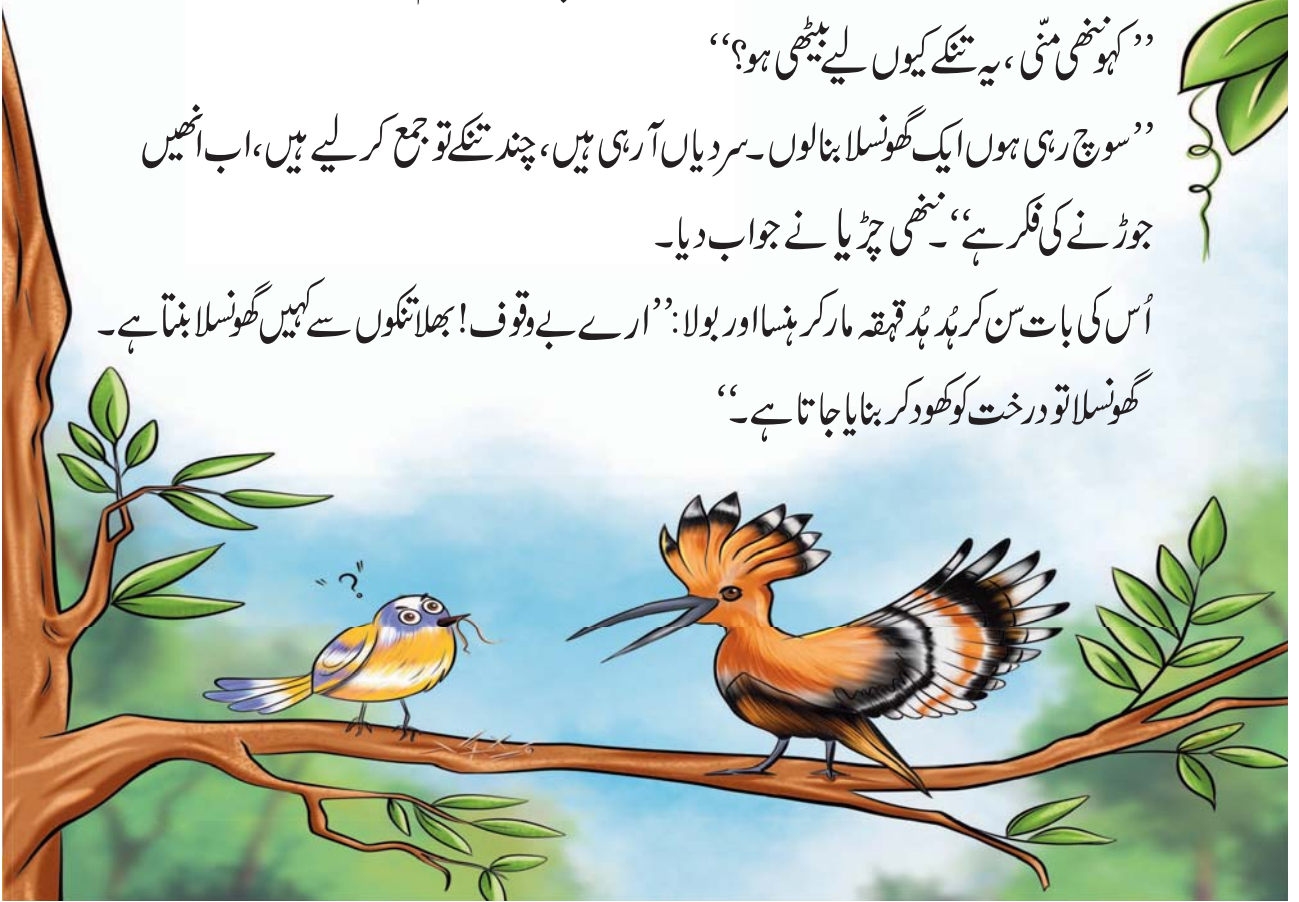
این۔سی۔ای۔آر۔ٹی

درختوں کے پتے جھڑنا شروع ہو گئے تھے۔ رات میں ہلکی ہلکی ٹھنڈک رہنے لگی تھی۔ سردیوں کی آمد آمد تھی۔ ننھی چڑیا نے سوچا کہ گرمیاں تو ہنس کھیل کر گزار لیں، اب سردیوں کی کچھ فکر کرنی چاہیے، اگر گھونسلا نہیں ہوا تو سردیوں میں ٹھٹھ کر رہ جاؤں گی۔ آخر ایک روز اس نے گھونسلا بنانا شروع کیا۔ چھوٹی سی تو تھی، گھونسلا بنانا کیا جانے! جو کچھ سن رکھا تھا اس کے مطابق ادھر ادھر سے دو چار تنکے جمع کیے اور ایک درخت کی شاخ پر پتوں کے درمیان انھیں رکھ کر سوچنے لگی کہ اب کیا کروں؟ کس سے پوچھوں کہ ان تنکوں کو کیسے جوڑا جائے؟ اسی سوچ میں تھی کہ اتنے میں ایک ہڈ ہڈ اسی درخت پر آ بیٹھا۔ سلام دعا کے بعد ہڈ کہنے لگا!

”کہو ننھی مٹی، یہ تنکے کیوں لیے بیٹھی ہو؟“

”سوچ رہی ہوں ایک گھونسلا بنالوں۔ سردیاں آرہی ہیں، چند تنکے تو جمع کر لیے ہیں، اب انھیں جوڑنے کی فکر ہے۔“ ننھی چڑیا نے جواب دیا۔

اُس کی بات سن کر ہڈ ہڈ قہقہہ مار کر ہنسا اور بولا: ”ارے بے وقوف! بھلا تنکوں سے کہیں گھونسلا بنتا ہے۔ گھونسلا تو درخت کو کھود کر بنایا جاتا ہے۔“



چڑیا حیرت سے بولی! ”درخت کو کھود کر! درخت کو کھود کر بھلا کیسے؟“

”لو بھلا یہ کون سا مشکل کام ہے۔“ ہڈ ہڈ کہا اور یہ کہہ کر اُس نے اپنی لمبی اور نوک دار چونچ درخت پر بار بار مارنی شروع کی۔ کھٹ۔ کھٹ۔ کھٹ۔ اس کی تیز چونچ لگنے سے آواز پیدا ہوئی اور درخت سے لکڑی کا تھوڑا سا برادہ نکل آیا۔ درخت کے تنے پر چھوٹا گڑھا پڑ گیا۔

”دیکھا! اس طرح کھودتے رہنے سے بڑی سی کھوہ بن جاتی ہے۔ میں تو اسی طرح گھونسلانا بنا ہوں۔ ہم سارے ہڈ ہڈ یہی کرتے ہیں۔ درختوں کے تنوں کو کھود کر ان میں رہتے ہیں، تم بھی یہی کرو۔“



یہ کہہ کر ہڈ ہڈ تو اڑ گیا مگر ننھی چڑیا کو پریشان کر گیا۔ وہ سوچنے لگی کہ اگر ہڈ ہڈ کی بات مان لوں تو اس جیسی چونچ کہاں سے لاؤں جس سے درخت کا تنا کھود ڈالوں؟ آخر اس نے سوچا کہ آزمانے میں حرج کیا ہے اور اپنی چونچ درخت پر مارنے لگی لیکن اس کی چھوٹی سی چونچ سے گڑھا تو کیا بنتا، الٹی چونچ زخمی ہوگئی۔

اب میں کیا کروں؟ چڑیا نے اداس ہو کر سوچا۔
 اچانک اس کی نظر خرگوش پر پڑی جو درخت کے نیچے سے گزر رہا تھا۔
 ”بھائی خرگوش!“ چڑیا نے اسے آواز دی۔
 ”کہو ننھی مٹی! کیا حال ہے؟“ خرگوش نے رک کر اسے دیکھا اور بولا۔
 ”بھائی مجھے گھونسلا بنانا سکھا دو نا“ خرگوش نے اس کی بات کا جواب دینے کے بجایے کہا۔
 ”گھونسلا؟ بھلا میں گھونسلا بنانا کیا جانوں۔ ہم خرگوش تو زمین میں بیل بنا کر رہتے ہیں۔“ خرگوش نے
 جواب دیا۔

”بیل بنا کر! زمین میں؟“ چڑیا نے حیرت سے کہا۔
 ”ہاں! ہم اپنے پنچوں سے زمین کھودتے ہیں اور جب کافی گہرا گڑھا بن جاتا ہے تو اس میں رہنے لگتے
 ہیں۔ تم بھی بیل کیوں نہیں بنا لیتیں؟ اچھا اب میں چلوں، مجھے دیر ہو رہی ہے۔ ابھی مجھے رات کے
 کھانے کے لیے سبزیاں جمع کرنی ہیں۔“
 اس طرح خرگوش بھی چلا گیا اور ننھی چڑیا کو ایک نئی الجھن میں ڈال گیا۔ اب میں کیا کروں۔ بیل کیسے
 بناؤں؟ وہ سوچنے لگی۔ آخر اس نے فیصلہ کیا کہ کوشش کرنے میں کوئی حرج نہیں۔ یہ سوچ کر اس نے درخت
 سے اتر کر اپنے چھوٹے چھوٹے کم زور پنچوں سے زمین کھودنی شروع کر دی لیکن ان نازک پنچوں میں اتنی
 طاقت کہاں سے آتی کہ زمین کھود سکیں؟ چونچ کی طرح اس کے پنچے بھی زخمی ہو گئے۔
 یہ دیکھ کر چڑیا رونے لگی۔ ایک تو چونچ اور پنچے دونوں زخمی ہو گئے تھے۔ دوسرے رہ رہ کر یہ خیال بھی آتا
 تھا کہ اگر گھونسلا نہ بن سکا تو میں سردیوں میں ٹھہر کر مر جاؤں گی۔



اتنے میں وہاں سے بھالو کا گزر رہا۔ اُسے روتا دیکھ کر بھالو ٹہر گیا اور کہنے لگا:
”کیا بات ہے ننھی مٹی! کیوں رورہی ہو؟“

چڑیا نے اسے ساری بات بتائی۔ بھالو اس کی بات سن کر مسکرایا۔
”دیکھو ننھی مٹی! میں تمہیں ایک ایسی ترکیب بتاتا ہوں کہ تمہیں نہ گھونسلانا پڑے گا اور نہ ہی بل۔ تم
ایسا کرو کہ میری طرح غار میں رہا کرو نہ کھودنے کی مصیبت نہ بنانے کا غم۔ بس جاؤ اور رہنا شروع
کردو جنگل میں بہت سارے غار ہیں چھوٹے بھی اور بڑے بھی تم ان میں سے کسی ایک میں کیوں
نہیں چلی جاتیں؟“ یہ کہہ کر بھالو تو چل دیا اور ننھی چڑیا کو ایک نئی پریشانی سے دوچار کر گیا۔

چڑیا پہاڑ پر پہنچی، وہاں پہنچ کر اس نے ایک چھوٹا سا غار بھی تلاش کر لیا، لیکن مصیبت یہ تھی کہ اس
میں بہت سی چمگاڈیں رہتی تھیں۔ چڑیا نے سوچا کہ میں ایک کونے میں رہ لوں گی، لیکن جب غار کے ایک
کونے میں جا کر بیٹھی تو اسے احساس ہوا کہ غار کی زمین پتھریلی ہے۔ اس نے سوچا کہ غار میں بھی تنکے جمع کر
کے ایک چھوٹا سا گھونسلانا بنانا ہی پڑے گا۔

ابھی وہ یہ سوچ ہی رہی تھی کہ تنکے لاؤں یا نہیں کہ چمگاڈوں نے اس پر حملہ کر دیا۔ بے چاری چڑیا بڑی
مشکلوں سے وہاں سے جان بچا کر بھاگی۔ آخر پھر اسی درخت پر آ بیٹھی۔ وہ زور زور سے رونے لگی۔ اتفاق
سے اسی وقت درخت کے نیچے سے ڈاکٹر ہمدرد گزر رہے تھے۔ وہ جنگل میں ہی ایک چھوٹے سے مکان میں
رہتے تھے۔ وہ بہت ہمدرد اور محبت کرنے والے انسان تھے۔ اکثر جنگل کے جانوروں کی مدد کرتے اور ان کا
علاج کرتے۔ اسی لیے جنگل کے سب جانور ان سے مانوس تھے اور ان سے محبت کرتے تھے۔

ڈاکٹر ہمدرد کو دیکھ چڑیا اسی لیے فوراً ان کی انگلی پر جا بیٹھی اور ساری بات انہیں کہہ سنائی۔ ڈاکٹر صاحب
نے اپنے بیگ سے دو انگل کر چڑیا کے زخموں پر لگائی اور اُسے اپنی ہتھیلی پر بٹھا کر بولے:

”ننھی مٹی! میری باتیں غور سے سننا اور ہمیشہ یاد رکھنا۔ پہلی بات تو یہ کہ تمہیں اس دنیا میں مشورہ دینے
والے بہت ملیں گے جو بالکل مفت مشورہ دیں گے، لیکن ان میں سے ہر ایک کی بات مان لینے سے نقصان
ہی ہوگا۔ جو شخص ہر ایک کا مشورہ مان لیتا ہے وہ کہیں کا نہیں رہتا۔ مشورہ دینے والے اپنے حالات کے
مطابق تمہیں مشورہ دیں گے۔ جیسا کہ ہڈ ہڈ، خرگوش اور بھالو نے تمہیں دیا،



لیکن ان کے مشورے صحیح ہونے کے باوجود تمہارے کسی کام کے نہیں تھے کیوں کہ تم ان سے مختلف ہو۔ ایک چڑیا، ہڈ کے گھر میں یا بل میں یا غار میں نہیں رہ سکتی۔ اسے گھونسلے میں ہی رہنا پڑے گا۔ ہڈ کی تیز نوک دار چونچ ہے تو اسے درخت کھود کر گھر بنانا آسان ہے اور یہ کام کسی دوسرے کے بس کا نہیں۔“

چڑیا نے زور زور سے سر ہلا کر ہاں کہا اور بولی ”تو پھر اب میں کیا کروں؟“

”تم چوں چوں چڑیا کے پاس جاؤ، وہ تمہیں گھونسلہ بنانا بھی سکھائے گی۔ آج کی رات تمہیں اپنے

گھونسلے میں سونے بھی دے گی اور کھانا بھی کھلائے گی۔ وہ بہت اچھی چڑیا ہے۔“

چڑیا نے جواب دیا ”بہت اچھا، اب میں ایسا ہی کروں گی اور بہت جلد گھونسلہ بنانا بھی سیکھ لوں گی۔ ڈاکٹر

صاحب آپ کا بہت بہت شکریہ! آپ نے میری مدد بھی کی اور مجھے کام کی بات بھی سکھائی۔“

یہ کہہ کر چڑیا پھر سے اڑ گئی اور ڈاکٹر بھی روانہ ہو گیا۔ چوں چوں چڑیا نے ننھی چڑیا کو نہ صرف اپنے

گھونسلے میں رکھا، اُسے کھانا کھلایا اُسے گھونسلہ بنانا بھی سکھا دیا۔ آج ننھی مٹی چڑیا اپنے گھونسلے میں رہتی ہے۔



1- لفظ و معنی

لفظ	معنی
آمد آمد	: آنے کا چرچا۔ آنے کی ذکر۔ جلد آنے کی توقع
گھونسلہ	: چڑیوں کا گھر
تنے	: تنا کا جمع۔ درخت کی جڑ سے اوپر کی شاخیں نکلنے تک کا حصہ
ہڈ ہڈ	: ایک چڑیا جس کی لمبی نوک دار چونچ ہوتی ہیں۔
حیرت	: تعجب
گڑھا	: کھودی ہوئی زمین
غار	: پہاڑ کا کوہ۔ گھپا۔ زمین کا کھوکھلا حصہ
مشورہ	: صلح۔ رائے۔ باہمی تجویز

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ پرندے درخت پر گھونسلہ بنا کر زندگی گزارتے ہیں۔ ایک درخت میں مختلف قسم کے پرندے ہوتے ہیں اور سب کا گھونسلہ الگ الگ ہوتا ہے۔
- ☆ پرندے زیادہ تر اپنا گھونسلہ درخت پر ہی بناتے ہیں۔ کچھ چڑیا تنے، گھاس پھوس سے اپنا گھر بناتے ہیں۔ ہڈ ہڈ چڑیا درخت کے تنے کو اپنی چونچ سے کرید کر گھونسلہ بناتی ہے۔
- ☆ بیا چڑیا (گھر چڈیا) کا گھونسلہ صنعت کاری کا اعلیٰ نمونہ ہے۔ یہ گھونسلے درخت کی ڈالیوں میں لٹکے ہوئے ہوتے ہیں۔
- ☆ پرندے ماحول کو خوشگوار بناتے ہیں۔ کویل، طوطا، مینا، پانی میں تیرنی بٹخیں، ہوا میں اونچے اڑتے کبوتر، چمکتی چڑیا کو دیکھ کر جی خوش ہو جاتا ہے۔ اس لیے پرندوں کی حفاظت کرنا ہماری ذمہ داری ہے۔

3- سوچے اور بتائیے:

- (i) ننھی مٹی چڑیا کو گھونسلہ بنانے کی فکر کیوں ہوئی؟
- (ii) ہڈی نے گھونسلہ بنانے کا کیا مشورہ دیا؟
- (iii) خرگوش نے گھونسلہ بنانے کا کیا مشورہ دیا؟
- (iv) بھالو نے گھونسلہ بنانے کا کیا مشورہ دیا؟
- (v) پرندے اپنا گھونسلہ کہاں بناتے ہیں؟
- (vi) چڑیا زمین کو کھود کر بل کیوں نہیں بنا سکتی؟
- (vii) کس چڑیا کا گھونسلہ صنعت کاری کا اعلیٰ نمونہ ہے؟
- (viii) پرندوں کی حفاظت کرنا ہمارے لیے کیوں ضروری ہے۔

4- ذیل میں دیے گئے الفاظ کی مدد سے خالی جگہوں کو پر کیجیے۔

- (i) درختوں کے پتے..... شروع ہو گئے تھے۔ (گرنا / جھڑنا)
- (ii) چڑیا نے سوچا اب..... کی کچھ فکر کرنی چاہیے۔ (بارش / سردی)
- (iii) بھلا تنکوں سے کہیں..... بنتا ہے۔ (جھونپڑا / گھونسلہ)
- (iv) اس کی بات سن کر..... قہقہہ مار کر ہنسا۔ (منیا چڑیا / ہڈی)
- (v) چونچ کی طرح اس کے..... بھی زخمی ہو گئے۔ (پاؤں / پنچے)
- (vi) اتفاق سے اس وقت درخت کے نیچے ڈاکٹر..... گزر رہے تھے۔ (آپروید / ہمدرد)
- (vii) ڈاکٹر ہمدرد کو دیکھ کر چڑیا ان کی..... پر جا بیٹھی۔ (سر / انگلی)
- (viii) چڑیا پہاڑ پر پہنچ کر ایک چھوٹا سا..... تلاش کیا۔ (گھونسلہ / غار)
- (ix) خرگوش زمین پر..... بنا کر رہتے ہیں۔ (گھر / بل)
- (x) جو شخص ہر ایک کا..... مان لیتا ہے وہ کہیں کا نہیں رہتا۔ (مشورہ / کہنا)

5- ایسے دس الفاظ لکھیے جن کے آخر میں ”ن“ ہوں۔ جیسے: چمن

-(iii) (ii) (i)
.....(vi) (v) (iv)
.....(ix) (viii) (vii)
.....(x)

6- درج ذیل الفاظ کی ضد لکھیے:

-: مرد (ii) : رات (i)
.....: بکری (iv) : مرغی (iii)
.....: چاند (vi) : بہار (v)
.....: سردی (viii) : آباد (vii)
.....: میٹھا (x) : محبت (ix)

7- درج ذیل اسماء میں سے کون پرندہ نہیں ہے۔ چوکور نقشے میں لکھیے:

- (i) چڑیا۔ ہڈ ہڈ۔ بکری
(ii) طوطا۔ منیا۔ بلی
(iii) کبوتر۔ فاختہ۔ خرگوش
(iv) بگلا۔ کوا۔ گائے
(v) بلبل۔ مور۔ بھینس

8- درج ذیل الفاظ کے واحد سے جمع اور جمع سے واحد بنائیے:

	(ii) پرندہ		(i) چڑیا
	(iv) تنکا		(iii) گھونسلا
	(vi) لکڑیاں		(v) تنے
	(viii) پنچے		(vii) پودے
	(x) اسراً		(ix) غریب

9- پڑھیے، سمجھیے اور لکھیے:

نیچے دی گئی عبارت کو غور سے پڑھیے:

میری باتیں غور سے سننا اور ہمیشہ یاد رکھو۔ پہلی بات تو یہ ہے کہ تمہیں اس دنیا میں مشورہ دینے والے بہت ملیں گے۔ لیکن ان میں سے ہر ایک کی بات مان لینے کی ضرورت نہیں ہے۔ کبھی کبھی نقصان بھی ہوتا ہے۔ اس لیے کہ مشورہ دینے والے اپنے حالات کے مطابق تمہیں مشورہ دیتے ہیں۔

اوپر کی عبارت میں کئی الگ الگ جملے ہیں۔ جو ایک دوسرے سے تعلق رکھتے ہیں۔ ہر ایک جملے مکمل اور واضح ہے۔ لہذا الفاظ کا وہ مجموعہ جس سے بات کا پورا مطلب ہو اسے جملہ کہتے ہیں۔ آپ کسی ایک موضوع کا انتخاب کر کے اس موضوع سے متعلق ایک عبارت (Paragraph) لکھیے جس میں ہر جملے الگ الگ ہوں اور اپنے آپ مکمل اور واضح ہوں۔

10 - پہلیاں سوچنے، سمجھنے اور جوڑ باتوں میں ربط پیدا کرنے اور نئے ڈھنگ سے سوچنے کی

صلاحیت پیدا کرتی ہے۔ نیچے کچھ پہلیاں دی جا رہی ہیں اپنی جماعت کے ساتھیوں کے ساتھ مل کر ان کو حل کرنے کی کوشش کیجیے۔

- | | | |
|---|-----------------------------|-------|
| ☆ | ایک پھل اوپر سے ہرا | (i) |
| ☆ | اس سے بھرا ہوا ہے سارا | |
| ☆ | ایک پھول ہے کالے رنگ کا | (ii) |
| ☆ | تیز دھوپ میں کھلا رہے | |
| ☆ | اس کے کان پہ میرا منہ | (iii) |
| ☆ | پاس ہیں ہم دونوں پھر بھی | |
| ☆ | چھلکے کھائیں بیج بھی کھائیں | (iv) |
| ☆ | قدرت کا ہیں یہ انعام | |
| ☆ | اندر سے سینہ لا | |
| ☆ | کھانے میں لگتا ہے پیارا | |
| ☆ | سب کے سر سہائے | |
| ☆ | سایہ دیکھ کر کھلائے | |
| ☆ | میرے منہ پر اس کا کان | |
| ☆ | باتیں کہیں کیسے پہچان | |
| ☆ | ایک تیشہ بھی نہ پہچائیں | |
| ☆ | بتاؤ اس پھل کا نام | |

10- درج ذیل لفظوں کے جملے بنائیے:

- | | | | |
|-------|---------|---|-------|
| (i) | چڑیا | : | |
| (ii) | پرندے | : | |
| (iii) | گھونسلا | : | |
| (iv) | تنا | : | |
| (v) | چونچ | : | |

11- عملی کام:

☆ اپنے آس پاس پائے جانے والے پرندوں کی فہرست بنا کر ان کی تصویریں اپنی کاپی میں چسپا کریں۔





اڈیشا کا ترانہ

سید محمد راشد شبنم

جس کے سنہرے فرش کا سبزہ ہے پیرہن

وہ صوبہ اڈیشا ہے میرا حسین وطن

اس خطہ زمیں کا ہے یہ حسن، یہ شباب کھلتے ہیں جس کی گود میں ہر رنگ کے گلاب

کہتا ہوا یہاں سے گزرتا ہے ماہتاب اس کی کوئی مثال نہ اس کا کوئی جواب

کوئی چمن کہے اسے کوئی گنگن

آزاد ہند کی ہے آزاد انجمن

دریا میں اس کے جاگ اٹھے کتنے آبشار جن سے فضا میں دوڑ گئے بجلیوں کے تار

اس نے کیے جو اپنے خزانوں کو آشکار فرزند اس کے کر گئے تعمیر شاہکار

آسان ہم پہ آج ہر اک رہ گزر ہوئی

بجلی جو آگئی تو ہماری سحر ہوئی





ویران پارادیپ تجارت کا در بنا یہ کاروانِ بحر کی اک رہ گزر بنا
لوگوں میں دور دیش کا عزم سفر بنا صوبہ ہمارا تاج درِ بحروں بنا

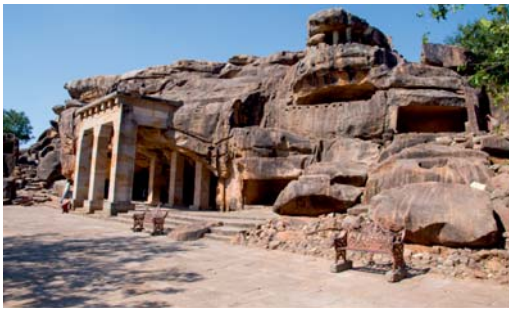
پہنچے یہ دور دور جہازوں کے ڈول پر
پتھر ہمارے بک گئے سونے کے مول پر

ہیں پر سکون کتنی کسانوں کی بستیاں کھیتوں میں ہل کہیں، کہیں پانی میں کشتیاں
الچھی ہیں پھول سے کہیں خوش رنگ تتلیاں جھولے میں مست ہیں کہیں نو خیز لڑکیاں

چھیڑے یہاں کی صبح بہاروں کی راگنی
آتی ہے رات اوڑھ کے پونم کی چاندنی

ہم میں نہیں ہے چھوٹے بڑے کا کوئی حساب دیتی سے درس کو مساوات کی کتاب
آنکھوں میں ہم لیے ہوئے تعمیر نو کے خواب آگے بڑھے تو ہنس پڑے کہسار میں گلاب

محنت کی ڈور تھام کے منزل پہ آگئے
محتاج کل تھے، آج زمانے پہ چھا گئے



لفظ	معنی
سبزہ	ہریالی۔ ہری بھری۔ تازگی
پیرہن	لباس۔ کپڑا۔ پیراوا
ماہتاب	چاند۔ چاندنی۔ چاندکی روشنی
انجمن	محفل۔ کمیٹی۔ پارٹی
آبشار	جھرنا۔ اونچی جگہ سے گرنے والا قدرتی پانی
رہ گزر	راستہ
راگنی	نغمہ۔ سُر۔ ترنم
کارواں	قافلہ۔ جماعت
بحر	سمندر۔ ساگر
عزم	ارادہ۔ نیت
مساوات	برابری
کہسار	پہاڑی۔ پہاڑوں کا سلسلہ
آشکار	ظاہر۔ نمایاں۔ واضح
درس	سبق۔ تعلیم
خطہ	حصہ۔ ٹکڑہ۔ زمین کا گھرا ہوا حصہ
شباب	جوانی
شاہکار	سب سے بڑا کارنامہ
نوخیز	نوجوان۔ تازہ۔ اگا ہوا
گگن	آسمان۔ لہر سے پانی کا اچھلنا

2- غور کرنے کی باتیں:

- ☆ اس نظم میں شاعر نے قدرتی مناظر کو بڑے خوبصورت انداز سے طلبہ کے سامنے پیش کیا ہے۔
طلباء اپنی تحریر و تقریر میں اپنے جملوں کو موثر انداز سے پیش کر سکتے ہیں۔
- ☆ انسان قدرتی خزانوں سے جن مصنوعات کا فائدہ اٹھاتا ہے اُسے بڑے موثر انداز میں بیان کیا گیا ہے۔
- ☆ قدرت نے صوبہ اڈیشا کو وہ فطری خزانہ دیا ہے، جس سے اڈیشا مالا مال ہو کر اقتصادی طور پر دوسرے صوبوں کے برابر ہو گیا۔
- ☆ ہمارے اڈیشا میں مصنوعی چیزوں کے استعمال سے کاشت کے لائن سے جو سب تر قیاں ہوتی ہیں اور گاؤں دیہات میں ملنے والی ساری سہولتیں، شہروں دیہاتوں میں رابطے، موسم کی بہتری، اڈیشا کے باشندوں کی باہم تعلقات کو ترانے کے طور پر پیش کیا ہے۔

3- بغور سوچیے اور بتائیے:

- (i) اس نظم میں ”یہ شباب“ سے کیا مراد ہے؟
- (ii) ماہتاب یہاں سے کیا کہتا ہوا گزرتا ہے؟
- (iii) ”آسمان ہم پہ آج ہراک رہگزر ہوئی“ سے کیا مراد ہے؟
- (iv) نظم میں صوبے کو تاج ور کیوں کہا گیا؟
- (v) لوگ دور دیش میں کس راستے سفر کرتے ہیں؟
- (vi) پونم کی چاندنی سے کیا مراد ہے؟
- (vii) پتھر ہمارے کس مول میں بکے؟
- (viii) محنت سے کیا فائدہ ہوا؟ نظم کے حوالے سے لکھیے۔

4- نظم کو بار بار پڑھیے اور نیچے لکھے ہوئے مصرعوں کو مکمل کیجیے:

- (i) پہنچے یہ دور دور جہازوں کے پر
(ii) پتھر ہمارے بک گئے سونے کے پر
(iii) ویران پارادیپ تجارت کا بنا
(iv) یہ کاروان بحر کی اک رہ بنا
(v) آنکھوں میں ہم لیے ہوئے تعمیر نو کے
(vi) آگے بڑھے تو ہنس پڑے کہسار میں

5- وہ مصرعے تلاش کر کے لکھیے جس میں ذیل کے لفاظ آتے ہیں۔

- (i) سنہرے فرش
(ii) ہر رنگ کے گلاب
(iii) آزاد ہند
(iv) پارادیپ
(v) خوش رنگ تتلیاں

6- مصرعہ لکھ کر اشعار مکمل کیجیے:

- (الف) (ب)
- (i) ہیں پرسکون کتنی کسانوں کی بستیاں
(ii) کھیتوں میں ہل کہیں، کہیں پانی میں کشتیاں
(iii) الجھی ہیں پھول سے کہیں خوش رنگ تتلیاں
(iv) آتی ہے رات اوڑھ کے پونم کی چاندنی
(v) محنت کی ڈورتھام کے منزل پہ آگئے

7- دیے گئے الفاظ کو جملوں میں استعمال کیجیے:

- (i) شباب :
- (ii) گنگن :
- (iii) انجمن :
- (iv) فضا :
- (v) شاہکار :

8- سمجھ کر پڑھیے اور لکھیے:

اس نظم میں ’’راہ گزر‘‘ لفظ آیا ہے اس کا مطلب راستے میں چلنے والا۔ ’’راہ گزر‘‘ لفظ کے الف کو ہٹا کر لکھا گیا ہے۔ آپ بھی اسی طرح کے پانچ الفاظ ڈھونڈ کر لکھیے:

- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

9- ذیل کے الفاظ میں سے مذکر و مونث لفظ چُن کر خانوں میں لکھیے:

صوبہ۔ فرش۔ وطن۔ زمین۔ گلاب۔ خواب۔ انجمن۔ گود۔ فضا۔ چمن۔ مثال
بجلی۔ کھیت۔ تجارت۔ منزل۔ صبح

مذکر	مونث	مذکر	مونث
.....
.....
.....
.....
.....



ہندوستان اور خلائی کامیابی

اظہار اثر

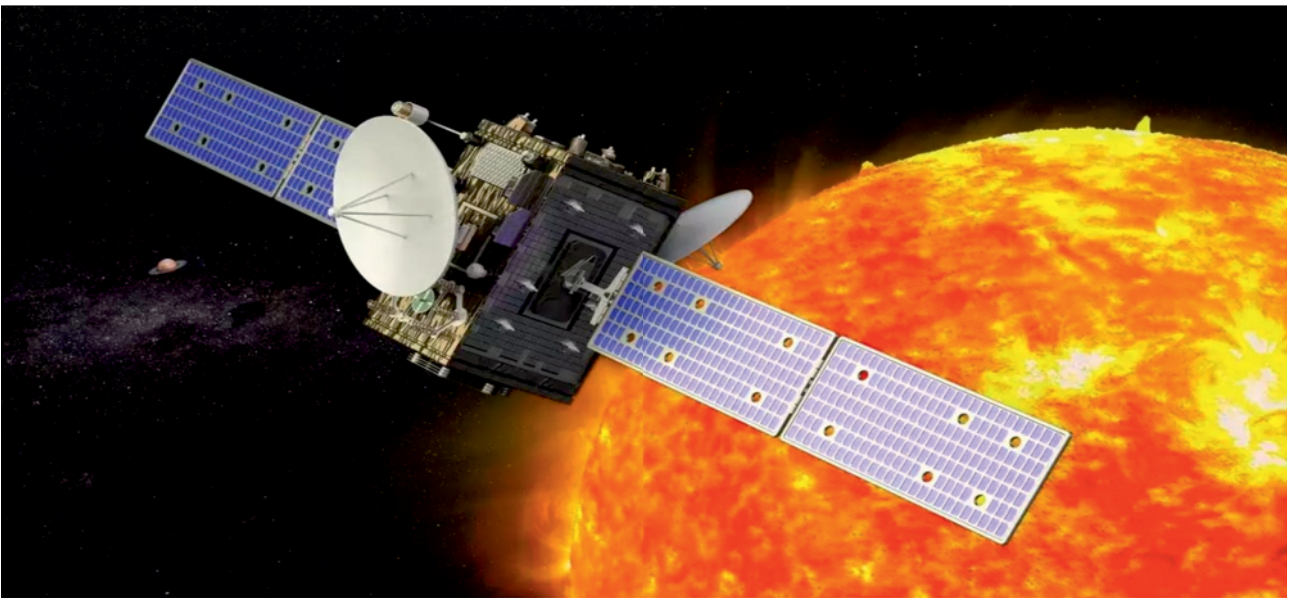
ہندوستان دنیا کا ساتواں بڑا ملک ہے۔ آزادی کے وقت ہندوستان معاشی طور پر بہت مضبوط نہیں تھا مگر ہمارے سائنس دان دنیا کے کسی بھی ملک کے سائنسدانوں سے کم ذہین نہیں تھے۔ انھوں نے 1960 سے ہی خلائی منصوبے بنانے شروع کر دیے تھے۔ آخر ہندوستانی حکومت نے خلائی سائنس پر تحقیق کرنے کے لیے ہندوستانی خلائی تحقیقی ادارہ (Indian Space Research Organisation) کے نام سے پہلا ادارہ قائم کیا جس کا مختصر نام ”اسرو“ (ISRO) پڑ گیا۔ ”اسرو“ نے خلائی سائنس میں اپنی کوششیں تیز کر دیں۔ اس نے اپنی ابتدائی کوششوں کے ذریعے آریہ بھٹ، بھاسکر، روہنی اور اپیل جیسے مصنوعی سیارے خلا میں بھیجے۔ پھر 1980ء کی دہائی میں ”ان سٹ“ (INSAT) اور آئی آر ایس (I.R.S) جیسے کامیاب خلائی پروگرام بنائے۔ آج یہ کہا جاسکتا ہے کہ INSAT اور IRS دونوں ”اسرو“ کے اہم ترین کارنامے ہیں۔

شروع میں ”اسرو“ اپنے سیارے کسی دوسرے ملک کے خلائی پلیٹ فارم سے خلا میں بھیجتا تھا لیکن پھر ہندوستانی سائنس دانوں نے خلا میں راکٹ بھیجنے کے لیے اپنے لائچنگ پلیٹ فارم بنا لیے بلکہ اب ہندوستان دوسرے ممالک کے سیاروں کو بھی اپنے لائچنگ اسٹیشنوں سے خلا میں بھیجنے لگا ہے۔



خلائی راکٹ داغنے والا لانچنگ پلیٹ فارم کو لانچنگ وہیکل یا لانچنگ گاڑیاں کہا جاتا ہے اسرو نے سب سے پہلا لانچنگ پلیٹ فارم اے ایس ایل وی (ASLV) کے نام سے شروع میں بنا لیا تھا۔ اسی پلیٹ فارم سے ہندوستانی خلا بازوں نے IRS-P2 نام کا عظیم خلائی جہاز خلا میں بھیجا تھا۔ اس کے بعد 2001 میں ہندوستان حد درجہ مفید اور کارآمد خلائی جہاز خلا میں بھیجنے میں کامیاب ہو گیا۔ آج آپ ٹیلی ویژن پر جو تصویریں دیکھتے ہیں یا موبائل فون کے ذریعہ دنیا کے ہر حصے میں بات کر سکتے ہیں تو یہ سب کچھ اسی خلائی جہاز کی مدد سے ہوتا ہے۔ زمین سے ٹیلی ویژن، ریڈیو، موبائل فون کی آوازیں اور تصویریں اس خلائی جہاز کو بھیجی جاتی ہیں اور خلائی جہاز میں لگے الیکٹرانک آلات ان پر لہروں کو واپس دنیا کے ہر کونے میں بھیج دیتے ہیں۔ اس طرح ہماری آواز فوراً ہی دنیا کے کسی بھی ملک میں موبائل فون پر سنی جاسکتی ہے۔

سائنس داں آسمان اور خلا کے بارے میں صدیوں سے قیاس آرائی اور طرح طرح کے تجربات کر کے خلا کو سمجھنے کی کوشش کرتے رہے ہیں۔ سائنس داں یہ بات کافی عرصے سے جانتے تھے کہ خلا میں پہنچ کر کوئی کوشش باقی نہیں رہتی اس لیے ہر چیز بے وزن ہو جاتی ہے۔ یعنی خلا میں پہنچنے کے بعد ہر چیز ”انرشیا“ (Inertia) کی کیفیت میں پہنچ جاتی ہے۔ انرشیا کا مطلب یہ ہے کہ خلا میں کوئی چیز اگر ایک جگہ رکی ہوئی ہے تو اسی جگہ ٹھہری رہے گی جب تک کوئی قوت اسے کسی طرف دھکیل نہ دے۔ اور کوئی چیز اگر حرکت میں آگئی ہے تو ہمیشہ اسی سمت اور اسی رفتار سے چلتی رہے گی جس رفتار سے اسے کسی قوت نے دھکیلا تھا۔ اس کیفیت میں فرق اس وقت آئے گا جب کوئی دوسری قوت اس کی رفتار اور سمت کو بدل دے۔



یوں تو خلا کو فتح کرنے کے خواب انسان صدیوں سے دیکھتا آ رہا ہے لیکن یہ خواب حقیقت میں اس وقت تبدیل ہوا جب 1950 کی دہائی کے آخر میں پہلی بار سوویت یونین (روس) نے ایک اسپوٹنک یعنی مصنوعی سیارہ خلا میں بھیجا اور وہ قانون فطرت کے مطابق زمین کے گرد چکر لگانے لگا۔ سائنس کے اس کرشمے نے ساری دنیا کو حیران کر دیا پھر اس کے کچھ مدت بعد ہی 1961ء میں سوویت یونین کے خلائی سائنسدانوں نے ہی یوری گیگرین نام کے پہلے انسان کو مصنوعی سیارے میں بیٹھا کر خلا میں بھیج دیا جو زمین کے گولے کے کئی چکر لگا کر بحیریت زمین پر واپس آ گیا یعنی وہ پہلا خلائی مسافر تھا جسے روسی زبان میں کوسمونٹ (Cosmonot) کہا جاتا تھا۔ روس کی اس کامیابی سے امریکہ کی بالادستی کو زبردست دھکا لگا اور امریکی حکومت نے ان کامیابیوں کا مقابلہ کرنے کے لیے خزانے کے منہ کھول دیے اور آخر خلا میں اپنا خلائی جہاز بھیجنے میں کامیابی حاصل کر لی۔ امریکی خلا بازوں کو اسٹرونوٹ (Astronot) کا نام دیا گیا۔ پھر کچھ عرصے بعد امریکہ اپنے ایک خلا باز کو چاند پر اتارنے میں کامیاب ہو گیا۔ سوویت سائنسدان تکنیکی طور پر امریکی خلائی سائنسدانوں سے بہت آگے تھے مگر خاطر خواہ مالی وسائل نہ ہونے کی وجہ سے وہ کسی خلا باز کو چاند پر نہیں اتار سکے جب کہ ان کے بنائے ہوئے مصنوعی سیارے چاند کے گرد چکر کاٹ چکے تھے اور چاند پر اتر کر اس کی مٹی کے نمونے لے آئے تھے۔ اس کے علاوہ ان کے مصنوعی سیارے زہرہ اور مریخ تک پہنچ چکے تھے۔



آج ان مصنوعی سیاروں کو خلائی راکٹ یا خلائی جہاز کہا جاتا ہے۔ خلائی سائنس میں سب سے اہم کام کسی انسان کو خلا میں بھیج کر بخیریت زمین پر واپس اتار لینا ہوتا ہے۔ اس سلسلے میں تجربات کے دوران روس اور امریکہ دونوں ہی ملک اپنے بہت سے خلا بازوں کی زندگیوں سے ہاتھ دھو چکے ہیں۔ جن میں سب سے تازہ حادثہ امریکہ کے کولمبیا خلائی جہاز کا تھا جس میں ہندوستان کی ایک خاتون خلا باز کلپنا چاولا بھی ہلاک ہو گئی تھیں۔ ساری دنیا میں اب تک تین ملک اس قابل تھے کہ وہ اپنے خلا بازوں کو خلا میں بھیج سکیں لیکن اس سال چین کے خلائی سائنسدانوں نے بھی اپنے ایک خلا باز کو خلا میں بھیج کر اس فہرست میں اپنا نام درج کرا لیا ہے۔ چین کے اس خلائی جہاز کا نام ”شین ذہو“ (Shenzhou) ہے جس کا مطلب ہوتا ہے ”قدرت کا جہاز“ اور چینی سائنسداں اپنے خلا بازوں کو ”ٹائکوناٹ“ (Taikonaut) کہتے ہیں۔ ہندوستانی سائنسداں اپنی کوششوں میں مصروف ہیں۔ ہندوستان کا پہلا قدم یہ ہے کہ وہ اپنا پہلا خلائی جہاز چاند تک بھیجے گا جس کا نام ”چندریان“ رکھا گیا ہے۔



1- لفظ و معنی:

لفظ	معنی
خلاء	: خالی جگہ۔ فضا
قوت	: طاقت۔ زور
زہرہ مرتخ	: دو سیاروں کے نام
خلا باز	: فضا میں سفر کرنے والا
تحقیق	: چھان بین کرنا
مصنوعی	: انسان کا بنایا ہوا۔ غیر قدرتی
آلات	: اوزار۔ ہتھیار
سیارہ	: گردش کرنے والا ستارہ

2- غور کرنے کی بات:

- ☆ حکومت ہند نے خلائی سائنس پر تحقیق کرنے کے لیے ایک ادارہ ”اسرو“ (ISRO) قائم کیا ہے۔ ابتدائی کوشش کے ذریعہ ”آریہ بھٹ“، ”بھاسکر“، ”روہنی“، اور ”اپیل“ جیسے مصنوعی سیارے خلا میں بھیجے۔ پھر لانچنگ پیڈ (Launching Pad) بنا کر خلا میں راکیٹ بھیجے گئے۔
- ☆ آج ٹیلی ویژن پر تصویر دیکھتے ہیں یا موبائل فون کے ذریعہ دنیا کے ہر حصہ میں بات کر سکتے ہیں یہ سب اسی خلائی جہاز کی مدد سے ہوتا ہے۔ زمین سے ٹیلی ویژن، ریڈیو، موبائل فون کی آوازیں اور تصویریں اس خلائی جہاز کو بھیجی جاتی ہیں اور خلائی جہاز میں لگے الیکٹرانک آلات (Electronic Devices) ان پر لہروں کو واپس دنیا کے ہر کونے میں بھیج دیتے ہیں۔ اسی طرح ہماری آواز فوراً ہی دنیا کے کسی بھی ملک میں موبائل فون پر سنی جاسکتی ہے۔

☆ سائنس داں کے تجربے کے مطابق خلا میں پہنچ کر کوئی کشش باقی نہیں رہتی ہے۔ اور ہر چیز بے وزنی ہو جاتی ہے۔ جسے انرٹیا (Inertia) کی کیفیت کہتے ہیں۔ یعنی جب تک اسے کوئی حرکت نہ کرے وہ چیز ویسے دھرا رہے گی۔

☆ 1950ء کی دہائی میں پہلی بار سویت یونین روس نے ایک مصنوعی سیارہ خلا میں بھیجا۔ اور وہ فطرت کے مطابق زمین کے گرد چکر لگانے لگا۔ 1961ء میں سائنس دانوں نے پہلے ایک انسان کو مصنوعی سیارہ میں بٹھا کر خلا میں بھیجا جو زمین کے گولے کی کئی چکر لگا کر زمین پر واپس آ گیا۔

3- سوچے اور بتائیے:

- (i) ہندوستان کے پہلا خلائی تحقیقی ادارہ کا کیا نام ہے؟
- (ii) اسرو (ISRO) نے کتنے مصنوعی سیارے خلا میں بھیجے تھے؟ ان میں سے دو کا نام لکھیے۔
- (iii) لانچنگ پیڈ کسے کہتے ہیں؟
- (iv) کس ملک نے پہلا مصنوعی سیارہ خلا میں بھیجا تھا؟ اور اس کا کیا نام تھا؟
- (v) خلا میں پہلی مرتبہ سفر کرنے والے انسان کا کیا نام ہے؟
- (vi) کولمبیا خلائی جہاز کے حادثے میں ہندوستان کی کس خاتون نے اپنی جان گنوائی تھی؟
- (vii) چین کے خلائی جہاز کا کیا نام ہے؟

4- ذیل میں دیے گئے الفاظ کی مدد سے خالی جگہوں کو پر کیجیے۔

- (سویت یونین۔ گیکرین۔ اسٹروٹ۔ 1961ء۔ زہرہ۔ مرتخ)
- (i) سویت یونین کے مصنوعی سیارے..... اور..... تک پہنچ چکے تھے۔
 - (ii) امریکی خلا بازوں کو..... کا نام دیا گیا تھا۔
 - (iii) 1950ء کی دہائی کے آخر میں پہلی بار..... نے ایک مصنوعی سیارہ خلا میں بھیجا تھا۔
 - (iv)..... میں سویت یونین کے خلائی سائنس دانوں نے..... نام کے پہلے انسان کو مصنوعی سیارے میں بیٹھا کر خلا میں بھیجا تھا۔

5- کالم ”الف“ اور کالم ”ب“ کے صحیح جوڑ ملائیے۔

”ب“	”الف“
IRS-P2	ہندوستانی سائنس داں
لانچنگ ویکل	ہندوستان کا عظیم خلائی جہاز
انرشیا (Inertia)	اسرو کے کارنامے
IRS. INSAT	لانچنگ پلاٹ فارم
لانچنگ پیڈ	خلائی کیفیت

6- درج ذیل الفاظ کو جملوں میں استعمال کیجیے:

- (i) لانچنگ پیڈ :
- (ii) لانچنگ پلیٹ فارم :
- (iii) سیارہ :
- (iv) خلائی جہاز :
- (v) خلا باز :

7- درج ذیل میں دیے گئے الفاظ کی ضد لکھیے:

- (i) مصنوعی :
- (ii) زمینی :
- (iii) فلکی :
- (iv) آزادی :
- (v) نسبتی :

8- درج ذیل میں دیے گئے الفاظ کے واحد لکھیے :

- (i) مضامین:.....
(ii) ممالک:.....
(iii) سیارے:.....
(iv) مکانات:.....
(v) خیالات:.....

9- زمانہ کی تین قسمیں ہیں۔ ماضی۔ حال۔ مستقبل

ماضی: گزرے ہوئے زمانہ کو کہتے ہیں۔ فعل ماضی وہ کام جو گزرے ہوئے زمانہ میں کیا گیا ہو۔ مثلاً
”میں کٹک گیا تھا“۔ ”لڑکی رو رہی تھی“۔

ذیل کے مصدروں سے فعل ماضی کے جملے بنائیے:

کھیلنا۔ پڑھنا۔ لکھنا۔ کھانا۔ پینا

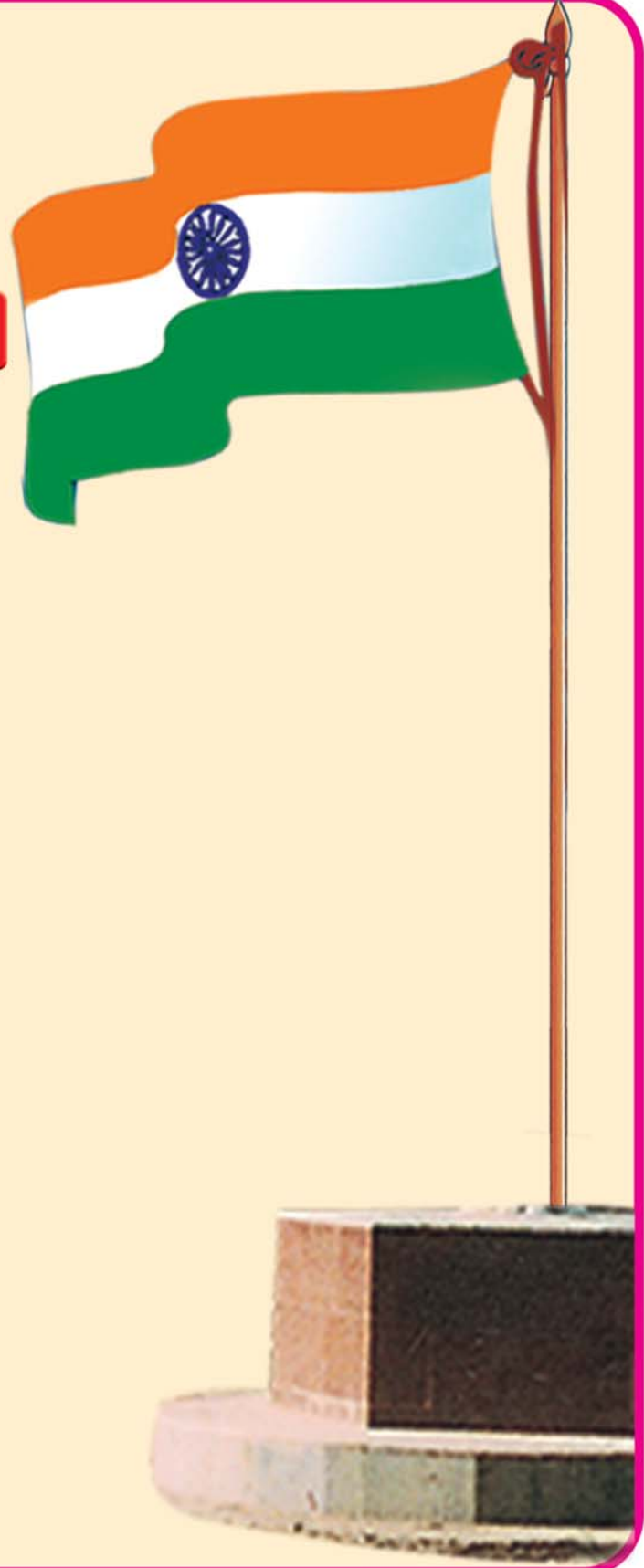
10- اس سبق میں مصنوعی سیارے اور خلائی جہازوں کے نام آئے ہیں۔ انہیں تلاش کر کے کاپی میں لکھیے۔

11- عملی کام:

- ☆ اپنی کاپی میں خلائی جہاز اور خلا باز کی تصویر چسپا کریں۔
☆ نظام شمسی یعنی سورج اور آٹھ سیاروں کا نقشہ بنا کر زہرہ اور مریخ کو سرخ اور سبز رنگ دیجیے۔



ہمارا قومی گیت



جن گن من ادھی نایک جے ہے
بھارت بھاگیہ ودھاتا
پنجاب سندھ گجرات مراٹھا
دراوڑ اتکل بنگا
وندھ ہماچل یوونا گنگا
اچھل جلدھی ترنگا
تب شہنا مے جاگے
تب شہہ آ شس ماگے
گا ہے تب جے گا تھا
جن گن منگل دایک جے ہے
بھارت بھاگیہ ودھاتا
جے ہے جے ہے جے ہے
جے ہے جے ہے جے ہے



نیشنل ٹیلیٹ اسکولار شپ

نیشنل ٹیلیٹ اسکولار شپ کا پروگرام ہیومین ریسورس ڈیولپمنٹ منسٹری کی توسط سے قائم کیا گیا ہے۔ اس منصوبے کا مقصد نادار اور ذہین طلباء کو مد نظر رکھ کر ان کی تعلیمی ترقی کے لیے امدادی رقم فراہم کرنا۔

ساتویں جماعت کے سالانہ امتحان میں کم سے کم 55% نمبرات رکھنا ضروری ہے۔ (اقلیتی طبقوں کے لیے 5% رعایت کی جائے گی) مستحق قرار پانے والے طلباء و طالبات ماہانہ 500 روپے کے حساب سے 4 سال کے لیے نویں جماعت سے بارہویں جماعت تک پائیں گے۔

قوانین حقوق تعلیم

تعلیم میرا دستوری اور قانونی حق



ہم سب اسکول جائیں گے



آوچلیں 6 سے 14 سال کے بچوں کو اسکول پہنچائیں۔



درساگاہ میں نہیں تفریق و فرق یہ ہے ہمارا پہلا حق



راستے کا تحفظ

سڑکوں میں حادثے کے سبب ہمارے ملک میں ہر سال لاکھوں سے زیادہ تعداد میں لوگ جان بحق ہوتے ہیں۔ اور لاکھوں سے زیادہ انسان ہمیشہ کے لیے معذور و بیکار ہو جاتے ہیں۔ اسی طرح راستے کے تحفظ کے سلسلے میں ناواقفیت کے سبب بھی بہت سے بچے سڑک کے حادثے کے شکار ہوتے ہیں۔ بچوں کو چوکتا و بیدار کرنے کے متعلق چند ہدایات۔

کیا نہیں کرنا چاہیے

- ▶ چلتی گاڑی میں نہ سوار ہوں اور نہ ہی اتریں۔
- ▶ راستے میں ساتھیوں کے ساتھ پیدل یا سائیکل جاتے وقت بات چیت کرتے ہوئے پورا راستہ مت گھیریے۔
- ▶ کسی موٹر کی جگہ راستہ مت پار کیجیے۔
- ▶ راستے میں کیلے کا چھلکا وغیرہ پھسلا سامان مت ڈالیے۔
- ▶ راستے میں لگے ہوئے باڑے میں گھس کر یا چڑھ کر راستہ پار مت کیجیے۔

کیا کرنا چاہیے۔

- ▶ اسکول کی بس میں سوار ہوتے وقت قطار میں اطمینان سے سوار ہوں۔
- ▶ پیدل چل کر جانے کے لیے (فٹ پاتھ) ہو تو اسے استعمال کیجیے۔
- ▶ رات کے وقت سائیکل چلاتے ہوں تو سائیکل میں رفلیکٹو ٹیپ لگانا ضروری ہے۔
- ▶ پیدل راستہ پار ہوتے وقت، زیر کراسنگ، (فٹ اور برج) پل کا راستہ استعمال کیجیے۔
- ▶ زیر کراسنگ نہ ہو تو جہاں سے چاروں طرف ٹھیک سے دیکھ رہا ہو اسی جگہ پہلے بائیں جانب پھر دائیں جانب دیکھ کر، کوئی لوری سواری نہ آتی ہو تو راستہ پار کیجیے۔



اگر ان قوانین کو روزانہ عمل میں لائیں گے
تو راستے کے تمام خطرے سے محفوظ رہیں گے



محکمہ تعلیم اساتذہ اور صوبائی تحقیق و تربیتی ادارہ برائے تعلیم
اڈیشا، بھوبنیشور

پتہ : ۷۱۰۴ پٹنجا اورنگ آباد، بھوبنیشور